## आवश्यक सूचना

श्रीमन्नमस्ते !

हिन्दी आन्दोलन के प्रचारार्थ सभा ने सार्वदेशिक का अर्द्ध साप्ताहिक संस्करण प्रकाशित किया है। अब तक ५ अङ्क प्रकाशित होकर आपकी सेवा में भेजे गये हैं। इस पत्र की आवश्यकता सारे आर्य-जगत् में अनुभव की जा रही थी। सभा का निश्चय है कि शनैः-शनैः अर्द्ध साप्ताहिक से दैनिक कर दिया जाय जिससे सारे भारत को आर्यसमाज की प्रगतियों से अवगत कराया जा सके। चार अङ्क प्रकाशित करने के पश्चात् अब इसे **दुगना बड़ा** कर दिया है तथा मूल्य वही ६ नया पैसा है।

आप अविलम्ब उत्तर दें कि आपकी समाज में कितनी प्रति प्रत्येक अङ्क की भेज दी जाया करें। जितनी प्रति आप मंगवायें उतने ही रुपये सभा के सुरक्षित कोष में भेज दें। फिर प्रतिमास हिसाब होता रहेगा।

यह भी यत्न करें कि आपके नगर में जो न्यूज पेपर एजेन्ट है उसे भी इस काम के लिये प्रेरित करें।

आशा है आप आज ही अधिक से अधिक प्रतियों का आर्डर भेजेंगे।

**प्रकाशवीर शास्त्री**
प्रचार मन्त्री
**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,**
बलिदान भवन, दिल्ली—६

## हिन्दी रक्षा आन्दोलन के प्रमुख नेतागण

श्री स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती

श्री स्वामी अभेदानन्द जी महाराज

श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी
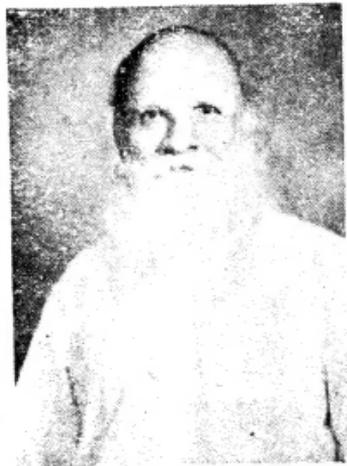
महात्मा आनन्द स्वामी जी

श्री पं० दत्तात्रय प्रसाद जी एडवोकेट

श्री पं० नरेन्द्र जी

ोो० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित एम० ए०

श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री

श्रीमती मन्दालसादेवी जी कल्याणी
( बम्बई )

ाननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त तथा श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री बम्बई में

श्री ओमप्रकाश जी त्यागी

दिल्ली में बम्बई, बंगाल उत्तर प्रदेश और बिहार के जत्थों का बम्बई के आर्य नेता
श्री वेणी भाई की अध्यक्षता में स्वागत तथा आर्य सार्वदेशिक सभा के मन्त्री
श्री ला० रामगोपाल जी शाल वाले भाषण देते हुए

मुजफ्फरनगर से श्री वीरेन्द्र "वीर" धनुर्धर के नेतृत्व में सत्याग्रही जत्था

बम्बई से श्री बल्देव भाई आर्यके नेतृत्व में
सत्याग्रही जत्था

ग्वालियर से श्री जानकीप्रसाद जी के नेतृत्व में
सत्याग्रही जत्था

॥ ओ३म् ॥

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष ३२ } नवम्बर १९५७. कार्त्तिक—मार्गशीर्ष २०१४ वि०, दयानन्दाब्द १३३ { अङ्क ९

# वैदिक प्रार्थना

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ ३ ॥

व्याख्यान—हे अनन्तबल महावीर ईश्वर ! "दृते" हे दुष्टस्वभावनाशक विदीर्णकर्म अर्थात् विज्ञानादि शुभ गुणों का नाश करने वाला मुझको मत रखो ( मत करो ) किन्तु उससे मेरे आत्मादि को विद्या सत्यधर्मादि शुभ गुणों में सदैव अपनी कृपा सामर्थ्य से स्थित करो "दृꣳह मा" हे परमैश्वर्यवान् भगवन् ! धर्मार्थकाममोक्षादि तथा विज्ञानादि दान से अत्यन्त मुझको बढ़ा। "अमित्रस्येत्यादि०" हे सर्वसुहृदीश्वर सर्वान्तर्य्यामिन् ! सब भूत प्राणिमात्र मित्रदृष्टि से यथावत् मुझको देखें। सब मेरे मित्र हो जायं। कोई मुझसे किञ्चिन्मात्र भी वैर न करें। "मित्रस्याहं, चेत्यादि" हे परमात्मन् ! आपकी कृपा से मैं भी निर्वैर होके सब चराचर जगत् को मित्रदृष्टि से अपने प्राणवत् प्रिय जानूं। अर्थात् "मित्रस्य चक्षुषेत्यादि" पक्षपात छोड़ के सब जीव देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर अपना बर्त्ताव करें। अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्त्तें। यह परमधर्म का सब मनुष्यों के लिये परमात्मा ने उपदेश किया है। सबको यही मान्य होने के योग्य है ॥ ३ ॥

## सम्पादकीय

# आर्यसमाज के आन्दोलन का लक्ष्य बुराई को मिटाना है।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन अपनी सफल प्रगति के छठे महीने में प्रविष्ट हो रहा है। इसके लिये समस्त हिन्दी प्रेमी जन जो इसे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्रदान कर रहे हैं, बधाई के पात्र हैं। प्रबल विरोधी शक्तियों और तत्त्वों का सामना करते हुए भी आर्यसमाज इस आन्दोलन को जिस कुशलता और संयत ढंग से सफलता की ओर ले जा रहा है उसकी प्रायः सभी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में प्रशंसा करते हैं। इसका श्रेय आर्यसमाज के कुशल नेतृत्व एवं दृढ़ संगठन शक्ति के साथ २ सत्याग्रह के वीर सैनिकों और वीरांगनाओं को—उनके तप, त्याग बलिदान और सत्य के लिये मर-मिटने की उद्दाम भावना को प्राप्त है।

आर्यसमाज की मांगों का औचित्य और उसके नेतृत्व का श्रेष्ठत्व प्रायः सभी समझदार व्यक्तियों पर अंकित हो गया है और दिन प्रतिदिन अंकित होता जा रहा है। आर्यसमाज सत्य का पुजारी है। सत्य की रक्षा के लिये संघर्ष करते हुए उसके मन में किसी के प्रति न दुर्भावना होती है और न स्वार्थ का अंश ही होता है। जिन लोगों ने आर्यसमाज के इस आन्दोलन को सिख विरोधी, साम्प्रदायिक एवं राजनैतिक कह कर इसे बदनाम करने की चेष्टा की उन्होंने मुंह की खाई, क्योंकि सर्वसाधारण जनता का यह विश्वास है और ठीक ही विश्वास है कि आर्यसमाज इस प्रकार की भावनाओं से ऊपर रहता है और सत्य की रक्षा के लिये विवश होकर ही इस प्रकार का उग्र पग उठाता है। ऐसा करते हुए भी उसकी किसी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं होती। यह अनूठी देन उसे अपने संस्थापक से प्राप्त हुई है जिसने सत्य की रक्षा के लिये भीषण परीक्षाओं में पड़ते और कष्ट सहन करते हुए भी किसी के प्रति दुर्भावना न रख कर विरोधियों के प्रति भी सद्भावना रक्खी।

जो लोग यह समझते तथा कहते हैं कि आर्य-समाज ने इस आन्दोलन को छेड़ कर राजनीति के स्तर पर पैर रखा है, वह इस बात को भूल जाते हैं कि आर्यसमाज जिस राजनीति का पृष्ठ पोषक है उसकी धर्म और संस्कृति से पृथक् एक क्षण के लिये भी कल्पना नहीं की जा सकती। उसकी दृष्टि में राजनीति वही ठीक राजनीति है जो धर्म और संस्कृति की विशेषताओं की रक्षा करे। जो राज-नीति इनके मार्ग में बाधक बने उसे राजनीति नहीं वरन् जुए बाजी की संज्ञा दी जा सकती है। आज कौन राजनीतिज्ञ यह न मानने का साहस कर सकता है कि प्रत्येक राजनैतिक प्रश्न सामाजिक और प्रत्येक सामाजिक प्रश्न नैतिक वा धार्मिक प्रश्न बन रहा है। सच्चर और पेप्सू फार्मूलों के द्वारा एक अनीति को स्थिर रूप दिया जा रहा है। यदि आर्यसमाज यह दोषारोपण करे कि राजनीति ने सच्चर और पेप्सू फार्मूलों के द्वारा सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करने की अनधिकार चेष्टा की है तो वह सर्वथा युक्तियुक्त होगा।

शिक्षा विशेषज्ञों के द्वारा निर्णेतव्य विषयों में राजनीतिज्ञों ने टांग अड़ा कर बड़ी भारी भूल की। यदि आर्यसमाज इस भूल के सुधार के लिये राज-नीतिज्ञों की हठ के कारण बलिदान के मार्ग को अपनाने के लिए विवश हो गया तो कहा जाता है कि वह राजनैतिक स्तर पर उतर आया है। कैसी विडम्बना है ? आर्यसमाज का आन्दोलन न साम्प्र-दायिक है और न राजनैतिक। इस नारे की निस्सारता उन लोगों के हृदयों में भी घर करती जा रही है जो इसे साम्प्रदायिक वा राजनैतिक कहने में दिन रात एक करते रहे हैं। अब उन्होंने हमारे आन्दोलन को असांस्कृतिक कह कर इसे राजनैतिक दिखाने के लिए एक और नारे का आविष्कार

किया है। वे कहते हैं कि भाषा भौगोलिक विषय होता है सांस्कृतिक नहीं। इस नारे की हिमायत लोक सभा के उपाध्यक्ष सरदार हुकमसिंह जैसे उत्तरदायित्व पूर्ण महानुभावों के द्वारा हो रही है। इस प्रकार का नारा लगाने वालों की बुद्धि पर तरस आता है। वे उपभाषा और भाषा में भेद न करके उपभाषा को ही भाषा की संज्ञा दे रहे हैं। यदि यह मान भी लिया जाय कि उपभाषा की सीमा बहुत कुछ भूगोल से स्थिर होती है तो भी यह स्वीकार नहीं किया जासकता कि भाषाका संस्कृति और धर्म के साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता। वस्तुतः भाषा की सीमा, सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीय भावना के ऊपर निर्भर होती है। (देखें इण्डियन प्रेस प्रयाग द्वारा प्रकाशित भाषा रहस्य ग्रन्थ पृ० ४२) हिन्दी हमारे सांस्कृतिक ढांचे का मूलाधार और राष्ट्रीय निधि है। उसकी रक्षा करना वा उसे अपदस्थ होने से रोकना हिन्दी प्रेमियों का अत्यन्त आवश्यक नैतिक कर्त्तव्य है। आर्यसमाज इसी नैतिक एवं राष्ट्रीय कर्त्तव्य की पूर्त्यर्थ अग्रसर हुआ और हो रहा है। आर्यसमाज के आन्दोलन से देश की राजनीति उत्तम दिशा में प्रभावित नहीं हुई कौन देश प्रेमी होगा जो इस बात से एक क्षण के लिए भी इन्कार कर सके। आर्यसमाज के सत्याग्रह आन्दोलन से और उसके केस के औचित्य से हमारे देश के उच्च कर्णधारों पर कम से कम यह तो अंकित हो गया है कि सच्चर एवं पेप्सू फार्मूले को रीजनल योजना का अंग बनाये रखने के निर्णय के रूप में उनसे एक बड़ी भारी भूल हो गई है और वे इस बात को प्रकट रूप में स्वीकार करने के लिये बाध्य भी हो गये हैं जैसा कि श्रीयुत पं० जवाहरलाल जी के रामलीला ग्राउण्ड के २६-१०-५७ के भाषण से स्पष्ट है। अतः जो भाई आर्यसमाज के आन्दोलन को साम्प्रदायिक, राजनैतिक वा असांस्कृतिक कहने का दुस्साहस करते हैं उन्हें अपने को उपहासास्पद बनने से रोकना चाहिये।

कुछ लोग आर्यसमाज के केस को ठीक प्रकार न समझ कर वा ईर्ष्या द्वेष के वशीभूत होकर यह भ्रम पूर्ण प्रचार कर रहे हैं कि इस आन्दोलन से अहिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में हिन्दी भाषा के प्रति प्रतिक्रिया उत्पन्न हो गई है और इससे उन प्रान्तों में हिन्दी के हित को क्षति पहुँच रही है। उनसे हम यही कहेंगे कि यह आन्दोलन पंजाब में हिन्दी के द्वारा लोक भाषा पंजाब को अपदस्थ करने के लिए संचालित नहीं किया गया है। आर्यसमाज तो केवल यही चाहता है कि पंजाबी और हिन्दी को बलात् किसी के गले न उतारा जाय। वहां हिन्दी और गुरुमुखी भाषाओं का संघर्ष कदापि नहीं है। आर्यसमाज यही चाहता है कि दोनों भाषायें खूब फलें फूलें। दोनों ही राजनैतिक अड़ंगेबाजी के भंवर में फंसकर डूबने से बचें और स्वच्छन्द रूप से पारस्परिक आदान-प्रदान, सद्भाव और सहयोग से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हों।

आर्यसमाज सदैव ही सम्मान पूर्ण समाधान के लिये उत्सुक और प्रयत्नशील रहा है। आर्यसमाज के नेतृत्व ने समझौता चर्चा में इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि इन चर्चाओं के कारण आन्दोलन की गति और शक्ति शिथिल न होने पाये। इस जागरूकता के कारण कोई भी दुरभि सन्धि उस पर प्रभाव नहीं डाल सकी है, यद्यपि उसने समझौते के वातावरण की उत्पत्ति और स्थिति के बल का स्वागत किया और उसमें पूरा २ योगदान किया है। उसने अनेक बार स्पष्ट किया कि किसी सुनिश्चित योजना के सामने आने पर यह विचार के लिये समुद्यत है। इस प्रकार की योजना के आने पर वह अवश्य समुचित विचार करेगा। आर्यसमाज का लक्ष्य तो बुराई को मिटाना है। यदि इसमें कोई अपनी मान हानि समझे वा स्वार्थों पर आघात समझे तो समझा करे इसके लिए आर्यसमाज न दोषी है और न होगा।

इस समस्या के सन्तोषजनक हल के लिए हमारे राजनीतिज्ञों को देश के दूरवर्ती हित को दृष्टि में रख कर दलीय स्तर से ऊंचा उठना चाहिये

और परिणामों की तुलना में, सिद्धान्तों को विशेष हितों की तुलना में व्यापक हितों को और व्यक्तियों की तुलना में विचारों एवं सत्य को प्रमुखता देनी चाहिये। इस देशको शांतिकी बड़ी आवश्यकता है, विशेषत: आहत पंजाब को। देश की आर्थिक एवं सामाजिक अवस्था के सुधार के लिए शान्ति एवं सुव्यवस्था की आवश्यकता से कोई इन्कार नहीं कर सकता। सन्तुष्टिकरण की नीति से देश के हृदय में जो घाव उत्पन्न हुए हैं वे अभी तक भर नहीं पाये हैं। उन घावों में वृद्धि नहीं होनी चाहिये। आर्य समाज के सत्य रक्षा के इस आन्दोलन ने राजनीतिज्ञों को कसौटी पर रख दिया है। देखना है वे इस पर खरे उतरते हैं या नहीं ? यदि खरे सिद्ध हुए तो न केवल आहत पंजाब के घाव ही सूख जायेंगे, अपितु इस आन्दोलन की दुःखद स्मृतियों की गाढ़ी रेखायें भी जो प्रशासकीय अत्याचारों के कारण हृदयों में दूर तक घर कर गई हैं, बहुत कुछ हलकी हो जायेंगी।

३१-१०-५७ —रघुनाथप्रसाद पाठक

## विश्व में शाकाहारी आन्दोलन

श्री फतहचन्द शर्मा आराधक स० सम्पादक नवभारत टाइम्स उपर्युक्त शीर्षक से लिखते हैं:—

नवम्बर मास में बम्बई तथा दिल्ली पटना, कलकत्ता में सारे विश्व के शाकाहारियों का एक सम्मेलन होने जा रहा है। इस सम्मेलन की तैयारी जोर शोर से शुरू हो गई है। जबसे इस सम्मेलन के भारतवर्ष में होने की चर्चा चली है तब से बहुत से लोगों के सामने एक विचार आ खड़ा हुआ है कि जब भारत में हिंसा बढ़ रही है उस समय संसार के दूसरे देशों में भारतीय संस्कृति की अहिंसक विचारधारा का आन्दोलन चल रहा है। अब विदेशों में बहुत से विचारक शाकाहारी बनने में अपना सौभाग्य मानने लगे हैं। ऐसे विचारकों की विभिन्न देशों में ऐसी बहुत सी संस्थाएं काम कर रही हैं जिनमें इस आन्दोलन को बढ़ावा मिल रहा है।

लगभग आधी शताब्दी पूर्व लन्दन में भी अनेक देशों की एक संयुक्त संस्था की स्थापना की गई और इसे 'अखिल विश्व शाकाहारी संघ' का नाम दिया गया। इस संस्था की ओर से उन देशों में जहां मांस का आहार अधिक था शाकाहारी सम्मेलन करके मांसाहार के प्रति रुचि बदलने की भावना व्यक्त की गई। अब तक इस संघ के निम्न स्थानों पर अधिवेशन हो चुके हैं।

डैस्टन १९०८, मानचैस्टर १९०९, ब्रुसेल्स १९१०, हेग १९१३, स्टाकहोम १९२३, लन्दन १९२६, स्टीलशेनो, चैकोस्लोवाकिया, १९२९, इडन जर्मनी १९३२, डोगार्ड, डैनमार्क १९३५, हरडाल्स बर्कर-स्वीडन १९५३, पेरिस (फ्रान्स) १९५५।

इन सम्मेलनों के प्रभाव से संसार के ३० प्रमुख देशों में शाकाहारी आन्दोलन का विकास हुआ।

### पेरिस अधिवेशन

विश्व शाकाहारी सम्मेलन संघ का गत वर्ष १४वां अधिवेशन पेरिस में हुआ था। पेरिस में ३० देशों के २०० से अधिक प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। भारत की ओर से प्रमुख अहिंसा तथा जीवदया आन्दोलन कर्ता श्री जयन्तीलाल एन मानकर (बम्बई) सम्मिलित हुए थे। श्री मानकर का कहना है कि मैंने जिस भावना का दर्शन पेरिस के अधिवेशन में किया उससे यह प्रतीत हुआ कि विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष अनुराग है। उसी दृष्टि से शाकाहारी संघ के पन्द्रहवें अधिवेशन का निमन्त्रण मैंने भारत की ओर से दिया, जिसे वहां सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। विदेशों से इस सम्बन्ध में आने वाले लोग यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि भारतीय आहार क्या

है और उसे किस प्रकार भोजन योग्य बनाया जाता है। इस सम्मेलन में भारत के सारे लोगों को शाकाहार के प्रति अनुराग पैदा करने के लिए अनेक आयोजनों द्वारा आकर्षित किया जायगा। इस सम्मेलन के लिए एक स्वागत समिति का भी संगठन किया गया है, जिसकी अध्यक्षा पद्मभूषण श्रीमती रुक्मणी देवी अरडेल हैं।

## मांसाहार क्यों त्याज्य है ?

भारतीय संस्कृति के आधार पर हमारा यह उद्देश्य रहा है कि प्राणी मात्र को जियो और जीने दो। यही प्रमुख कारण था कि भारतीय परम्परा में मांसादि भक्षण का पूर्ण रूप से निषेध रहा। किसी एक संस्कृत कवि का कहना है:—

यो अत्ति यस्य मांसं पश्योभयान्तरम्।
एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्वियुज्यते॥

इस श्लोक में कहा गया है कि वे लोग निकृष्ट हैं जो अपनी जीभ के स्वाद के लिए दूसरे के प्राणों का हनन करते हैं। इसके अतिरिक्त और बहुत से ऐसे प्रमाण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति के सभी क्षेत्रों में अहिंसा को विशेष महत्व दिया गया है। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा गया है कि:—

सुरा, मत्स्या पशोर्मांसं--मांस और मदिरा आदि हेय पदार्थ का सेवन विवेकी पुरुषों के लिए त्याज्य हैं।

भागवत पुराण में यज्ञ, तप, दान, आदि से जीवन दान को विशेष महत्व दिया गया है। यह केवल हिन्दू ग्रन्थों की बात नहीं जैन ग्रन्थों में जो कच्चा या पक्का मांस खाता है या छूता है वह करोड़ों जन्तुओं के हनन का दोषी होता है। इस प्रकार का विचार जैनाचार्य पुरुणार्थ सुद्ध्युपास्य में लिखा है। इनके अतिरिक्त बौद्ध शास्त्रों में लिखा है:—

मद्यं मांस पलाण्डुं च न भक्षयेयं महामुने।
बोधिसत्वैर्महासत्वैर्भाषद्भिर्जिनपुंगवैः॥

प्राचीन लंकावतार के इस सूत्र में मदिरा मांस किसी भी बौद्ध धर्मानुयायी के लिए खाना पाप माना गया है। इससे भी अधिक जो अपने लाभ के लिए मांस खाने की प्रेरणा देते हैं उन्हें भी पापाचारी माना गया है। मुसलमान ग्रन्थों में मांस खाना उचित है या नहीं यह एक विवादग्रस्त चर्चा है। किन्तु बहुत से मुसलमान किसी प्रकार का भी मांस नहीं खाते। स्वयं अकबर बादशाह बहुत कम मांस खाते थे। उनका कहना था कि परमात्मा ने हमारे लिए खाने के बहुत से अमृतोपम पदार्थ पैदा किए हैं तब क्यों मांसाहार किया जाय।

## डाक्टरों का कथन

पिछले कुछ दिनों से आहार सम्बन्धी बहुत कुछ नयी बातें सुनने में आती हैं। कुछ लोगों का कहना है कि स्वास्थ्य के लिए मांसाहार आवश्यक है किन्तु केवल भारत ही के नहीं विदेशों के बहुत से विचारकों, विद्वानों ने मांसाहार को मनुष्य के लिए उचित नहीं माना। पाश्चात्य विद्वानों का कहना है कि मांसाहार से बहुत से रोग बढ़ते हैं और फलाहार से जीवन स्वस्थ होता है और आयु में वृद्धि होती है। मांसाहार के विरोध में उनका यह भी कहना है कि वह दुराचार को बढ़ावा देने वाला है यदि हम चाहें तो बिना किसी कष्ट के शाकाहारी जीवन के द्वारा स्वर्ग सुख प्राप्त कर सकते हैं। मांसाहार केवल हमारी कुप्रवृत्तियों को बढ़ाने में सहायक होता है।

## सात्विक भोजन का रहस्य

बौद्ध जातक कथा में इस सम्बन्ध में एक लघु वार्ता है। एक बटेर बड़ी प्रसन्नता से दाने चुग कर बड़ी सुखी रहती थी किन्तु उसके साथ रहने वाला कौवा मांस भक्षण करने के बाद भी हर समय भूखा ही रहता। एक बार कौवे ने पूछा कि तुम क्या खाती हो, जो इतनी हृष्ट-पुष्ट हो, बटेर बोला साथ चलो, जो मैं खाऊंगी वह तुम भी खाना। जब वे दोनों

साथगए और देखाकि बटेर घासपात खाकरभी सुखी और आनन्दमग्न है। तब कौवे से न रहा गया और उसने कहा कि तुम अपने भोजन का रहस्य बताओ बटेर बोली कि मैं कम इच्छा कम चिन्ता, और जो मिले उसमें विश्वास रखती हूं। और जो इच्छा और चिन्ता करते हैं वे तुम्हारी तरह न सुखी रह सकते हैं और न जीवन का रहस्य जान सकते हैं।

## कुरान बहुपत्नीत्व की प्रथा को पसन्द नहीं करता

"लंडन का रूटर द्वारा प्रसारित १३ अक्टूबर का समाचार है कि कर्नल हातिम ने १२ अक्टूबर को वहां एक प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि मिश्र के वर्तमान समाज में बहुपत्नीत्व की प्रथा के समाप्त हो जाने की बहुत कुछ संभावना है। कर्नल हातिम लंडन में आयोजित इन्टर पार्लियामेन्टरी कान्फ्रेंस में मिश्र के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे और यह बात उन्होंने 'मिश्र की वर्तमान महिलाओं' के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि मिश्र बहुपत्नीत्व की प्रथा का हल ज्ञात करने के लिए उत्सुक है जो उस समय की वस्तु है जब कि युद्ध के कारण पुरुषों की कमी रहती थी। उस समय यह हल उचित और सन्तोषजनक सिद्ध हुआ।

परन्तु कुरान का आदेश है कि सब बीवियों का समान रूप से निर्वाह करना चाहिए और एक बीबी को दूसरी पर तरजीह न देनी चाहिए। इस बात पर ध्यान पूर्वक विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुरान बहुपत्नीत्व की प्रथा को पसन्द नहीं करता। शारीरिक, नैतिक और मानसिक दृष्टि से मनुष्य के लिए यह असंभव है कि वह एक से अधिक बीबी के साथ न्याय कर सके।

आज हम देखते हैं कि बहुपत्नियां वाले विवाहित पुरुषों की संख्या ४ प्रतिशतक से अधिक नहीं है, और इसका मुख्य कारण सन्तानोत्पत्ति तथा अन्य मानवीय कारण हैं।

आज मिश्र की गवर्नमेन्ट लोगों का जीवन-स्तर ऊंचा करने और इस्लाम की शिक्षाओं के ठीक प्रयोग और कुरान की ठीक व्याख्या करने का भी प्राण पण से प्रयत्न कर रही है।"

## पंजाब सरकार की मनोवृत्ति निन्दनीय

मुजफ्फरपुर, के लंगटसिंह महाविद्यालय के हिन्दी-साहित्य-परिषद् द्वारा आयोजित एक सभा में भाषण करते हुए महा-पंडित राहुल सांकृत्यायन ने कहा कि बाल्यावस्था में अपनी मातृ-भाषा में शिक्षा ग्रहण करने की सुविधा होनी चाहिए और फिर उच्चस्तर पर शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा को ही रखना अनिवार्य है।

उन्होंने विचार व्यक्त किया कि लोकभाषाओं की उन्नति से ही हमारी राष्ट्रभाषा समृद्ध हो सकेगी। किसी भी लोकभाषा या क्षेत्रीय भाषा में हिन्दी का कोई विरोध नहीं होना चाहिये बल्कि उसका विकास करके हिन्दी को शक्ति प्रदान करनी चाहिए। आपने कहा, हिन्दी का दुर्भाग्य है कि किसी मातृभाषा से उसका सीधा सम्बन्ध नहीं है।

राहुल जी ने हिन्दी और दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रतिपादकों के बीच में यदा-कदा चलने वाले विवाद पर दुख प्रकट किया और कहा कि लोगों को इस तथ्य का ऊंचे धरातल पर मूल्यांकन करना चाहिये।

पंजाब में चल रहे हिन्दी रक्षा आन्दोलन और भाषा-विवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने बलपूर्वक कहा कि किसी भाषा को बच्चों पर लादने की सरकार की मनोवृत्ति निन्दनीय है।

# ब्रह्मवर्चस्वी, वीतराग, तपोमूर्ति, पूज्यपाद श्री स्वा० आत्मानन्द जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय

( श्रीयुत पं० शिवकुमार शास्त्री )

### जन्म तथा विद्याध्ययन

पंजाब के ऐतिहासिक हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सूत्रधार, आ० प्र० सभा पंजाब के प्रधान तथा सा० दे० धर्मार्य सभा के प्रधान श्री स्वा० आत्मानन्द जी महाराज का जन्म अब से ८४ वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अन्तर्गत एक ग्राम में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। चतुर्थाश्रम के नाम से पूर्व श्री स्वामी जी महाराज का नाम पं० मुक्तिराम था। आपने प्रारम्भ में खुर्जा में महामहोपाध्याय श्री पं० परमानन्द जी के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त की और उसके पश्चात् शास्त्रों के गम्भीर मन्थन के लिये आप काशी चले गये। आपने काशी में विशेषकर दर्शन शास्त्रों में परम कौशल प्राप्त किया।

### कार्यक्षेत्र में

विद्याध्ययन के पश्चात् श्री स्वामी जी महाराज पं० मुक्तिराम उपाध्याय के नाम से विख्यात हुए। आपका दर्शन शास्त्र पर तो ऐकाधिपत्य था ही— साथ ही व्याकरण और साहित्य में भी आपकी बहुत रुचि थी। श्री स्वामी जी की संस्कृत काव्य की रचना का अनुमान उनके निम्न पद्य से लगाइये। स्वातन्त्र्य से पूर्व भारत की निर्धनता को देखकर श्री स्वा० जी के हृदय हिमगिरि से एक करुण-काव्य गंगा बह निकली थी। जिसकी एक तरंग यह है।

यां भारतीय धरणीं बहुधान्य युक्तां सर्वोऽपि काञ्चन-मयीं मनुतेस्म लोकः। तत्राद्य मुष्टि चणकानपि नाप्नुवन्तो दारिद्रय पीडितजनाः शतशो म्रियन्ते॥

श्री स्वामीजी महाराज का अब तक का कार्यक्षेत्र पंजाब ही रहा है। आप बीसियों वर्ष श्री स्वा० दर्शनानन्द जी महाराज द्वारा संस्थापित गु० कु० पोठोहार के आचार्य रहे। पाकिस्तान बनने के कुछ समय पूर्व आप गु० कु० पोठोहार को रावलपिण्डी ले आये। रावल ग्राम के पास ही रावल-मु० कु० के नाम से संस्था स्थापित की। यह विद्यालय भवन की दृष्टि से भी कितना विशाल बन गया था, इससे सहज ही श्री स्वा० जी के अद्भुत प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। श्री स्वा० जी महाराज के सैकड़ों शिष्य शास्त्री और आचार्य भारत के प्रत्येक क्षेत्र में बड़े-बड़े उत्तरदायी पदों पर कार्य कर रहे हैं।

### आर्यसमाज के प्रचार की धुन

श्री स्वा० जी महाराज शिक्षण क्षेत्र में रहते हुए भी वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार में सदा सजग रहे। आपने रावलपिण्डी के अन्दर एक उपदेशक विद्यालय की भी स्थापना की थी जिसमें श्री स्वा० वेदानन्द जी महाराज भी आपके साथ काम करते रहे और उसमें अर्थात् अनेक व्यक्ति सम्प्रति वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार बड़ी लग्न से कर रहे हैं। वैदिक धर्म पर जब भी संकट आया पूज्य स्वा० जी सदा उसके निवारण के लिये अग्रसर रहे। हैदराबाद के सत्याग्रह में आप एक विशाल जत्था लेकर जेल गये।

### ग्रन्थों का प्रणयन

श्री स्वा० जी महाराज ने व्यस्त जीवन में से भी कुछ समय निकाल कर बहुत ही मूल्यवान ग्रन्थ रत्न लिखे हैं। पू० स्वा० जी के लिखित ग्रन्थों में से मनोविज्ञान और शिव संकल्प, वैदिक गीता और संध्या अष्टांग योग मुख्य हैं।

### संन्यास

श्री स्वा० जी महाराज सदा ही प्रकृत्या विरक्त रहे हैं, आप गृहस्थी नहीं बने। किन्तु विधिवत् संन्यास आपने पाकिस्तान बनने से कुछ समय पूर्व ग्रहण किया और मुक्तिराम से आत्मानन्द बने।

### भारत विभाजन

परिस्थितियां परिवर्तित होती गई और पाकिस्तान के रूप में हमारा एक चिर शत्रु सांप बनकर घर में बैठ गया। इस आपत्ति के समय श्री स्वा० जी महाराज ने रावलपिण्डी में हिन्दुओं की जो सेवा की वह अमर रहेगी। आपने न केवल पीड़ित हिन्दू जनता को रावलपिण्डी में रहन-सहन और

भोजनादि की व्यवस्था करके सुखी बनाया— अपितु एक-एक हिन्दू बालक को पाकिस्तान से भारत भेजा। रावलपिण्डी में आप अन्तिम व्यक्ति थे जो महीनों पश्चात् भारत में आये।

### वैदिक साधनाश्रम

वर्तमान भारत में आप रावल पिंडी से चलकर जगाधरी पहुँचे। वहां के निवासियों पर आपकी योग्यता, साधुता और महत्ता का अद्भुत प्रभाव हुआ। वहां के रईस स्व० श्री ला० मिश्रीलाल जी ने पूज्य स्वामी जी के आश्रम के लिये यमुनानगर स्टेशन के पास ही अपनी भूमि का एक बहुत बड़ा भाग दान दिया और भक्त मण्डली ने एक सुन्दर आश्रम बनाकर खड़ा कर दिया। श्री० स्वा० जी महाराज के आश्रम का नाम वैदिक साधनाश्रम है। इसी आश्रम में आजकल सभा का उपदेशक विद्यालय भी चल रहा है।

### आ० प्र० सभा पंजाब की प्रधानता

पाकिस्तान बनने के कारण सभा की आर्थिक अवस्था उत्तरोत्तर बिगड़ रही थी। श्री स्वा० जी के प्रभाव को देखकर भक्तों ने उनसे प्रार्थना की और उनको सभा के प्रधान पद पर सुशोभित कर दिया। श्री स्वा० जी महाराज ने प्रधान बनते ही वेद प्र० फरड के लिये १०००००) की राशि एकत्र की और सभा के आर्थिक ढांचे को जमाया। सभा के दूसरे चुनाव में भी आपको सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया।

### हिन्दी रक्षा आन्दोलन

साम्प्रदायिकता के सामने कांग्रेस की घुटने टेक नीति के कारण पंजाब में हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय हुआ, राष्ट्रभाषा हिन्दी को पंजाब के एक वर्ग की धार्मिक और अर्धविकसित भाषा दबोच कर बैठ गई। पूज्य स्वा० जी से यह अन्याय न देखा गया और उन्होंने उसे मिटाने के लिये सर धड़ की बाजी लगा दी। प्रारम्भ में उन्होंने वार्ता और सद्भावना के द्वारा इस गुत्थी को सुलझाना चाहा किन्तु शासकों के निष्ठुर हृदयों में जब उसका कोई प्रभाव न हुआ तो उन्होंने सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। यह ऐतिहासिक सत्याग्रह कितना शीघ्र महान् महत्तर और महत्तम होता चला गया यह आश्चर्य की बात है। पंचशील का ढोल पीटने वाले हमारे नेताओं के प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष संकेत पर पंजाब की शिष्ट और सभ्य समझी जाने वाली सरकार ने जो अत्याचार किये उनकी किसी को कल्पना भी नहीं थी। रोहतक के बहु अकबरपुर ग्राम के निरपराध स्त्री, पुरुष, बूढ़ों और बच्चों को किस निर्दयता से सताया गया— पेट के बल रेंगवाया गया। इस क्रूर कृत्य के सामने तैमूर और नादिर के भयंकर अत्याचार भी हलके रह गये। बात बात में "सत्यमेव जयते" की दुहाई देने वाली सरकार ने धार्मिक नेता विद्वान् और संन्यासियों को सड़क पर घसीटवाया, चोरी, डाके और आत्महत्या के आरोप लगाये, सारे पंजाब में पुलिस-राज्य स्थापित कर दिया। वहां न कोई कानून रहा न विधान। दयानन्द मठ का घेरा डाल कर अन्दर वालों को टट्टी और पेशाब तक के लिये बाहर नहीं आने दिया गया और कोई पूछने वाला नहीं। इन सबसे बढ़कर फीरोजपुर जेल का लाठी-काण्ड तो स्वतन्त्र भारत के मस्तक पर वह कलंक का टीका है जिसे लाख मन साबुन लेकर लाख नेहरू भी धोने के लिये बैठें तो वह कलंक उभर तो जावेगा किन्तु मिट न सकेगा। फीरोजपुर जेल के घायल सत्याग्रहियों की आहें स्वा० जी के कानों में गूंज रही है होनहार युवक सुमेरसिंह की जीवन कली अकाल में ही निर्दयतापूर्वक कुचल दी गई। इन सब अत्याचारों की बाढ़ से पू० स्वा० जी के हृदय में वर्णनातीत वेदना है। पर हमारे शासकों के पाषाण हृदय अभी नहीं पिंघले।

इस विकट परिस्थिति में गुरु तेगबहादुर के समान पूज्य स्वामी जी समझते हैं कि एक महान् बलिदान की आवश्यकता है और इस यज्ञ में पवित्र आहुति के लिये अब वे अस्वस्थ होते हुए भी सत्याग्रही के रूप में अपना जीवन भेंट कर रहे हैं। लो, वि० वंद्य बापू के नाम को उज्ज्वल करने वाले अहिंसा के पुजारियो ! महात्मा की इस जीवन-निधि को सँभालो।

# भाषा की समस्या

(लेखकः—स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक)

पार्टी पालिटिक्स के पापों के भंवर में फसे मनुष्य का विवेक कैसा कुण्ठित हो जाता है, यह बात पं० जवाहरलाल नेहरू के उन पत्रों से स्पष्ट जान पड़ती है जो उन्होंने स्वामी आत्मानन्द जी के पत्रों के उत्तर में भेजे हैं। पंजाब सरकार के मुख्य-मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों के विरुद्ध कैसे लज्जा-जनक और सङ्गीन इलजाम पंजाब प्रजा समाजवादी के महामन्त्री ने लगाए हैं उनकी ओर नेहरू जी का ध्यान आकर्षित ही नहीं होता और वह जनसंघ हिन्दू महासभा और रामराज्य परिषद का आर्य-समाज के साथ मिल कर काम करना बड़ा भारी अपराध समझते हैं और स्वामी आत्मानन्द जी से अनुरोध करते हैं कि वह हिन्दी रक्षा समिति के पवित्र कार्य को शीघ्र स्थगित कर दें। वह समझते हैं कि यह हिन्दी रक्षा आन्दोलन कांग्रेस से सत्ता हथियाने की एक चाल है।

है विवेक शून्यता से भरी हुई दलील!

प्रधान मन्त्री जी के पेट में हिन्दुओं के इस संगठन को देखकर भयंकर पीड़ा उठ रही है। वह चाहते हैं कि हिन्दू सदा फूट के गढ़े में गिरे रहें, वह संगठित न हों, जिस से कांग्रेस के विरुद्ध कोई शक्तिशाली पार्टी न बन सके। पंजाब में हिन्दी विवाद का प्रश्न एक ऐसा साधारण मामला है जो थोड़े से गम्भीर विचार से समझ में आ सकता है। लीजिए मैं कुछ उदाहरण देकर इस विवाद को स्पष्ट करता हूँ।

सन् १६०० में जब मैं संस्कृत पढ़ने बनारस गया था तब वहां के गुरुजन और विद्यार्थी संस्कृत शब्दों का मेरा गलत उच्चारण सुनकर मुझे चिढ़ाया करते थे। मैं ठेठ पंजाबी हूँ और पंजाबी मेरी मातृ-भाषा है। मैं यदि गृहस्थ होता तो अपने बच्चों को कभी पंजाबी नहीं पढ़ने देता क्योंकि पंजाबी पढ़ने वाला विद्यार्थी संस्कृत शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकता। पंजाबी एक बोली है, जैसे अवधि और भोजपुरी। जो लोग अपनी सन्तान को राष्ट्रभाषा का विद्वान बनाना चाहते हैं, वे इन बोलियों के पचड़ों में क्यों पड़े और क्यों अपनी सन्तान का समय नष्ट करें। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी वाले सदा इन शब्दों को अशुद्ध लिखते हैं। वह मणि की जगह मनी और गुरुद्वारा के स्थान गुर-दुआरा लिखते हैं। इस प्रकार हिन्दी शब्दों का अनादर करके क्या हम राष्ट्र-भाषा को बिगाड़ने देंगे?

है न यह छोटी सी बात। पार्टी पालिटिक्स के भंवर में फंसे हुए नेहरू जी ऐसी मोटी बात भी नहीं समझ सकते। उन्हें चाहिए था कि वह प्रसन्नता-पूर्वक आर्य समाज की मांग को स्वीकार कर लेते और पंजाबी पढ़ने की अनिवार्यता को हटा देते। बस झगड़ा खत्म हो जाता। सरदार प्रतापसिंह कैरों लोक तंत्र के सिद्धांतों के विरुद्ध कैसे सितम ढा रहे हैं। पंजाब पुलिस कैसे पाशविक अत्याचार कर रही है। नेहरू जी उन्हें देखते ही नहीं। उन्हें तो जनसंघ के साथ आर्य समाज का गठबन्धन खाए जा रहा है।

और लीजिए—महात्मा गांधी जी ने हिन्दू मुस-लमानों को समझाने के लिये आमरण अनशन किया था। यह उनके हृदय की उच्च सात्विक भावना थी जिसने उन्हें ऐसा करनेपर लाचारकिया। श्री आनन्द भिक्षु जी ने चण्डीगढ़ में पुलिस द्वारा आर्य समाज मन्दिर का अपमान करने के कारण

आमरण अनशन करने का प्रण किया और घोषणा की कि जब तक जिम्मेदार अधिकारी अपनी इस भूल का प्रायश्चित न करेंगे, तब तक वह व्रत नहीं खोलेंगे। अपनी २ भावना ही तो है। यदि महात्मा-गांधी जी को पुलिस आत्महत्या करने की चेष्टा के अपराध में पकड़ कर ले जाती तो क्या नेहरू जी उसे पंसद करते? कदापि नहीं, तो श्री आनन्दभिक्षु जी को आत्महत्या का अपराध लगा कर उन्हें जेल ले जाने का अधिकार पुलिस को किसने दिया? क्या सिख बन्धु अपने गुरुद्वारे का अपमान चुपचाप सहन कर लेंगे? यदि नहीं तो सरदार प्रतापसिंह कैरों की पुलिस को आर्य समाजी नेता का ऐसा घोर अपमान करने का क्या अधिकार था? हिन्दी रक्षा समिति के प्रतिष्ठित नेताओं पर ऐसा अत्याचार हो रहा है और नेहरू जी उसके विरुद्ध अपना मुंह तक नहीं खोलते। वे स्वामी आत्मानन्द जी को बिना सोचे समझे दबाते चले जा रहे हैं। मुझे आश्चर्य तो यह है कि हमारे प्रधान मन्त्री अपने गरेबान में मुंह डाल कर नहीं देखते। उनकी कांग्रेस का संघटन १६ आने साम्प्रदायिक है। कांग्रेस का कोई सदस्य अपनी आत्मा की आवाज के अनुकूल आचरण नहीं कर सकता। वह कांग्रेस का सदस्य होते ही उसकी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा जाता है। सम्प्रदाय भी एक दल अथवा पार्टी का नाम है जहां एक दल वाले दूसरे धर्मावलम्बियों से ऐसा ही वर्ताव करते हैं जैसा कांग्रेस जनसंघ अथवा आर्य समाज से कर रही है। अमरीका भी एक लोकतन्त्रवादी देश है। वहां की पार्टियां इस प्रकार का व्यवहार एक दूसरे के साथ नहीं करतीं। पंजाब के राज्यपाल ने हिन्दी रक्षा समिति को आपसी सलाह करने के लिए निमन्त्रित किया और पांच योग्य व्यक्तियों को दोनों ओर से चुनने का परामर्श दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री जगदेवसिंह सिद्धान्तीको हिन्दीरक्षासमिति वालों ने उस कमेटी का सदस्य चुना। कैरों सरकार की पुलिस सिद्धान्ती जी को पकड़ कर ले गई। पकड़ लिया तो खैर कोई बात नहीं, किन्तु समिति की प्रार्थना पर उन्हें मीटिंग में शामिल होने के लिये पेरोल पर जाने की अनुमति देना सर्वथा न्याय संगत था। वह हिन्दी रक्षा समिति के अत्यन्त योग्य नेता हैं, जिनकी बहुमूल्य सम्मति पंजाब सरकार और हिन्दी रक्षा समिति दोनों के लिए लाभदायक थी। उससे दोनों पार्टियों को वंचित रखना कहां की बुद्धिमत्ता है और कौन सी राजनीतिज्ञता है, पंजाब सरकार का ऐसा कुत्सित व्यवहार उसकी द्वेषाग्नि को प्रकट करता है।

और देखिये! पंजाबमें सिख और हिन्दू मुद्दतों से इकट्ठे रहते चले आ रहे हैं। मेरे बजुर्ग सिख थे और मेरे वंश के कई खान-दान अब भी सिख हैं और हमारे शादी विवाह सिखों में होते हैं। सिखों के दसों गुरु क्षत्रिय थे और क्षत्रियों के साथ सिख मत का गहरा सम्बन्ध है। आज तक कभी भी आपस में भाषा सम्बन्धी कोई झगड़ा सुनने में नहीं आया था लोग अपनी इच्छानुसार उर्दू, हिन्दी गुरुमुखी और अंग्रेजी पढ़ते लिखते थे। जिन्होंने गुरुग्रन्थ साहब पढ़ना होता था, वे गुरुमुखी सीख लेते थे। आर्य समाजी हिन्दू हिन्दी के बड़े भक्त हैं। अब जब देशभक्ति फैली और एक राष्ट्र की आवश्यकता अनुभव हुई, तो स्वाभाविक ही एक भाषा का प्रश्न उठा। महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा-गांधी, ये दो नवरत्न काठियावाड़ में पैदा हुए, जिन्होंने अपनी मातृभाषा गुजराती की परवाह न कर देशवासियों को हिन्दी भाषा और हिन्दी लिपि का पवित्र सन्देश सुनाया। हमें चाहिए था कि हम अति शीघ्र उनकी इस बहुमूल्य सम्मति के अनुसार सारे देश की एक लिपि देवनागरी बना देते, जिससे हम सब प्रादेशिक भाषाओं को आसानी से पढ़ सकते और एक दूसरे के बहुत निकट आ जाते। यह थी पहली योजना, जिसे नेहरू जी को पकड़ना चाहिए था और जो देश के शासन का मार्ग अत्यन्त सुलभ बना देती। इससे देशवासी समझ जाते कि वे एक

# रूस में सभी भाषाओं में समानता

**लेखक—श्री यू० देशेरीयेव**

भाषाओं के समानाधिकार का प्रश्न जातीय मसले का अभिन्न अंग है। सोवियत सङ्घ में जहां साठ से ऊपर जातियां, उपजातियां एवं अल्पसंख्यक जातियां रहतीं और परिश्रम करती हैं, जातीय मसला सच्चे अर्थ में न्याय्य एवं उचित रीति से हल किया गया है।

सोवियत राज्य की जातीय नीति वैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है। सोवियत सङ्घ में सर्वत्र राजकीय क्षेत्र में, आर्थिक एवं सांस्कृतिक निर्माण के क्षेत्र में जातीय समानता की नीति का बोलबाला है। सोवियत विधान के अनुसार कौमियत अथवा जातीयता के आधार पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नागरिकों के अधिकारों को किसी भी तरह नियन्त्रित करना उनके लिये प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से विशेष सुविधाएं कायम करना, कौम या जाति की बुनियाद पर पार्थक्य की हिमायत करना या घृणा और नफरत फैलाना दण्डनीय अपराध है।

सोवियत सङ्घ में न सिर्फ सभी जातियों की न्यायसङ्गत समानता कायम है वरन देश भर में वास्तविक असमानता दूर कर दी गयी है, जारशाही

---

माता की सन्तान हैं और उनमें सच्ची राष्ट्रीयता का उदय होने लगता। ऐसा न कर नेहरू जी ने करोड़ों और अरबों रुपयों के खर्च की योजनायें बना डालीं जिन्हें देखकर लोभी लालची,स्वार्थी, सत्ता के भूखे और लीडरी के शौकीन रुपया कमाने के लिए दौड़े। जो कोई कांग्रेस में घुसा, उसे पैसा लूटने की धुन सवार थी। जैसे गिद्ध लाश पर झपटते हैं, ऐसे ही लीडरी के भूखे थे | लोग नेहरू जी के पीछे दौड़े। मास्टर तारासिंह जी को लीडरी चाहिए। ऐसा लगता है कि यदि यह गुरुमुखी का पक्ष न लें, तो उन की नेतागिरी खत्म हो जाय और पंजाबी सूबा बनकर जो चैन की वंसी यह बजाना चाहते है, न बजेगी।

मैं खेद से कहता हूं कि पं० जवाहरलाल नेहरू अपने सब सद्गुणों के रहते हुए देश का शासन करना नहीं जानते और ऐसे देश का, जिसे सबसे पहले देशभक्ति और अच्छी शिक्षा की आवश्यकता है। आज देशका करुणक्रंदन यह है—'मैन वांटेड' अर्थात् ईमानदार आदमी चाहिए, जो सबसे पहले देश को एक सूत्र में बांधे। देश की पहली आवश्यकता आर्थिक नहीं, सच्चरित्रता की है। भले ही रोटी के अभाव से दो चार करोड़ आदमी मर जायें। आबादी कम होने से देश को हानि नहीं पहुंचेगी, किन्तु ईमानदार आदमी न होने से देश तबाह हो जायेगा और अच्छी से अच्छी योजनायें नहीं चल सकेंगी। नेहरू जी ने अपनी विदेश नीति द्वारा देश को बाहरी युद्धों से बचाया है और यश प्राप्त किया है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं, किन्तु मैं अपना सारा जोर लगा कर देशवासियों से कहता हूं कि नेहरू जी ने देश के शासन का गलत रास्ता पकड़ा है। सबसे पहले देश के बच्चों को अच्छी शिक्षा चाहिए। ईमानदार नागरिक होने से हम सब योजनायें चला सकेंगे, किन्तु स्वार्थ के वशीभूत भारतवासी कभी भी इस विशाल देश को अच्छे शासन सूत्र में नहीं बांध सकते। पंजाब का यह हिन्दी विवाद हमारी आंखें खोलने वाला है। यह हमें बार २ चेतावनी देता है। और कहता है—

स्वार्थी लीडरों से देश को बचाओ, और सबसे पहले सब प्रान्तीय भाषाओं की एक नागरी लिपि कर दो। तब तुम्हारी सब बीमारियों का इलाज आसान हो जायेगा।

द्वारा उत्पीड़ित जातियों के राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पिछड़ेपन का उन्मूलन कर दिया गया है। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने सोवियत भूमि की जनता को समाजवादी निर्माण में लगाया, उन्हें अपना राष्ट्रीय सोवियत राज्य स्थापित करने और अपनी भाषा के माध्यम से अत्यन्त विकसित समाजवादी संस्कृति उपलब्ध करने में साहाय्य पहुँचाया।

कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य ने सोवियत सङ्घ में बसने वाली जातियों की सभी भाषाओं की उन्नति एवं अभिवृद्धि के लिये आवश्यक परिस्थितियां भी तैयार कर दीं। सोवियत सङ्घ में कोई भी अनिवार्य राजभाषा नहीं है। कानून की दृष्टि से देश की सभी भाषाओं को बराबरी का दर्जा प्राप्त है। सोवियत संविधान की ४० वीं धारा के अनुसार सोवियत सङ्घ की सर्वोच्च सोवियत में जितने भी कानून पास होते हैं उनका प्रकाशन सङ्घीय जनतन्त्रों की सोलह भाषाओं में होता है। सोवियत सङ्घ की सर्वोच्च सोवियत के 'रिकार्ड' सोलह जनतन्त्रों की भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन काल में उसका मुख्य पत्र 'इजवेस्तिया' उसकी कार्यवाहियां इन भाषाओं में प्रकाशित करता है।

रूसी भाषा पारस्परिक आदान-प्रदान तथा सोवियत सङ्घ में बसने वाली जातियों के बन्धुत्व-पूर्ण सहयोग के माध्यम का काम करती है। रूसी भाषा जो संसार की समृद्धतम भाषाओं में एक है। सोवियत सङ्घ की सभी जातियों की भाषाओं और संस्कृतियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। सोवियत जन प्रतिनिधि रूसी भाषा का अध्ययन स्वेच्छया, उत्साहपूर्वक करते हैं। लेकिन यह कोई अनिवार्य राजकीय भाषा नहीं है और न किसी दूसरी भाषा का बहिष्कार ही करती है।

समस्त जातीय जनतन्त्रों एवं क्षेत्रों में सरकारी विभागों, वैज्ञानिक, सार्वजनिक एवं सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों के पत्र व्यवहार एवं कामकाज उस जनतन्त्र अथवा क्षेत्र की जातीय भाषा में होते हैं जो वहां की बहुसंख्यक जनता की भाषा है। सोवियत सङ्घ में बसने वाली जातियों के प्रतिनिधि ग्राम सोवियत एवं जन न्यायालय से लेकर सोवियत सङ्घ की सर्वोच्च सोवियत में, यानी कहीं भी, अपनी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। वे किसी भी सरकारी महकमे तक अपनी मातृभाषा के माध्यम से मौखिक अथवा लिखित रूप में अपना मन्तव्य पहुँचा सकते हैं। वैज्ञानिक एवं साहित्यिक कृतियां प्रकाशन गृहों, सम्पादक मंडलों, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों को भेजी जा सकती है और अपनी भाषा में प्रकाशित की जा सकती है।

समस्त जातीय जनतन्त्रों में राष्ट्रीय नाट्य शालाओं, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थानों, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षालयों तथा सङ्घीय जनतंत्रों के उच्च शिक्षालयों में कुल काम उनकी अपनी भाषा में होता है। रूसी वैज्ञानिकों की बन्धुत्वपूर्ण सहायता से सोवियत सङ्घ में बसने वाली जातियों के भाषा विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में काम करने वाले सैकड़ों क्या हजारों वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता प्रशिक्षित किये गये। समस्त सङ्घीय एवं स्वायत्त जनतन्त्रों तथा स्वायत्त क्षेत्रों में भाषा, इतिहास और साहित्य के संस्थान स्थापित हैं जहां भिन्न-भिन्न जातियों, के इतिहास, भाषा और साहित्य सम्बन्धी प्रश्नों का अध्ययन होता है जातीय जनतन्त्रों और क्षेत्रों में शिक्षकों को अपनी मातृभाषा और साहित्य में प्रशिक्षण देने के लिए शिक्षक ट्रेनिंग कौलेज हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा अनुसरित जातियों और भाषाओं की समानता को राष्ट्रीय नीति ने सोवियत सङ्घ की सभी जातियों की सृजनात्मक शक्तियों के अभूतपूर्व विकास को सुनिश्चित बनाया है। रूसी लोगों की सहायता से जातीय जनतन्त्रों और क्षेत्रों की श्रमिक जनता ने अल्पकाल में ही अपना आर्थिक पिछड़ापन दूर कर दिया और प्रगतिशील उद्योग एवं

उच्च कोटि की अत्यन्त विकसित कृषि का निर्माण किया। सोवियत सङ्घ में बसने वाली सभी जातियों की राष्ट्रीय भाषाएं और सांस्कृतिक—एक ऐसीसंस्कृति जिसका कलेवर तो राष्ट्रीय है परन्तु आत्मा समाजवादी है विकास के उच्च स्तर पर पहुँच गयी।

समस्त सोवियत जनतन्त्रों में सच्चे अर्थ में सांस्कृतिक क्रांति हो गयी सोवियत सङ्घ में शत प्रतिशत साक्षरता कायम हो गयी।

सोवियत सङ्घ की अड़तालीस जातियों और उपजातियों ने जिनकी कोई लिखित भाषा नहीं थी अक्टूबर समाजवादी क्रांति के बाद अपनी लिपि प्राप्त की। समाचार पत्र, पत्रिकाएं और पुस्तकें सोवियत सङ्घ की जातियों की भाषाओं में वृहत संस्करणों में प्रकाशित होती हैं। जहां क्रांति से पूर्व मध्य एशिया में बसने वाली जातियां की भाषाओं में अखबार नहीं निकलते थे वहां क्रान्ति के बीस साल बाद ताजिक भाषा में ४८, कजाख में १४७, किर्गिज में ३८ और तुर्कमन में ३८ अखबार प्रकाशित होने लगे। राष्ट्रीय जनतन्त्रों क्षेत्रों में प्रकाशन गृह खोले गये हैं जो पाठ्य पुस्तकें, शब्द-कोष, राजनीतिक और वैज्ञानिक साहित्य तथा उपन्यास प्रकाशित करते हैं। १६५३ में सङ्घीय और स्वायत्त जनतन्त्रों के प्रकाशन गृहों के सप्त वर्षीय एवं माध्यमिक स्कूलों के छात्रों के लिए उनकी मातृभाषा में एक हजार से ऊपर सिर्फ पाठ्य पुस्तकों की पांच करोड़ से ज्यादा प्रतियां प्रकाशित की।

सोवियत सङ्घ में बसने वाली समस्त जातियों के सोवियत काल में सर्वाङ्गीण बौद्धिक एवं आर्थिक विकास का अत्यन्त एवं अकाट्य दृष्टान्त है उत्तरी काकेशिया में बसने वाली लाक नामक अल्पसंख्यक जाति। जार-कालीन रूस में यह 'जाति जिसकी आबादी लगभग ५०,००० थीं निरन्तर अभाव, अविद्या एवं अन्धकार के दलदल में फंसी मर मिट रही थी। लाक लोगों में मात्र ०.५ प्रतिशत साक्षरता थी। सोवियत युग में लाक लोगों के लिये एक लिखित भाषा का निर्माण किया गया और उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने के लिए स्कूल सङ्गठित किये गये। समस्त वयस्क लाक तथा स्कूल जाने योग्य बच्चे साक्षर हो गये। लगभग ५५० लाक शिक्षक जिनमें मर्द औरत दोनों हैं, प्रशिक्षित किये गये हैं।

सोवियत सङ्घ के उच्च शिक्षालयों तथा वैज्ञानिक गवेषणशालाओं ने लाक लोगों के बीच से बाईस एम० एस०-सी० तथा तीन डाक्टर आफ सायंस तैयार किये हैं। इन्हीं में एक हैं प्राणि-विज्ञान के डाक्टर तथा लाक भाषा के विशेषज्ञ गाजी मुर्केलिंस्की। आज सत्तरह लाक स्त्री-पुरुष स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ रहे हैं। कुमुख नामक एक छोटे से लाक गांव ने जिसकी आबादी लगभग २५०० है, सोवियत काल में ३८० उच्च शिक्षा-प्राप्त तथा लगभग ४०० माध्यमिक शिक्षा प्राप्त स्त्री-पुरुष तैयार किये। लाक लोगों में उच्च-शिक्षा प्राप्त राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विविध क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं—इंजीनियर, तेल-मजदूर, बिजली के मिस्त्री, जहाज बनाने वाले, रसायनशास्त्री, पदार्थ विद्या-विद्, डाक्टर, भाषाविद्, लेखक और शिक्षक।

समाजवादी समाज में सभी जातियां और उनकी भाषाओं के त्वरित सर्वाङ्गीण विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियां तैयार की गयी हैं।

# पंजाब का हिन्दी आन्दोलन

देश के लिये यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि पंजाब में हिन्दी भाषियों को हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाने की आवश्यकता मालूम हुई। हमारे देश की उलझी हुई परिस्थिति की यह बलिहारी है कि यहां एक राज्य के लोगों को अपनी भाषा (जो संयोग से देश की राजभाषा भी है) के लिये इस प्रकार का जन-आन्दोलन करना पड़ रहा है। कनाडा में अंग्रेजी भाषी बहुमत में हैं। अन्टोरियो प्रान्त में फ्रेंच बोलने वाले अधिक हैं। किन्तु वहां अंग्रेजी की रक्षा के लिये लोगों को आन्दोलन नहीं करना पड़ा। रूस के बहुभाषा भाषी साम्राज्य में भी कहीं ऐसे आन्दोलन की कभी कल्पना नहीं की गई, किन्तु जब एक राज्य के बहुसंख्यक हिन्दी भाषी ऐसा आन्दोलन चलाने के लिये अपने को विवश समझें, कि वे हजारों की संख्या में उसमें भाग लेकर जेल जाने को तैयार हो जायें, तो उस आन्दोलन को बुद्धिहीन, अनावश्यक, साम्प्रदायिक, संकुचित कह कर नहीं टाला जा सकता।

पूर्वी पंजाब में पंजाब और हरियाणा नामक दो क्षेत्र हैं। हरियाणे में हिन्दी बोली जाती है। पंजाबी क्षेत्र में सभी लोग—हिन्दू, सिख, मुसलमान घरों में पंजाबी बोलते हैं। किन्तु विभाजन के पहिले से ही, और विशेषकर आर्यसमाज के प्रयत्नों से पंजाब के हिन्दुओं ने हिन्दी को अपनी भाषा स्वीकार कर लिया था। जिस प्रकार नीमाडी, मालवी, बुन्देलखण्डी, व्रजवासी, अवधवासी, भोजपुरी, कुमाउनी और गढवाली घरों में अपनी २ बोली बोलते हैं, किन्तु साधारण शिष्ट व्यवहार और लिखने-पढ़ने के लिये खड़ी बोली हिन्दी का व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार पंजाब के हिन्दुओं ने घरों और बाजारों में पंजाबी का व्यवहार करते हुए भी हिन्दी को अपनी भाषा बना लिया। सिख भी कुछ दिनों पहिले तक हिन्दी से परहेज न करते थे। श्री गुरू ग्रन्थ साहब में अधिकांश शब्द हिन्दी (व्रजभाषा या अवधी) के ही हैं। पच्चीस-तीस वर्ष पहले तक सिख कवि व्रज भाषा में ही कविता किया करते थे क्योंकि वही तत्कालीन साहित्यिक भाषा थी। महाराज रणजीतसिंह के दरबार में हिन्दी कवि रहते थे। स्वयं कई गुरुओं ने हिन्दी (व्रजभाषा) में ही कविता की है। हरिऔध जी के काव्य गुरू सुमेरसिंह, जो सिख थे, व्रजभाषा के ऊंचे कवि थे। किन्तु जब हिन्दी वालों ने अपने घर में ही व्रजभाषा को अपदस्थ करके खड़ी बोली में कविता आरम्भ की, और व्रजभाषा में कविता करने का फैशन न रहा, तब सिखों ने भी उसमें कविता करना, धीरे २ बन्द कर दिया। किन्तु उन्होंने खड़ी बोली को नहीं अपनाया। उन्होंने पंजाबी में कविता करना और लिखना आरम्भ किया। भाई वीरसिंह ऐसे समर्थ कवि ने अपनी प्रतिभा से पंजाबी में गद्य और पद्य लिखकर यह प्रमाणित कर दिया कि उस बोली में साहित्यिक भाषा होने की सामर्थ्य है। साहित्यिक क्षेत्र में सिखों ने पंजाबी को अपनाया। पंजाबी हिन्दुओं ने हिन्दी को अपनाया। इस प्रकार दोनों भाषा का विलगाव हुआ। सिखों के धर्म-प्रचार, हिन्दुओं को (विशेषकर सिखों से घिरे गांवों में रहने वाले निम्न श्रेणी के हिन्दुओं को) सिख बनाने के अभियान और राजनीतिक मतभेद के कारण हिन्दुओं और सिखों में भेद की खाई बढ़ने लगी। विभाजन के बाद कुछ तत्वों ने पश्चिमी पंजाब से आये हुए सिखों को पंजाबी भाग में ही रोक कर उन्हें वहां बसा दिया, जिससे वहां उनकी संख्या और अनुपात बढ़ गया। किन्तु हिन्दू शर-

णार्थी दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि में फैल गये। पूर्वी पंजाब के पंजाबी क्षेत्र में आज स्थिति यह है कि सिखों का बहुमत है। सिख अधिकतर गांवों में, और हिन्दू अधिकतर नगरों में रहते हैं। नगरों में प्रायः हिन्दुओं का बहुमत है। हरियाणे में हिन्दुओं का स्पष्ट बहुमत है—गांवों में भी और नगरों में भी। दोनों क्षेत्रों को मिला कर हिन्दू बहुमत में हैं। यदि बहुमत के लोगों की भाषा राज्य की भाषा हो, तो वह हिन्दी ही होनी चाहिये।

सिख लोगों ने पहले सिख प्रधान प्रान्त की मांग की, किन्तु उसका घोर विरोध हुआ, और यह स्पष्ट हो गया कि उसका बनना असम्भव है। तब उन्होंने पंजाबी सूबे की ( अर्थात् पंजाबीभाषी जिलों को मिला कर एक प्रान्त बनाने की ) मांग की। यमराज ने सावित्री से कहा था कि सत्यवान के प्राण छोड़ कर और कोई वर मांगो। इस पर चतुर सावित्री ने सौ पुत्र मांगे थे। यह मांग बहुत कुछ इसी प्रकार की थी। इसके विरोध में महापंजाब आन्दोलन आरम्भ हुआ। भारत की राजनीति में अल्पसंख्यक सदैव लाभ में रहे हैं, क्योंकि बहुसंख्यकों में सदैव दो दल रहते हैं। अल्पसंख्यक बहुसंख्यकों के किसी एक दल के साथ सौदा करके उससे मिलकर उसका पलड़ा भारी करते हैं। पंजाब की राजनीति भी इसका अपवाद नहीं है। वहां की कांग्रेसमें आपसमेंफूट थी। श्री गोपीचन्द भार्गव हटे और श्री भीमसेन सच्चर प्रधान मन्त्री हुए। सिखों को तुष्ट करने के लिये उन्होंने उनसे एक समझौता किया जो सच्चर सूत्र कहलाता है। बाद में जब कांग्रेस और अकाली दल का गठबन्धन हुआ और भाषा आयोग के अनुसार नये प्रान्त बने तभी केन्द्रीय सरकार ने क्षेत्रीय सूत्र बनाया जिसके अनुसार पूर्वी पंजाब राज्य को पंजाबी और हिन्दी क्षेत्रों में बांट दिया गया। प्रस्तुत आन्दोलन का सम्बन्ध मुख्यकर सच्चर सूत्र से है। इस सूत्र के अनुसार शिक्षा का माध्यम पंजाबी क्षेत्र में पंजाबी और हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी होगी। पांचवीं कक्षा से दशवीं कक्षा तक प्रत्येक छात्र और छात्रा को पंजाबी क्षेत्र में हिन्दी और हिन्दी क्षेत्र में पंजाबी भाषा अनिवार्य रूप से पढ़नी पड़ेगी। क्षेत्रीय सूत्र के अनुसार पंजाबी क्षेत्र में सारा राज-काज पंजाबी में और हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी में होगा।

हिन्दी पूर्वी पंजाब के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है। वह भारत की राजभाषा भी है। उसका वहां विशेष स्थान होना चाहिये था, किन्तु उसे पंजाबी के समकक्ष करदिया गया है। यदि पंजाबको बम्बई की तरह द्विभाषी राज्य मान लिया जाये तो यह स्पष्ट है कि बम्बई के मराठी भाषी क्षेत्र में गुजराती या गुजराती क्षेत्र में मराठी का पढ़ना अनिवार्य नहीं है। यदि वहां उन्हें अनिवार्य किये बिना भावनात्मक एकीकरण की आशा की जाती है तो पंजाब में दो भाषाओं का पाठन अनिवार्य करने की आवश्यकता क्या है ? यह नहीं समझ में आता कि होडल, पलवल ( जो मथुरा से मिले हुए हैं ) की देहाती बालिकाओं को ( अमृतसर, पठानकोट और पटियाला से सैकड़ों मील दूर हैं ) पंजाबी भाषा जबर्दस्ती क्यों पढ़ाई जाय ? स्पष्टतः यह कुछ कट्टर सिखों को तुष्ट करने के लिये किया जा रहा है और मजा यह है कि सच्चर सूत्र पर कभी जनमत नहीं लिया गया।

पूर्वी पंजाब हमारा सीमांत प्रान्त है। उसमें गृह कलह प्रत्येक दृष्टि से अवांछनीय है। पंजाब सरकार, केन्द्रीय सरकार और कांग्रेस की सूझ-बूझ और राजनीतिक समझ की यह परीक्षा है। आर्यसमाज की मांगें सिद्धान्त रूप से आपत्ति रहित हैं किन्तु आर्यसमाज को भी यह विचार करना चाहिये कि वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति में क्या सम्भव है ? सरकार को भी राज्य के बहुमत को न ठुकराना चाहिये। हमारी समझ से प्रत्येक क्षेत्र के सरकारी स्कूलों में शिक्षा का माध्यम उस क्षेत्र की भाषा हो,

# Hindi Agitation in Punjab

*(By Swami Abhedananda, President, International Aryan League, Delhi)*

The Hindi agitation of Punjab is now in its fifth month. The Punjab Government under the leadership of Mr. Pratap Singh Kairon & the Akalis led by Master Tara Singh have all these months tried sedulously to misrepresent facts and prove that the agitation is communal in nature aimed against the Sikhs. But it must be said to the credit of the people of Punjab that they have seen clearly through the game and refused pointblank to walk into the trap laid for them. Practically all

---

किन्तु गैरसरकारी स्कूलों को माध्यम की स्वतन्त्रता हो। दूसरी भाषा केवल मिडिल क्लासों में अनिवार्य हो, किन्तु मिडिल से हाई स्कूल में जाने के लिये उसमें पास करना अनिवार्य न हो। इससे दूसरी भाषा पढ़ाने और पढ़ने के सिद्धान्त की रक्षा हो जायगी और उसके कारण छात्र-छात्राओं को जो भय है वह दूर हो जायगा। प्रत्येक क्षेत्र में राज-काज में जिले के स्तर में साधारणतः उसी क्षेत्र की भाषा का प्रयोग किया जाय, किन्तु हिन्दी का प्रयोग सर्वथा वर्जित न हो। जिले के स्तर के ऊपर सब काम हिन्दी में हो।

पंजाब सरकार के मुख्य मन्त्री श्री प्रतापसिंह कैरों हैं और उसके सब से अधिक प्रभावशाली मंत्री श्री ज्ञानी करतारसिंह हैं। दोनों ही सिख हैं। इस मन्त्री मण्डल में पंजाब का कोई प्रभावशाली हिन्दू मन्त्री नहीं है। यदि ये दोनों चाहें तो इस समस्या को सुलझा सकते हैं। ज्ञानी करतारसिंह जी तो विशेष रूप से अकालियों के विश्वास भाजन समझे जाते हैं अकाली नेता मास्टर तारासिंह जी की देश-भक्ति में किसी को सन्देह नहीं है। सिख धर्म का ऐतिहासिक कार्य सदैव धर्म और देश की रक्षा रहा है। मास्टर जी इस समय सर्वमान्य सिख नेता हैं। इस सम्बन्ध में जो काम सरकार नहीं कर सकती वे वह काम कर सकते हैं। यदि वे और स्वामी आत्मानन्द मिल सकें तो इस समस्या को सुलझा सकते हैं क्योंकि दोनों में ही सद्‌भावना है, और वे इतने महान् हैं कि देश के हित में छोटी बातों को महत्व नहीं देंगे।

आरम्भ में पूर्वी पंजाब सरकार ने अपना सन्तुलन नहीं खोया किन्तु इधर उसने दमन का रास्ता अपनाया है, सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नेताओं की गिरफ्तारियां, समाचारपत्रों पर प्रतिबन्ध, उनके बाहर से आने पर रोक, कड़े कारागार के लम्बे दण्ड और पुलिस के बार २ लाठी चार्जों के समाचारों से स्पष्ट है कि पंजाब में दमन का जोर है। इस प्रकार के दमन से भाषा का यह आन्दोलन, जिसके पीछे लाखों जनता है, नहीं दबाया जा सकता। इसके विपरीत वह उसकी अवधि बढ़ा सकता है, और राज्य में ऐसी कटुता उत्पन्न कर सकता है जिसे दूर करने में बड़ा समय लगेगा, दमन से सरकार का पक्ष ही कमजोर होगा क्योंकि उससे तटस्थ हिन्दी प्रेमियों में भी क्षोभ उत्पन्न होगा और उत्तेजना फैलेगी, और दमन की प्रतिक्रिया पंजाब के हिन्दुओं और वहां के आर्यसमाज तक सीमित न रहकर पंजाब के बाहर भी फैल जायगी। अतएव पंजाब सरकार को अपना दमन चक्र बन्द करके सन्तुलित बुद्धि से काम करना चाहिये।

(सरस्वती प्रयाग, सितम्बर ५७)

the key posts have been given to Sikh officers who try to play the Ministry's game of setting one community against another and create grounds for ruthless repression. But they have achieved very little success so far. The Ministry has however been successful to some extent in creating confusion in the minds of those who have watched the progress of the movement from a distance as casual or disinterested observers. Many people it seems have misunderstood it at all.

What is however more unfortunate is that the Punjab Government and the Akali leaders managed for a long time to keep even the Congress High Command and the Union Ministers including the Prime Minister in the dark about the real story of the Hindi agitation by supplying incorrect facts and figures;and when they knew about the exact state of affairs the situation had already deteriorated to a considerable extent and probably they found it inadvisable to ask the Punjab Government to retrace steps—probably the question of Governmental prestige stood in the way or probably the Congress leaders considered it necessary to placate the Akali leaders at any cost.

### Non-Communal

The first thing therefore that I want to emphasise here is that the Hindi agitation of Punjab is absolutely non-communal in its character. It is not aimed against the Sikhs as a community or anybody of any other community; and however the Kairon Ministry may try it cannot convert this purely cultural agitation into a communal agitation. To put it in one sentence the Hindi agitation of Punjab is an agitation launched and carried on by Arya Samaj against the wrong and anti-Hindi policy of the Punjab Government. My reason for saying that the Kairon Government can never succeed in converting it into a communal agitation is that the Sikhs in general are as much resentful of their wrong language policy as the Arya Samajists or others. Many of them have joined our movement and courted imprisonment along with other satyagrahis. Some have even led jathas of satyagrahis as jathadars and faced the consequences cheerfully.

There appears to be a misconception in the minds of people that all Sikhs of Punjab use the Gurmukhi script as a matter of religion & that they are anti-Hindi or live as a distinct and separate community having nothing to do with people of other communities. There is nothing like that.There are many Sikhs who do not use Gurmukhi in their work; many of the older generations carry on their work in the Persian script; and many have now adopted Hindi in the Devanagri script. Life is so much intermingled that in spite of all the Punjab Government's efforts and propaganda aimed at creating communal tensions no tension could be created and social relations in Punjab are as harmonious today as ever before. That is inevitable in a set-up in which Sikhs, Hindus and Arya Samajists have to depend upon one another for their very existence. There are for example innumerable

families in which two brothers one observing the tenets of the Arya Samaj and the other those of the Sikh religion are living in perfect harmony & mutual affection under the guardianship of a Sanatanist Hindu father.

The Arya Samajists the sponsors of the Hindi movement of Punjab do not consider the Sikhs culturally different from themselves and they yield to none in their respect for the memory of the great Sikh Gurus who laid down their precious lives for the protection of the Hindu religion and they have never failed to pay homage to their memory even in open conferences whenever there has been an occasion for it.Not to speak of Sikhs it may be news to many that our agitation is so non-communal in nature that even Muslims have been supporting it and a number of them recently accompanied indore jatha and courted arrest. Their stand is purely on the ground of Hindi being the national language of India whose cause must not be allowed to be damaged by the anti-national policy of the present Punjab Ministry

## Non Political

It has often been propagated through the press and other media that the agitation has a political complexion and that the Jan Sangh Ram Rajya Parishad, Hindu Sabha and other political bodies also have joined it for political ends. Nothing can be farther from truth. It is of-course a fact that we have got the active sympathy and cooperation of people who are members of some political organisations. But we have nothing to do with their political affiliations or faith. They have all joined us in their individual capacities and they all march under the common 'Om'flag of the Arya Samaj to offer satyagraha and court arrest. I need not say here that quite a large number of Congressmen also have cast their lot with us in this agitation, they have certainly not joined us because they are Congressmen but because they dislike the anti-Hindi policy of the Punjab Government and are anxious to see it ended as soon as possible. And it must not be forgotten that theyhave joined the movement despite the Congress mandate issued in the early stages of the movement asking Congressmen to keep aloof from it.

## Genesis of the trouble

I have often been asked why the Arya Samaj did not consider it necessary to start the agitation all these seven or eight years. Many obviously do not know the genesis and development of the present struggle. The agitation has always been there though not in the present form.The Punjab Hindi Raksha Samiti with the 84 years old Swami Atmanandji Maharaj as its president has all along been carrying on the ceaseless struggle for the protection of the interests of Hindi against the Governmental onslaughts with the active and whole-hearted co-operation of the college and Gurukul sections of the Punjab Arya Samaj.The agitation was in the shape of correspondence carried on with the authorities and sending of sadbhavana

yatra ( good-will mission ) to impress upon the authorities the harmful effects of their wrong policy with regard to Hindi.

### How it developed

Matters came to a head when the Congress as a body aligned itself with the Punjab Ministry and Mr. Sriman Narayan issued a statement criticising the 'sadbhavana' agitation of the Arya Samaj. Evidently, Mr. Sriman Narayan issued his statement without understanding things and later, other members of the Congress also began to echo his voice, attacking the Arya Samaj and supporting the Punjab Ministry. It was then that the Punjab Hindi Raksha Samiti felt compelled to widen the scope of its agitation and place the matter in the hands of the International Aryan League ( Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha ).

A committee, known as the Bhasha Swatantiya Samiti was formed under the auspices of the International Aryan League, composed of 17 members, all of whom are Arya Samajists. Only one of the 17 members, namely, Acharya Ram Deva can be said to be a member of the Jan Sangh. But that he is only politically,and as I have said above, we have nothing to do with his politics. He is an old and tried Arya Samajist and he is a member of the Samiti as such, and not as a Jan Sanghi. This gives the lie direct to the propaganda that the agitation is of a political character carried on by the Hindu Sabha, Jan Sangh, Ram Rajya Parishad and others.

I may also casually mention here that the President of the Bhasha. Swatantrya Samiti, Shri Ghanshyam Singh Gupta, is one of the most trusted leaders of the Congress and an ex-Speaker of the C. P. Assembly. His very association with the movement is a proof positive of the fact that it has nothing to do with the politics of the Hindu Sabha or the Jan Sangh.

### Fight To Continue

My countrymen may feel proud to know that the agitation is being carried on on a very high level. It has no place in it not only for politics, but also for casteism, communalism, provincialism or racial theories, which are proving a curse for the country. It has now attracted the attention of people all over India and of people even out side India, Jathas of Satyagrahis have been coming to Punjab from every part of the country, even from the extreme south, and Hindi Raksha Samitis on district levels have been formed under the auspices of the Arya Samaj not only in India but in South Africa, Singapur and some other countries also.

The Arya Samaj is prepared to continue the fight as long as it is necessary to change the heart of the Punjab Government and to make them realise the impropriety of their stand on the Hiudi issue. The sponsors of the agitation met, on September 22 at Ghaziabad, delegates of the Arya Samaj from all over India in order to review the position and have a free and

frank exchange of views. It may be noted that the line of action adopted and followed by the Sarvadeshik Arya Pratinidhi was unanimously approved and men and money to carry on the movement to a successful end were liberally promised.

**Repression**

The Punjab Government, possibly under the impression that repression would finish the movement in no time, virtually let loose a hell on the satyagrahis. That hell is still continuing. and in some parts of Punjab, such as the Hariana districts there is complete lawlessness—police raj and terrorisation of the worst form. Satyagrahis are mercilessly assaulted without the slightest provocation and some time even fellow satyagrahis are prevented from going to the help of those who are beaten and rendered unconscious.

Two satyagrahis have already been killed. The death of a satyagrahi in the Ferozepur Central Jail was nothing less than a pre-arranged coldblooded murder. My information, verified from reliable sources, is that old and hardened criminals, undergoing terms of imprisonment in the jail were let loose to assault satyagrahis taken there after arrest, and one satyagrahi (Sumer Singh) was assaulted so cruelly by these criminals that he died instantaneously. Similar blood-curdling stories have come to light from Rohtak, Bahu Akbarpur etc., which would make any, civilised Government feel ashamed of themselves.

Some internment orders, passed by the Punjab Government, were recently declared illegal by the Supreme Court. The internees had to be released, but they were soon arrested on the strength of warrants issued under some sections of the Indian Penal Code. In short, the Punjab Government have been stooping down to any level to break the morale of the satyagrahis and crush the movement. But, unfortunately for them, the movement has been gathering strength in direct proportion to the intensification of repressive measures, and the Punjab Government seem to be unnerved at the sight of the never-ending stream of satyagrahis pouring into Punjab.

**No False Sense Of Prestige**

It must not however be understood that the Arya Samaj is standing on any false sense of prestige. It has always expressed its readiness to come to a settlement. Whenever they have got an opportunity the leaders of the Arya Samaj have seen Pandit Nehru, Pandit Pant, Maulana Azad and other members of the Congress High Command and explained things to them. They have understood the justice of our cause and promised their help in the finding of a satisfactory solution; but then nothing happens as a result of the talks and the position is left to deteriorate.

The Punjab Governor Mr. C.P.N. Singh also recently called a conference of Hindi Raksha Samiti leaders and Government representatives in order to explore the possibilities of a peaceful settlement, but unfortuna-

tely nothing came out of his laudable efforts due to the intransigence of the Government representatives.

Not that the Punjab Government themselves do not realise that they are following a wrong policy; but they are following it deliberately probably in the belief that they would be successful in misleading or hoodwinking the people of India for all time.

## Sikhland

One reason for forcing the Punjabi language and the Gurmukhi script down the throats of those students whose mother tongue is Hindi seems to be this. The Akali leaders of Punjab have been shouting hoarse for a Punjabi Suba or Sikhistan ever since India became independent. The Akalli dominated Government want to make Punjabi and Gurmukhi compulsory only with a view to intensifying the demand for a Sikhland which they fear will vanish into the thin air as soon as the compulsion is removed and Punjabi and Gurmukhi lose their importance.

What the Arya Samaj says is that the demand for a Sikhland itself is spurious more a pawn in the political gamble of some Akali Sikhs led by Master Tara Singh than any thing genuine—and if at all there be any substance in it it should stand on its own legs and not on the ruins of Hindi or on the basis of compulsion exercised in the teaching of Gurmukhi and Punjabi.

## M. Ps' Appeal

One hundred and fifty M. Ps. mostly Congressmen recently issued a joint statement appealing to the Arya Samaj to withdraw the agitation. I am happy to note that the attention of the good and great men have been drawn to the situation obtaining in Punjab. But their appeal reminds me of the role sometimes played by those peace-makers who in their anxiety to stop fighting between two people catch hold of the weaker man and say: 'Don't fight don't fight' and thus make him incapable of even defending himself against the increased administration of blows by the stronger man. I fail to understand why the M. Ps. did not consider it necessary to appeal to the Kairon Ministry to give up its anti-Hindi policy and not to make Gurmukhi and Punjabi compulsory for those who do not want to learn them. A suitable reply to the M. Ps. appeal has already been sent by Mr. Ghanshyam Singh. Gupta President of the Bhasha Swatantrya Samiti and that I think will fully satisfy them.

## Another Appeal

A similar appeal has been issued by a number of literary persons. Their argument is that they being literary persons they alone are capable for dealing with questions of language and script. This is amazing argument. The question involved here is not primarily of a linguistic character in the sense that it concerns the improvement or development of Hindi or the reform of the Devanagari script. It is one of the antinational policy of the Punjab Government which is calculated to harm

the cause of Hindi the national language of India and in the opinion of the Arya Samaj every citizen of India has the inalienable right of opposing such a policy and forcing the Punjab Government to see reason.

I am pained to note that the M. Ps. and the literary people should have issued appeals that are not likely to be helpful in the solution of the problem. If at all they will only strengthen the hands of the Punjab Government in following their anti-Hindi policy and their policy of repression. It is always easy to issue appeals and statements that involve no strain or commmitment and are as a matter of fact likely to put the signatories to the appeals in the good books of the powers that be particularly the Prime Minister. But that is not the Gandhian way of doing things and speaking frankly. The gentlemen issuing the appeals ought, to have taken some trouble. They should have visited the places where a reign of terror has been set up. They should have tried to study things at first hand and understand the whole set-up of the agitation negotiated with the Punjab Government and made efforts to bring about a settlement. And then alone their appeals could have carried the due weight.

Anyway the Arya Samaj has given the appeals the importance they deserve and examined them carefully and critically but unfortunately found them incapable of meeting the requirements of the situation. The old octogenarian saints and Sannyasis of the Arya Samaj the intellectual giants the self-effacing well wishers of humanity who have been carrying on the struggle are not certainly irresponsible urchins who do not understand the implications of what they are about. They have kept the doors open for negotiations and they are always prepared to come to terms that are in the best interests of the country; but under no condition will they compromise on the anti-Hindi policy of the Punjab Government. They will carry on the struggle as long as the Punjab Govt. do not meet the simple demand of the Arya Samaj to give Hindi its due place in the Punjab and remove the compulsion on the learning of Gurmukhi and Punjabi by Hindi-speaking students.

### Hope not Given up

The Arya Samaj has not given up hope. It is our belief that the Punjab Government will ultimately see their mistake and abandon their wrong policy. Dr. Gopichand Bhargava's recent efforts for a compromise we feel may be helpful in the termination of the satyagraha. The assurances given to Anand Bhikshu and Balak Ram Brahmachari that immediate inquiries will be made in their allegations about the desecration of Yajna-shalas of the Arya Samaj at Chandigarh and Rohtak have brought about the happy termination of the long fast under taken by them and this has certainly been a source of satisfaction for the Arya Samaj and I

(Contd. on page 537)

# हमारी दृष्टि में
## ( पंजाब के एक राजनीतिज्ञ की समीक्षा )

(ले०—श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, काव्य-व्याकरणतीर्थ, मन्त्री दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी रक्षा समिति)

हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र के ९-१०-५७ के ८ वें पृष्ठ पर हिन्दी पंजाबी विवाद स्तम्भ में "हिन्दी रक्षा आन्दोलन अराष्ट्रीय है" इस शीर्षक से पंजाब के एक राजनीतिक प्रेक्षक द्वारा लिखा गया लेख छपा है। लेख पढ़ने पर यह निश्चय हुआ कि यह अनर्गल प्रलाप मात्र है। लेख का उत्तर इस दृष्टि से नहीं दिया जा रहा कि वह बहुत प्रभावशाली है और उसके विचारों से प्रभावित होकर जनता के भटक जाने की सम्भावना है, अपितु क्योंकि वह हिन्दुस्तान में छपा है इसलिए सम्भवतः लोग लेख का एक विशेष स्तर समझें और उसे गम्भीरता से समझने में अपना समय नष्ट करें। सम्भवतः अपनी यह दुर्बलता लेखक को स्वयं भी खटक रही प्रतीत होती है इसीलिए उसने अपना नाम छिपाया है। अस्तु, लेख में आरम्भ से अन्त तक आर्यसमाज का पक्ष ईमानदारी से नहीं रखा गया इसी से ज्ञात होता है कि लेखक या तो आर्यसमाज की मान्यताओं से अपरिचित है अथवा जान-बूझ कर किन्हीं विशेष कारणों से यह लिखा अथवा लिखवाया गया है। अब कृपया लेखक महाशय के तर्कों पर एक दृष्टि डालिये। लेखक प्रारम्भ में ही लिखता है :—

"पंजाब में झगड़ा हिन्दी व पंजाबी का नहीं जितना इस बात का है कि राष्ट्रभाषा और प्रादेशिक भाषा का परस्पर क्या सम्बन्ध होना चाहिये? क्या इस बात की आज्ञा दी जा सकती है कि एक विशिष्ट राज्य में उस राज्य की भाषा की पढ़ाई पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया जाये·········विशेषकर उस स्थिति में जब कि प्रादेशिक भाषा पर प्रतिबन्ध राष्ट्रभाषा के समर्थकों द्वारा लगाये जा रहे हों, वास्तव में पंजाब में पंजाबी पर प्रतिबन्ध लगाने का यत्न किया जा रहा है, हिन्दी पर तो प्रतिबन्ध का कोई प्रश्न पैदा ही नहीं होता।"

ऊपर की पंक्तियों से स्पष्ट है कि लेखक ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन के विषय में कुछ भी जानकारी प्राप्त नहीं की। आन्दोलन की सात मांगों में से एक मांग भी ऐसी नहीं है जिससे पंजाबी के प्रचलन और विकास पर थोड़ी सी भी आंच आती हो, राष्ट्रभाषा का प्रादेशिक भाषा के साथ वही सम्बन्ध है जो आकाश में चन्द्रमा और तारों का। राष्ट्रभाषा चन्द्रमा के समान है जिसका प्रभाव राष्ट्र के समस्त क्षेत्रों पर अबाध रूप से है। तारों के प्रभाव को सुरक्षित रखता हुआ चन्द्रमा अपने प्रभाव को सर्वोपरि रखता है यह उसकी विशेषता है। ठीक इसी प्रकार से राष्ट्रभाषा की गति समूचे राष्ट्र में बेरोक टोक होनी चाहिये। कोई तारा ही चन्द्रमा को अकड़ के कहने लग जावे कि आकाश के इस भाग में मैं तुझे पैर न रखने दूंगा—यह कितना अनुचित होगा। पंजाब में यही कुछ हो रहा है। पंजाब की तथाकथित प्रादेशिक भाषा राष्ट्रभाषा को हेकड़ी दिखा कर कह रही है कि नीचे से लेकर जिला के स्तर तक मैं तुझे कहीं फटकने न दूंगी। अब बताया जावे कि हम पंजाबी पर प्रतिबन्ध लगवा रहे हैं या राष्ट्रभाषा की पंगुता को दूर करने के लिये नारायणी तैल की मालिश कर रहे हैं। हमें पंजाबी के प्रचलन पर कोई आपत्ति नहीं। आपत्ति केवल राष्ट्रभाषा के गतिरोध पर है और यह बात तो बहुत ही बेतुकी है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने से कोई हानि नहीं पहुँच सकती। इसमें सकने की क्या बात है? राष्ट्रभाषा की छीछालेदार इस समय ही पंजाब में देख लीजिये। ८० प्रतिशत जलंधर डिवीजन के प्राइमरी स्कूलों के हिन्दी अध्यापक पृथक् करके उनके स्थान पर पंजाबी के अध्यापक रख दिये गये हैं। राज-काज में नीचे से जिले तक हिन्दी को कोई पूछता ही नहीं और ये राजनीतिज्ञ महाराज दड़ांग हांक रहे हैं कि हिन्दी को कोई

हानि नहीं पहुँचा सका।

आगे आप लिखते हैं :—

"जब प्रान्तों में पुनर्गठन का प्रश्न उठा तो दुर्भाग्य की बात है कि पंजाबी के समर्थन का सारा दायित्व पंजाब के सिखों के कन्धों पर पड़ा। यद्यपि निर्विवाद रूप से पंजाब के हिन्दुओं की भी वही मातृभाषा है।"

हमारी समझ में नहीं आता कि ये पंक्तियां लेखक ने अपने पक्ष की पुष्टि में लिखी हैं अथवा विरोध में—इन पंक्तियों का स्पष्ट अर्थ यह है कि पंजाब के हिन्दुओं ने पंजाबी को बोली के रूप में तो प्रयोग किया है भाषा के रूप में नहीं, लेखन और पठन के रूप में पंजाबी थोड़ी बहुत रही है तो सिखों की ही भाषा रही है हिन्दुओं की नहीं। इसीलिये यह दायित्व सिखों पर आया। फिर मातृभाषा को डण्डे से नहीं मनवाया जाता। उसके लिये लोगों के हृदय में बड़ी ममता होती है। किन्तु एक मातृभाषा पंजाब में है जिसे डण्डे के बल पर मनवाया जा रहा है। क्या विचित्र स्थिति है।

पुनः आप लिखते हैं :—

"इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दी रक्षा का नारा लगा कर पंजाबी को हिन्दू घरों से बहिष्कृत कर दिया जावे। इसी लिये तो यह नारा लगातार जारी है कि पंजाबी क्षेत्र में जो हिन्दी भाषी व्यक्ति हैं उन पर भी पंजाबी पढ़ने का कोई प्रतिबन्ध न हो।' अब जरा सोचिये सवाल क्या बना? स्पष्ट बात यह रही कि आर्यसमाज पंजाबी हिन्दुओं और पंजाबी सिखों को दो भिन्न सांस्कृतिक वर्गों में बटा मानता है और इसीलिये हिन्दुओं की मातृभाषा पंजाबी को न मान कर हिन्दी को मानता है।"

यह आरोप भी बिना सोचे समझे आर्यसमाज पर लगाया जा रहा है। हमने कभी नहीं कहा कि कोई हिन्दू पंजाबी न पढ़े। हम तो कहते हैं कि जो पढ़ना चाहे—वह कोई भी क्यों न हो उसे पढ़ाइये, किन्तु जो जिस भाषा को नहीं पढ़ना चाहता उसे बलपूर्वक मत पढ़ाइये। किसी भी भाषा को बलपूर्वक पढ़ाने का क्या मतलब? हिन्दुओं और सिखों को भिन्न सांस्कृतिक वर्गों में बटा हुआ आर्यसमाज तो नहीं मानता, हां आपके विधाता मा० तारासिंह जी रात दिन यही दुहाई देते फिरते हैं। सिखों के हिन्दू बनने का भी डर श्री मास्टर जी को ही है आर्य समाज को नहीं।

लेख की एक ही विशेष बात और उत्तरणीय है जिसे लेखक ने राम बाण समझ कर लिखा है। आप लिखते हैं अब यह आन्दोलन आर्यसमाज का न होकर जनसंघ का है······बाहर से कुछेक जनसंघी आ जावें तो क्या इससे बाहर के राज्यों में हिन्दी आन्दोलन का समर्थन होगा।"

सुनिये राजनीतिज्ञ जी महाराज आन्दोलन के सूत्रधार यथा पूर्व आर्य समाज के नेता ही हैं। आपको कहां से इलहाम हो रहा है कि आन्दोलन जनसंघ के हाथों में आ गया है, क्या घनश्यामसिंह जी गुप्त ने नेतृत्व छोड़ दिया है? बाहर से आने वाले नेता भी आर्यसमाज के तथा कांग्रेस के ही हैं, हां, उन्होंने आपके समान आत्मा को बेच नहीं डाला है। श्री पं० शेषराव जी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद भूतपूर्व कांग्रेसी एम० एल० ए०, श्री जगदीशचन्द्र जी हिमकर सम्पादक जागृति बंगाल, कर्मवीर श्री पं० जियालाल जी राजस्थान, श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी—क्या ये सब जनसंघी हैं? धन्य हो महाराज! न जाने आप किस बिल में रहते हैं जिन्हें इतना भी परिज्ञान नहीं। भली प्रकार समझ लीजिये अब यह आन्दोलन सफल होकर ही रहेगा।

फूंकों से यह पहाड़ उड़ाया न जायगा।

## —: स्वामी आत्मानन्द जी :—

( रचयिता—भारतभूषण त्यागी, एम० ए०, साहित्यरत्न, सिद्धान्तशास्त्री,
प्रचारमन्त्री मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश लश्कर )

[ १ ]

हिन्दी का हित तुझको है, तू ऋषि का अनुयायी है,
तूफानों में बढ़ने की क्षमता तूने पाई है।
अंगारों से भी हंस कर, तू खेला बलिदानी,
जीवित शहीद होने की—तेरी है करुण कहानी ॥

[ २ ]

सर्वोच्च शक्ति को तूने निर्भय हो ललकारा है,
सत्ता मदान्ध से टक्कर लेने का व्रत धारा है।
सद्भाव—यात्रा तेरी जो बिन्दु रूप में आई,
जनता का महा सिन्धु बन, भारत भर में लहराई ॥

[ ३ ]

प्रतिकूल परिस्थितियों का ऐसा प्रवाह बहा है,
खुद नाविक ही घबरा कर नौका को डुबो रहा है।
चौरासी की आयु में तूने उसको समझाया,
लाचारी में चप्पू ले नौका को स्वयं चलाया ॥
ओ कर्णधार ! मत घबरा, सब ने सङ्कल्प किया है,
अब कोटि-कोटि हाथों ने बल्ले को थाम लिया ॥

[ ४ ]

बीमारी को पीछे कर तू आगे बढ़ता जाता,
हा रक्तचाप के क्रम में प्राणों को होम चढ़ाता।
कृशता से लड़कर-भिड़कर ऋषि-थाती तुझे बचानी,
कमजोरी क्या कर लेगी—आत्मिक बल के सेनानी ॥

# हम अवश्य विजयी होंगे

( श्री पण्डित नरेन्द्र जी—कार्यकर्ता प्रधान, सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति )

आर्य समाज मानव जाति के लिये सांस्कृतिक प्रकाश स्तम्भ है। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस प्रकार समस्त संसार की व्यथा और करुणा के लिये आर्य समाज सदैव आशा का केन्द्र बना रहता है। अज्ञान, अन्याय और अभाव के प्रति निरन्तर संघर्ष करना ही आर्य समाज का इतिहास है। अपने इसी सांस्कृतिक महत्व को दृष्टि में रखते हुये पिछले ८२ वर्षों से आर्य समाज ने राष्ट्र और धर्म की रक्षार्थ सदैव पथ-प्रदर्शन किया है और उसे सदैव उल्लेखनीय सफलतायें प्राप्त होती रही हैं। आज भी आर्य समाज एक अग्नि परीक्षा में से गुजर रहा है। उस अग्नि परीक्षा में सफलता के लिये हमें क्या करना है आज इसी पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये।

भारत-विभाजन की दु:ख जनक कहानी अभी हम सब के हृदयों में ताजी है पर देश की साम्प्रदायिक तथा भाषायी मनोवृत्तियों ने देश को पुन: अपने आधारों पर विभक्त करने के लिये निरन्तर जोरदार प्रयत्न किये हैं। अन्य प्रदेशों में तो समस्या अधिकांशत: भाषायी आधार पर प्रकट हुई परन्तु पंजाब में समस्या भाषा और सम्प्रदाय के आधार पर पिछले दस वर्षों से विकसित होती रही है।

भारत के सीमान्त राज्य होने के कारण पंजाब की समस्या को एक विशेष महत्व प्रदान किया जाता है। आर्य समाज भी पंजाब के महत्व को अनुभव करता है। पंजाब के महत्व को दृष्टि में रखते हुये आर्य समाज ने अपना आन्दोलन आरम्भ करने से पूर्व सभी सम्भव और शान्ति पूर्ण उपायों का अवलम्बन लिया परन्तु आर्य समाज के प्रयत्नों को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता रहा और आज पंजाब में आर्य समाज अपनी परीक्षा में जुटा हुआ है।

संक्षेप में आन्दोलन के सैद्धान्तिक पक्ष की चर्चा कर देना चाहता हूं। आर्य समाज की सात मांगें हैं जिनमें से दो की ही समीक्षा करें तो पता चल जायगा कि आर्य समाज का पक्ष कितना न्याय संगत है।

हमारी एक मांग है कि सम्पूर्ण राज्य में एक भाषा नीति अपनाई जानी चाहिये।" राष्ट्रीय एकता तथा राज्यों की एकता का समर्थन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति हमारी इस मांग का समर्थन करता है और करेगा। एक ही राज्य में पंजाबी और हिन्दी क्षेत्रों का विभाजन तथा पेप्सू का एकमात्र पंजाबी क्षेत्र इस प्रकार तीन २ प्रकार से जब भाषा की शिक्षा व्यवस्था की जाती हो तब राज्य के निवासियों के हृदयों में किस प्रकार एकता की भावना उत्पन्न हो सकती है। जब सरकार ही पृथक्करण की नीति का समर्थन करती है तब मतों में एकता कैसे बढ़ सकती है? जो लोग आर्य समाज की इस मांग का विरोध करते हैं उनका कहना है कि इस पद्धति से सभी मतों के ( अल्प संख्यकों के और बहुसंख्यकों के ) हितों की रक्षा हो जाती है। आर्य समाज अल्पसंख्यकों के हितों का आदर करता है परन्तु उनके लिये बहुसंख्यकों के हितों के बलिदान किये जाने का समर्थन नहीं कर सकता। अब हम राष्ट्रीय एकता का नारा लगाने वालों से पूछना चाहते हैं कि आर्य समाज एकता चाहता है तब उसका यह विरोध क्यों?

आर्य समाज की दूसरी मांग भी कितनी न्यायपूर्ण और मौलिक अधिकारों के सिद्धान्तों पर आधा-

रित है। हमारी मांग है कि स्कूलों में कौन बालक कौन सी भाषा पढ़े इसका निर्णय शिक्षाधिकारी न करें माता पिताओं को अधिकार होना चाहिये कि वे अपने बालकों को जो भाषा पढ़ाना चाहें वही उनके बच्चों को पढ़ाई जाय।

आज के स्वतन्त्रता प्रिय युग में पता नहीं हमारे प्रधान मन्त्री मौलिक अधिकारों की रक्षक इस मांग को स्वीकार करने में क्यों हिचकिचा रहे हैं। यही नहीं, आश्चर्य तो तब होता है कि जब वे और भी आगे बढ़ कर अनिवार्यता का समर्थन करते हैं कि बालक क्यों नहीं पढ़ सकते? इसके सम्बन्ध में आर्य समाज की स्थिति स्पष्ट है कि आर्य समाज किसी को किसी भाषा को पढ़ने से नहीं रोकता पर अनिवार्यता का प्रबल विरोधी है।

एक भाषा नीति और अध्ययन में अनिवार्यता का विरोध इन मौलिक और महत्वपूर्ण मांगों के पीछे एक पवित्र भावना विद्यमान है। आर्य समाज दूसरी राजनैतिक पार्टियों की भांति रोटी, कपड़ा, और मकान के लिये आन्दोलन कर सरकार के कार्यों में बाधक बनने की भावना में विश्वास नहीं रखता परन्तु किसी के भी सांस्कृतिक अधिकारों का हनन किया जाना वह कदापि सहन नहीं कर सकता। आज पंजाब में अल्प संख्यक सम्प्रदाय को अपना राजनैतिक सहयोगी बनाये रखने के लिये सरकारी दल जिस तुष्टिकरण की नीति का अवलम्बन कर रहा है वह देश के लिये हानि पहुंचाने वाली ही होगी।

आर्य समाज का पक्ष जितना स्पष्ट और प्रबल है उतना ही दूसरों के पास सत्ता का प्राबल्य है। अपनी सत्ता की सुरक्षा के लिये आज आर्य समाज के ऊपर अनेकों प्रकार के दोषारोपण किये जा रहे हैं। कभी उसे साम्प्रदायिक, कभी उसे अवसरवादी और कभी उसे समय को न पहिचानने वाला आदि कह कर बदनाम किया जाता है परन्तु इन सबका एक ही समाधान है कि आर्य समाज ने सब बातों का आगा पीछा विचार करके ही अपना कदम उठाया है कोई शीघ्रता नहीं की है। अपनी मांगों के लिये एक वर्ष से अधिक समय तक सरकार के दरवाजे खटखटाकर जब सब प्रकार से निराश होना पड़ा तब यह वर्तमान प्रक्रिया आरम्भ हुई है। एक विशाल जनसंख्या के हितों की रक्षा करना यदि सम्प्रदायवाद है तो प्रजातन्त्र में बहुमत का कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता है। बहुमत अपने अधिकारों के लिये परेशान हो इससे बढ़ कर प्रजातन्त्र का और अधिक उपहास क्या हो सकता है? ७० प्रतिशत बहुसंख्यक में रहते हुये भी हिन्दुओं को अपनी भाषा के लिये संघर्ष करना पड़े और वह भाषा भारत की राष्ट्र भाषा हो तब तो यह विश्व इतिहास की अनोखी घटना होगी।

आन्दोलन की इस सैद्धान्तिक समीक्षा की अधिक चर्चा का अब समय नहीं है। अब तो संघर्ष छिड़ चुका है और उसकी सफलता ही इस समय हमारा एक मात्र लक्ष्य है। आज देश के कौने २ से आर्यवीरों के जत्थे सत्याग्रह के लिये निकल पड़े हैं। इस समय तक १७००० (सत्रह हजार) व्यक्ति इस आन्दोलन में भाग ले चुके हैं और ७ (सात) हजार से अधिक पंजाब सरकार की जेलों में हैं। मैं देहली में बैठा हुआ राष्ट्र भर के आर्यो के आने वाले जत्थों को देख कर उछल उठता हूं। मेरा हृदय उमंगों और उत्साह से पूर्ण है और मुझे विजय की पूर्ण आशा है। मैं दीपावली के इस अवसर पर अपने आर्य भाइयों को उनके उत्साह के लिये बधाई देना चाहता हूं और जोरदार शब्दों में अपील करूंगा कि इस समय अपनी सारी शक्ति इस आन्दोलन की सफलता के लिये लगा दें। स्मरण रखिये वेद का यह मन्त्र "कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः" हमें कर्तव्य के लिये पुकार रहा है।

# * राष्ट्र-भाषा हिन्दी *

(रचयिता—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार,
एम. ए. एल. टी, डी-लिट्, अजमेर)

[ १ ]

राष्ट्रभाषा राष्ट्र का आज्वल्य जीवन प्राण है।
राष्ट्रभाषा राष्ट्र के कल्प का सन्त्राण है॥
राष्ट्रभाषा से सदा ही राष्ट्र का कल्याण है।
राष्ट्रभाषा-रहित सारा राष्ट्र ही म्रियमाण है॥

[ २ ]

राष्ट्रभाषा ही बने नित राष्ट्र हित सञ्जीवनी।
सङ्गठन के सूत्र में बांधे जनों की जीवनी॥
मृतक तन प्राण फूँके शक्ति की स्रोतस्विनी।
राष्ट्र गौरव को प्रगति दे तीव्रतर तेजस्विनी॥

[ ३ ]

राष्ट्रभाषा है हमारी आर्यभाषा श्रेष्ठतम।
"हिन्दवी" ही हिन्द की हारोपमम् हीरोपमम्॥
उसके लिये संघर्ष में हरदम बढ़े आगे कदम।
अन्याय के आगे कहीं झुकना कभी सीखे न हम॥

[ ४ ]

शब्द-सरिता बह रही जिसमें शतद्रू-सागरी।
सर्व-स्वर-व्यंजन-विभूषित अमित अभिनव आगरी॥
ज्ञान-गुण-गर्भित सुगौरव-वारि-गरिमा-गागरी।
शक्ति किसकी है कि जो हम से छुड़ाये नागरी?॥

[ ५ ]

राष्ट्रभाषा की विजय हो, राष्ट्र-ध्वज का मान हो।
विश्व में गूंजे हमारा राष्ट्र "जन मन" गान हो॥
आर्य संस्कृति का सदा संसार में सम्मान हो।
कीर्तिमय बन कर चमकता राष्ट्र "सूर्य" समान हो॥

# * विविध वक्तव्य *

## श्रीयुत ढेवर भाई के आरोप असंगत हैं

दिनांक ६-१०-५७ के टाइम्स आफ इण्डिया में कांग्रेस अध्यक्ष श्री ढेवर भाई के अहमदाबाद के भाषण की रिपोर्ट छपी है। उन्होंने कहा बताते हैं कि पंजाब का हिन्दी आन्दोलन हेय और बच्चों जैसा कार्य है। मैं नहीं जानता कि यह रिपोर्ट सही है या गलत। परन्तु मुझे इस बात का दुःख है कि कांग्रेस के अत्यन्त सम्मानित और उच्चकोटि के लोग युक्ति के स्थान में गालियों पर उतर आये हैं। इन गालियों का अन्ध भक्तों पर भले ही प्रभाव पड़ जाय या लोग इनसे आतंकित हो जायं। परन्तु समझदार लोगों को प्रभावित करने के लिए ये गालियां प्रबल तर्क का स्थान नहीं ले सकतीं। अतः मैं उनके तथा निष्पक्ष व्यक्तियों के विचार के लिए कुछ ठोस सत्य प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

पंजाब द्विभाषी राज्य है जिसके दो क्षेत्र पंजाबी और हिन्दी निर्धारित किये गये हैं। हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी भाषा भाषियों की संख्या लगभग ६५ प्रतिशत और पंजाबी भाषा भाषियों की संख्या ५ प्रतिशत है। पंजाबी क्षेत्र में पंजाबी भाषा भाषियों की संख्या लगभग ५६ प्रतिशत और हिन्दी भाषा भाषियों की संख्या लगभग ४४ प्रतिशत है। हिन्दी क्षेत्र में अनिच्छुक लोगों के गले के नीचे पंजाबी को उतारने के लिये जिस बाध्यता का आश्रय लिया जा रहा है उसका उदाहरण भारत में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। यह बाध्यता कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के ५ अगस्त १६४६ के निश्चय, शिक्षा मन्त्रियों की कान्फ्रेन्स के निर्णय तथा सेन्ट्रल शिक्षा विभाग के ऐडवाइजरी बोर्ड की भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सिफारिश के विरुद्ध है। मेरी सूचना यह है कि कतिपय दलीय तुच्छ उद्देश्यों और देश हित विरोधिनी साम्प्रदायिक मांगों की पूर्ति के लिए यह विचित्र ढंग अपनाया गया है। जिस योजना से भाषायी पागलपन की उत्पत्ति हुई हो उसके विरुद्ध चलाये गये आन्दोलन को हेय और बचपना बताना समझ में आने वाली बात नहीं है। मेरा विश्वास है कि ढेवर भाई को यह पता है कि पंजाब सरकार ने बम्बई राज्य सरकार से (वह भी द्विभाषी राज्य

(Contd. from page 530)

have no doubt that truth will win in the end.

The present agitation of the Arya Samaj is certainly different from those launched in the past at Hyderabad, Karachi, Bahawalpur & Patiala in so far as it is a satyagraha against our own Govt. that we are perfectly aware of the techniques of satyagraha given to them by the Father of the Nation and we are sure that our cause being just and sacred victory too will be ours today or tomorrow. In the mean time I appeal to all those who sincerely feel for the cause of Hindi the national language of India to help the Arya Samaj with men and material so that it may lead the movement which may be a prolonged one to a happy and successful close. I thank all those who have been standing by us through the months that have already passed. Om Shanti.

है ) वह योजना मांगी थी जिसका अनुसरण वह अपनी मराठी और गुजराती इन दो भाषाओं के सम्बन्ध में कर रही है। बम्बई की सरकार ने पंजाब सरकार को जो उत्तर भेजा है वह उस योजना के सर्वथा विरुद्ध है जिसे पंजाब सरकार पंजाब में व्यवहृत करना चाहती है। मैं चाहूँगा कि कांग्रेस अध्यक्ष बम्बई राज्य के गांवों के स्कूल के प्रत्येक छात्र को जबरदस्ती चौथी क्लास से गुजराती और प्रत्येक गुजराती छात्र को मराठी भाषा पढ़ने के प्रयोग को आजमायें।

मैं उनकी इस अपील का हृदय से समर्थन करता हूँ कि हमें राष्ट्र हित को सामुदायिक हितों से ऊपर रखना चाहिये। फिर भी मैं विनम्रता पूर्वक यह कहूँगा कि इसके लिए पंजाब की भाषायी योजना को समाप्त करें।

घनश्यामसिंह गुप्त

## हिन्दी आन्दोलन सर्वथा राष्ट्रीय

इन्दौर पत्रकार सम्मेलन में पंजाब हिन्दी रक्षा समिति एवं भाषा स्वातन्त्र्य समिति के सदस्य तथा पंजाब प्रदेश जनसंघ के मन्त्री श्री वीर यज्ञदत्त शर्मा ने निम्नलिखित वक्तव्य दिया है :—

पंजाब के भाषा सम्बन्धी प्रश्न को समस्या का रूप देने की जिम्मेदारी साधारणतः प्रदेश व विशेष रूप से केन्द्र सरकार पर है। सरकार ने पंजाब की स्थिति से राष्ट्रीय एकता की सत्ता-लोलुपता पर बलि देकर निज स्वार्थ साधना की। आज यह आरोप हम पर लगाया जाता है कि हमारा आन्दोलन राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है।

हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा तथा पंजाब प्रदेश की प्रादेशिक भाषा है। अतः उसके लिये राज्य की वर्तमान भाषा-व्यवस्था में कुछ सुविधायें प्राप्त करना साम्प्रदायिकता नहीं। हां राष्ट्रभाषा जो कि राष्ट्रीयता अथवा एकता की परिचायिका है उसके लिए शासन व शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण सुविधायें न देना अवश्य अराष्ट्रीयता है। राष्ट्रीय तत्वों को इस राष्ट्रीय मार्ग में किसी पंथ विशेष का बाधक मान कर उसे मान्यता न देना तथा राष्ट्रीय मांगों को ठुकरा देना अति घृणित प्रकार की साम्प्रदायिकता है।

हमारा आन्दोलन किसी सम्प्रदाय या उसकी साम्प्रदायिक भाषा के विरुद्ध नहीं, अपितु प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के लिये है।

सरकार की ओर से सारा बल लगा कर आन्दोलन के प्रति भ्रान्ति फैलाने पर भी जनता का समर्थन हमें प्राप्त है। यह जन आन्दोलन पंजाब की बहुसंख्यक जनता का है।

मुख्य मन्त्री कैरों का कहना कि आन्दोलन सिख मुख्य मन्त्री के विरोध में अथवा सिखों के विरोध में है निरर्थक है। अकाली कांग्रेस गठजोड़ ने प्रदेश सरकार को अकाली विष से विषाक्त किया। उसी का प्रभाव मुख्य मन्त्री पर है। जहां जनता इस विष को निर्विष करने के लिये राष्ट्रीय हिन्दी आन्दोलन का समर्थन कर रही है वहां मुख्य मन्त्री उसे दबाने में लगे हुए हैं।

अभी तक इस आन्दोलन में करीब २१००० सत्याग्रहियों ने भाग लिया है तथा ६००० सत्याग्रही पंजाब सरकार की जेलों में बन्द हैं। एक सत्याग्रही फीरोजपुर जेल में लाठी चार्ज से मारा गया तथा हजारों को इस सत्याग्रह में सख्त चोटें आई हैं।

## हिंदी आंदोलन की प्रज्वलित ज्योति फूंकों से बुझाई नहीं जा सकती

हिन्दी सत्याग्रह को आरम्भ हुए ४ मास पूरे हो चुके हैं और यह आन्दोलन ५वें मास में पूरी तेजी के साथ प्रविष्ट हो रहा है। मैं नहीं चाहता था कि इस समय किसी भी प्रकार का वक्तव्य दूं किन्तु मास्टर तारासिंह के पत्र "प्रभात" के १० अक्टूबर के अंक में मोटे शीर्षक से यह खबर

प्रकाशित की गई है कि स्वामी आत्मानन्द जी ने घबरा कर स्वयं सत्याग्रह करने का विचार स्थगित कर दिया है। मैं बड़े अधिकार के साथ इसका उत्तर देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

दिनांक ६-१०-५७ को प्रातः श्री स्वामी आत्मानन्द जी ने मुझे अपने पास बुलाया। श्री महात्मा आनन्द भिक्षु जी उस समय स्वामी जी महाराज के पास ही बैठे थे। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज ने मुस्कराते हुए मुझे कहा कि आनन्द भिक्षु जी पुनः सत्याग्रह करने की अनुमति मुझ से मांग रहे हैं किन्तु मेरा यह संकल्प है कि महात्मा आनन्द भिक्षु जी तथा महात्मा आनन्द स्वामी जी ये दोनों सज्जन मेरे साथ सत्याग्रह करें। मेरी बात को महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने मान लिया है। श्री स्वामी जी के इस दृढ़-संकल्प को जानकर मास्टर तारासिंह जी के 'पत्र' की तथा कथित प्रसन्नता समाप्त हो जानी चाहिये।

"प्रभात" ने एक स्थान पर यह भी लिखा है कि आर्य समाजी सत्याग्रह के लिए नहीं आ रहे हैं। "प्रभात" का यह कोरा भ्रम है या दूसरों की आंखों में धूल झोंकने का प्रयत्न है। इस सत्याग्रह में सहस्रों आर्य भाई अपनी आहुति दे चुके हैं और दिन प्रतिदिन दे रहे हैं। 'प्रभात' को पता होना चाहिये कि उच्चकोटि के आर्य नेता इस धर्म युद्ध में कूदने का संकल्प कर चुके हैं।

मास्टर जी तथा कैरों साहब इन शब्दों को अंकित कर लें कि आर्य समाज के पंडित, विद्वान्, संन्यासी तथा नवयुवक और देवियां इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिए प्रत्येक प्रकार का बलिदान करने के लिए दृढ़ संकल्प कर चुके हैं। कैरों सरकार, श्री तारासिंह, ज्ञानी तथा मुसाफिर गुट और कांग्रेस साम्प्रदायिकता इस महान् धार्मिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन की प्रज्वलित ज्योति को फूंकों से बुझा नहीं सकते।

१०-१०-५७ रामगोपाल, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

## स्वामी आत्मानन्द जी का अचानक अज्ञातवास क्यों?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री तथा सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रचार मन्त्री श्री पण्डित प्रकाश वीर जी शास्त्री ने पंजाब हिन्दी सत्याग्रह के सूत्रधार स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के स्वास्थ्य और रविवार को अचानक उनके अपने निवास स्थान से अन्यत्र चले जाने के सम्बन्ध में निम्नलिखित वक्तव्य दिया है:—

रविवार दिनांक ६-१०-५७ को अपने निवास स्थान से अचानक ही स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के कहीं चले जाने का समाचार कल पत्रों में प्रकाशित होते ही भारतवर्ष भर की आर्य समाजों और हिन्दी प्रेमी जगत् में अजीब चिन्ता और विस्मय की लहर दौड़ गई। चारों ओर से तार, टेलीफोन और व्यक्तिशः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय से सम्पर्क स्थापित होने आरम्भ हो गये। देहली के आर्य समाजी जिन्हें पता लगता गया स्वामी जी की खोज में निकल पड़े। अगले दिन प्रातः शक्तिनगर के एक बगीचे में स्वामी जी महाराज पेड़के नीचे समाधिस्थ बैठे पाये गये।

स्वामी जी महाराज का स्वास्थ्य तो पर्याप्त समय से अच्छा नहीं चल रहा। ८५ वर्ष की इस वृद्धावस्था में २६० डिग्री तक रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) का पहुंचना और उस पर भी पंजाब के हिन्दुओं का कष्ट निरन्तर उन्हें कृश ही करता चला आरहा है। रविवार को अम्बाला जेल से हाल ही में मुक्त हुये स्वामी आनन्द भिक्षु जी और ब्रह्मचारी बालकराम जी उनसे मिलने पहुंचने वाले थे परन्तु स्वामी जी अपनी चादर कन्धे पर रख कर अपने स्थान से जंगल की ओर चल पड़े। स्वामी जी के प्रमुख शिष्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज जो कुछ दिन पूर्व ही पटियाला जेल से रिहा किये गये थे शुक्रवार को उनसे मिलने गये थे। उनसे तथा जिस मकान पर

वह ठहरे हुये थे उसके मालिक श्री बालमुकन्द जी आहूजा से और अपने सेवक ब्रह्मचारी गणेश से कई बार स्वामी जी कह चुके थे, "मैं अब यहां नहीं रहना चाहता। मेरे सात हजार सत्याग्रही जेलों में हैं, पंजाब का कौना २ अन्याय और दमन में पिस रहा है, सात वीर शहीद हो चुके हैं और मैं अभी बाहर हूं ? या तो मैं जेल जाना चाहता हूं या फिर जंगल में जाकर अपने प्रभु से कुछ कहना चाहता हूं। पीछे स्वामी जी ने नेहरू जी को सत्याग्रह करने के लिये एक पत्र भी लिखा था परन्तु उनके अत्यधिक दुर्बल स्वास्थ्य के कारण सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने उन्हें अभी नहीं जाने दिया। स्वामी जी जो अपने स्वभावानुसार बोलते कम और सोचते अधिक हैं उन्हें यह बात और कष्ट देने वाली ही बनी। स्वामी जी के सेवक ब्रह्मचारी गणेश का कहना है-- कई बार प्रभु प्रार्थना में स्वामी जी को भरे हुये गले से यह कहते सुना "मेरे भगवान ! पंजाब की हिन्दू जनता ने ऐसे क्या पाप किये हैं जो सत्य और न्यायपूर्ण होते हुये भी उसकी मांगें नहीं मानी जा रही हैं। रे प्रभु! क्या तेरे भक्त और सत्य के पुजारी ऐसे ही मारे और पीटे जाते रहेंगे ? कब तक और परीक्षा तूने लेनी है। नाथ, अब तो बालक वृद्ध स्त्री पुरुष, साधु महात्मा सब ही इस परीक्षाग्नि में कूद चुके हैं।"

स्वामी जी महाराज रविवार को जब कोठी से गये उससे पहिले उनकी मानसिक स्थिति स्वस्थ एवं सन्तुलित थी। हां, दुर्बलता बहुत अधिक थी जिसके कारण दूर तक चल फिर नहीं सकते थे। उन्होंने सोचा भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रधान घनश्यामसिंह जी गुप्त जेल तो जाने नहीं देंगे इसलिये कहीं एकान्त जंगल में चल कर प्रभु चरणों में ही बैठा जाय। श्री आहूजा जी से भी यह विचार उन्होंने व्यक्त किये थे। पर दुर्बल स्वास्थ्य के कारण उन्होंने जंगल में जाने की भी सम्मति नहीं दी। स्वामी जी के ढंग से कुछ ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोठी के जीवन से ऊब से गये हैं। इसी कारण वह नंगे पैर अपनी चादर कन्धे पर रख कर रविवार को कोठी से निकल पड़े। शरीर में अधिक शक्ति न होने से मीलों दूर जाकर किसी जंगल में तो न बैठ पाये अपितु थक कर शक्तिनगर के एक पार्क में पेड़ के नीचे ही बैठ गये। सारी रात वहीं पद्मासन लगाये बैठे रहे। अगले दिन खोज करते २ जब उनका सेवक ब्रह्मचारी गणेश उधर से निकला तो स्वामी जी को समाधिस्थ पाया। ब्रह्मचारी ने जब निवास स्थान पर चलने को कहा तब भी स्वामी जी ने यही कहा "मैं जंगल के किसी एकान्त स्थान पर जाना चाहता हूं। पर इस कमजोर हालत में कोई कैसे उन्हें यह आज्ञा दे सकता है। ब्रह्मचारी ने श्री आहूजा जी को आकर सूचना दी। तुरन्त वह गये और अपनी कार में स्वामी जी को घर ले आये। पता यह लगता है कि अपने जगाधरी आश्रम से भी स्वामी जी कई बार ऐसे ही बिना कहे निर्जन बनों में निकल जाते थे और सप्ताहों बाद लौटते थे।

अब स्वामी जी अपने उसी निवास स्थान में ठहरे हैं। प्रतिदिन प्रातः सायं सत्याग्रह की स्थिति जानते और सुनते हैं तथा आवश्यक निर्देश कोई देना हो तो वह भी देते हैं। स्वास्थ्य ठीक होते ही श्री घनश्याम सिंह जी स्वामी जी महाराज की इच्छानुसार उन्हें जेल जाने की अनुमति दे सकेंगे।

प्रकाशवीर शास्त्री
प्रचार मन्त्री
सार्वदेशिक भाषा स्वान्तत्र्य समिति,
दिनांक ८-१०-५७ दिल्ली।

## हिन्दी सेवी हिन्दी के शत्रु बने

दिल्ली के दैनिक समाचार पत्र "हिन्दुस्तान" दिनांक १० अक्टूबर में श्री सेठ गोविन्ददास जी, श्री पं० रामधारी जी दिनकर तथा श्री पं० बालकृष्ण जी शर्मा नवीन जैसे हिन्दी सेवियों का हिन्दी आन्दोलन के विरोध में सम्मिलित वक्तव्य को पढ़ कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वक्तव्य को पढ़ कर मैं

एक ही परिणाम पर पहुँचा हूँ कि या तो इन महानुभावों ने सच्चर व पेप्सू फार्मूला पढ़ा तक नहीं है या किसी बाह्य दबाव या प्रलोभन ने इनको विवश कर दिया है इस वक्तव्य को प्रकाशित करने के लिये। आपके वक्तव्य से आपकी प्रतिष्ठा को तो धक्का लगा ही है, परन्तु साथ ही इससे हिन्दी का बड़ा भारी अहित हुआ है। अपनी कमजोरी को जानते हुए तीनों महानुभावों ने ठीक ही अनुमान लगाया है कि उनका वक्तव्य निरर्थक सिद्ध होगा।

मैं तीनों महानुभावों से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि वह भारतीय विधान की धारा ३५० ए को पढ़ें और उसके प्रकाश में सच्चर फार्मूला व पेप्सू फार्मूला को देखें। ३५० ए धारा में प्रत्येक प्रान्तीय सरकार, म्युनिसिपल बोर्ड तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को आदेश दिया गया है कि वह अपने यहां अल्पसंख्यक जनता के बच्चों को उनकी मातृ भाषा में पढ़ाने की समुचित व्यवस्था करें। अल्पसंख्यक वर्ग की परिभाषा करते हुए विधान में लिखा है कि प्रांत की कुल आबादी का ३० प्रतिशत या इससे अधिक कोई समुदाय हो तो उसे अल्पसंख्यक वर्ग कहा जायगा। पंजाब में हिन्दी भाषा-भाषी कुल आबादी का ७० प्रतिशत अंग है और पंजाबी क्षेत्र में ४५ प्रतिशत है। ऐसी स्थिति में पेप्सू फार्मूले के अनुसार पंजाब के कुछ क्षेत्र में कोई बच्चा प्राइमरी कक्षा में हिन्दी नहीं पढ़ सकता है और मैट्रिक तक उसकी शिक्षा का माध्यम पंजाबी ही होगा। सच्चर फार्मूले के अनुसार पंजाब के कुछ क्षेत्र में यह नियम है कि यदि किसी कक्षा में १० लड़के या स्कूल के ४० विद्यार्थी प्रार्थना करें तो हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था की जा सकती है। इस प्रकार दोनों ही फार्मूले भारतीय विधान की ३५० ए धारा के सर्वथा विपरीत हैं। ऐसी स्थिति में भी अपने को हिन्दी सेवी कहने वाले महानुभावों ने इन फार्मूलों का समर्थन किया है यह आश्चर्य ही नहीं अपितु खेद का भी विषय है। आप लोगों ने पेप्सू फार्मूले के अनौचित्य को दबे शब्दों में स्वीकार किया है, परन्तु श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू द्वारा श्री पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के नाम भेजे पत्र की दुहाई देते हुए आपने कहा है कि वह फार्मूला भी शीघ्र समाप्त हो जायगा और पूरे पंजाब में एक ही फार्मूला लागू हो जायगा। सो मैं उन्हें बतलाना चाहता हूँ कि वह रीजनल फार्मूला की पेप्सू फार्मूला सम्बन्धी धारा ६ को ध्यान से पढ़ें। उसके अनुसार पेप्सू फार्मूला, समझौते के द्वारा ही धीरे २ हटाया जा सकता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि यदि मास्टर तारासिंह राजी होंगे तो हटा दिया जायगा अन्यथा नहीं। धारा का वही अर्थ है जो अंग्रेज लोग कांग्रेस से कहा करते थे कि यदि कांग्रेस और मुस्लिम लीग समझौता करके उनके सन्मुख कोई फार्मूला रख दें, तो वह उसे स्वीकार कर लेंगे। पेप्सू फार्मूला कभी समाप्त नहीं हो सकेगा इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि अकालियों के नेता ज्ञानी करतारसिंह ने चण्डीगढ़ में पंजाब के गवर्नर महोदय के आग्रह पर हुई समझौता वार्ता में स्पष्ट कह दिया था कि पेप्सू फार्मूले को समाप्त नहीं किया जा सकता है। मा० तारासिंह जी तो किसी भी फार्मूले का एक शब्द भी परिवर्तित करने को तैयार नहीं हैं।

आपने कहा है कि जब पंजाब के हिन्दी क्षेत्र वाले पंजाबी को अनिवार्य रूप से पढ़ने को तैयार नहीं हैं तो फिर अहिन्दी भाषियों को अनिवार्य रूप से हिन्दी कैसे पढ़ाई जा सकती है। आपको पता होना चाहिये कि पंजाब में राष्ट्रभाषा हिन्दी की रक्षा का प्रश्न नहीं अपितु क्षेत्रीय भाषा हिन्दी की रक्षा का प्रश्न है। भारत के किसी भी द्विभाषी प्रान्त में जब वहां के बच्चों को वहां की क्षेत्रीय भाषा अनिवार्य रूप से नहीं पढ़ाई जाती तो फिर पंजाब में ही ऐसा क्यों किया जा रहा है? उदाहरणार्थ बम्बई द्विभाषी प्रान्त है। मराठी और गुजराती वहां की दो क्षेत्रीय भाषायें हैं परन्तु वहां किसी भी क्षेत्र मेंअर्थात् मराठवाड़े में गुजराती और गुजराती क्षेत्र में मराठी अनिवार्य रूप से नहीं पढ़ाई जाती है।

फिर पंजाब में ही ऐसा क्यों किया जा रहा है ? प्रश्न पजाबी पढ़ने या न पढ़ने का नहीं है अपितु प्रश्न यह है कि एक ही देश में दो नीतियां क्यों अपनाई जा रही हैं ? पंजाब के हिन्दी क्षेत्र की अवस्था तो और भी विचित्र है। वहां पंजाबी भाषी लोग केवल ४ प्रतिशत ही हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें अनिवार्य रूप से पंजाबी पढ़ाना कहां का न्याय है। इसके अतिरिक्त हिन्दी आन्दोलन के नेताओं ने जब पंजाब की नौकरियों को प्राप्त करने के लिये हिन्दी और पंजाबी का जानना अनिवार्य रूप से स्वीकार कर लिया है तो फिर जो बच्चे सरकारी नौकरी प्राप्त करना चाहेंगे वह अवश्य पंजाबी पढ़ेंगे परन्तु जिन्हें नौकरी नहीं करनी वह क्यों पढ़े ? हां यदि सरकार समूचे देश में ऐसा नियम बना दे कि प्रत्येक बच्चे को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त एक क्षेत्रीय भाषा भी पढ़नी होगी तो फिर नौकरी के इच्छुक लोग अपने प्रान्त की क्षेत्रीय भाषा पढ़ेंगे और नौकरी की इच्छा न रखने वाले भारत की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में से किसी एक को चुन लेंगे, परन्तु विशेष क्षेत्रीय भाषा को ही अनिवार्य रूप से पढ़ने का नियम तब भी अहितकर ही होगा।

जहां तक अहिन्दी भाषियों को हिन्दी अनिवार्य रूप से पढ़ाने का प्रश्न है। सो यह प्रत्येक देशीय सरकार का कर्त्तव्य है कि वहां के निवासियों को अनिवार्य रूप से वहां की राष्ट्रभाषा पढ़ाये और प्रत्येक देश के निवासियों का भी यह परम धर्म है कि वह राष्ट्रभाषा को अनिवार्य रूप से पढ़े ऐसा होने पर ही देश की एकता व सुरक्षा स्थिर रह सकती है, परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी की रक्षा के लिये किसी क्षेत्र के निवासी क्योंकि ऐसा न करने से अहिन्दी भाषी लोग नाराज हो जायेंगे अपनी मातृभाषा को छोड़ कर प्राइमरी शिक्षा अन्य भाषा में पढ़ाना मैं पाप समझता हूँ और इसे मैं मानवीय अधिकारों पर कुठाराघात समझता हूँ।

अन्त में मैं तीनों महानुभावों से यह पूछना चाहता हूँ कि आपकी जबान उस दिन क्यों मौन थी कि जब अकालियों की साम्प्रदायिक हिंसात्मक मनोवृत्ति के सन्मुख हमारी सरकार ने सिर झुकाया और भारतीय विधान के सर्वथा विपरीत ये फार्मूले बनाये और पंजाब की ७० प्रतिशत हिन्दू जनता को मुट्ठी भर साम्प्रदायिक अकालियों के चरणों में डाल दिया था। यदि कांग्रेस के सदस्य होने या उसकी कृपा से लोक सभा का सदस्य बन जाने के कारण श्री सेठ गोविन्ददास जी, दिनकर जी व नवीन जी में सत्य को कहने की सामर्थ्य नहीं रह गई है तो मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि उनका हित इसी में है कि वह मौन रहें अन्यथा वह हिन्दी के प्रति की गई अपनी सेवाओं पर पानी फेर लेंगे।

ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
प्रमुख शिविर संचालक
सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति

## विनोवा भावे का हिन्दी आंदोलन विषयक वक्तव्य वस्तुस्थिति के विपरीत

पंजाब से हजारों मील दूरी पर बैठे आचार्य विनोवा भावे ने २७ सितम्बर के हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड आदि समाचार पत्रों में पंजाब हिन्दी अन्दोलन के बारे में जो वक्तव्य दिया है उससे प्रतीत होता है कि उन्हें जान बूझकर किसी व्यक्ति ने आन्दोलन सम्बन्धी झूठे समाचार देकर भड़काया है और उनसे यह वक्तव्य निकलवाया है। अन्यथा विनोवा जी जैसे सत्य प्रेमी व्यक्ति ऐसा वक्तव्य कदापि नहीं देते कि जो सत्य से कोसों दूर है। आपका कहना है कि "जो लोग पंजाब में हिन्दी को दूसरों पर जबरदस्ती लादने का प्रयत्न कर रहे हैं वह हिन्दी का तो अहित करही रहे हैं, साथ ही देश का भी अहित कर रहे हैं और पंजाब के हिन्दू-सिखों को लड़ाने

का कार्य कर रहे हैं।"

मैं श्री विनोबा जी को उनकी जानकारी के लिये बतलाना चाहता हूँ कि पंजाब में अवस्था आपकी धारणा के सर्वथा विपरीत है। वहां हिन्दी नहीं अपितु गुरुमुखी वहां के बहुसंख्यक हिन्दू निवासियों पर बलात् लादी जारही है, जबकि उनकी मातृभाषा हिन्दी है। जनगणना की रिपोर्ट के अनुसार पंजाब में ७८ प्रतिशतक जनता की मातृ-भाषा हिन्दी है जिस पर वहां प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। राष्ट्र-भाषा घोषित होने पर भी पंजाब सरकार वहां इसे राष्ट्र-भाषा का स्थान देने को तैयार नहीं है। मैं एक बात की ओर विशेष रूप से श्री विनोबा जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि पंजाब में प्रश्न राष्ट्र-भाषा हिन्दी का नहीं अपितु वहां के ७० प्रतिशत हिन्दुओं की मातृभाषा की रक्षा का प्रश्न है। सौभाग्य से यदि पंजाब के हिन्दुओं की मातृभाषा हिन्दी है और वह इसकी रक्षा का नारा लगाते हैं तो यह नारा उसी प्रकार का है जिस प्रकार बंगाली, गुजराती, महाराष्ट्री अपनी २ मातृभाषा अर्थात् क्षेत्रीय भाषा की रक्षा के लिये कुछ दिन पूर्व लगा रहे थे। मातृभाषा की रक्षा का नारा किस प्रकार देश का अहित कर देगा मेरी समझ में नहीं आया?

देश का अहित अपनी मातृभाषा की रक्षा करने से नहीं अपितु न करनेसे अवश्य होजायगा। हिन्दी आन्दोलन पंजाब के हिन्दू-सिखों को लड़ने के लिये नहीं अपितु शत्रुता की उस अग्नि को सदैव के लिये बुझाने के लिये हो रहा है जो कि अकालियों के प्रभाव में आकर सरकार ने पंजाब में लगाई है, और उसमें हिन्दू सिख दोनों ही जलकर भस्म हो जायेंगे। हिन्दू सिख तभी प्रेम से रह सकते हैं कि जब दोनों अपनी २ भाषा व धर्म के पालन में पूर्ण स्वतन्त्र हों और कोई किसी के अधिकारों के छीनने का प्रयत्न न करे। आज पंजाब में रीजनल, पैप्सू व सच्चर फार्मूले की आड़ में वहां के ७० प्रतिशत हिन्दुओं को धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके विपरीत यदि हम आवाज उठाते हैं तो हमको ही विरोधी बतलाते हैं। अब आप स्वयं सोच सकते हैं कि १० प्रतिशत जनता (सिखों) की भाषा वहां की ७० प्रतिशत जनता पर लादने में कहां का न्याय है? एक ओर सिख जबरन गुरुमुखी हिन्दुओं को पढ़ाना चाहते हैं दूसरी ओर आर्य समाज चाहता है कि जो गुरुमुखी पढ़ना चाहे गुरुमुखी पढ़े और हिन्दी पढ़ना चाहे हिन्दी पढ़े, किसी भाषाकी पढ़ाई में बाध्यता न हो। कोई भी न्याय प्रिय व्यक्ति उपरोक्त दोनों पर विचार कर न्याय करे कि दोषी कौन पक्ष है?

मैं आचार्य विनोबा जी को बतलाना चाहता हूं कि देश व पंजाब का अहित हिन्दी आन्दोलन वाले नहीं अपितु पंजाब सरकार कर रही है कि जिसने भारतीय विधान की ३५० ए धारा की सर्वथा उपेक्षा करके जालन्धर क्षेत्र के ४५ प्रतिशत हिन्दुओं को अपनी मातृभाषा पढ़ने से वंचित कर दिया है। आज पंजाब में न्याय नहीं अपितु जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। हिन्दी आन्दोलन इसीलिये गलत और देश के लिये अहितकर है क्योंकि इसमें देश-भक्ति की भावना अधिक है और इसमें अकालियों कीभांति गुंडागर्दी व तोड़ फोड़ करने की पद्धति नहीं हैं।

अन्त में मैं श्री विनोबा जी से एक बात अवश्य पूछूंगा कि उनका ध्यान पंजाबके उन अत्याचारों की ओर क्यों नहीं आकर्षित हुआ जिनके द्वारा पूज्य महात्मा गांधी जी के सिद्धान्तों की हत्या की जा रही है। वह अकबरपुर में ठीक १५ अगस्त को वहां के निवासियों तथा बहिन-बेटियों के साथ किये गये अमानवीय कुकृत्य, फीरोजपुर जेल का हत्याकाण्ड तथा समाज व पौराणिक मन्दिरों को अपवित्र करने की घटनायें यदि उनके कानों में नहीं पहुँची तो मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि वह उत्तर प्रदेश कांग्रेस के भूतपूर्व प्रधान-तथा वर्तमान समय में राज्य सभा के

सदस्य व कांग्रेस पार्टी के मन्त्री श्री अलगूराय जी शास्त्री से ज्ञात करें। श्री शास्त्री जी के विचार में यदि नेहरू जी स्वयं फीरोजपुर के काण्ड को देख लेते तो लज्जावश अपना सिर दीवार से मार कर फोड़ लेते। मुझे पूर्ण आशा है कि विनोबा जी अपने सिद्वान्त, प्रतिष्ठा व पद के अनुकूल शीघ्र ही ही अपने वक्तव्य पर पुनः विचार करेंगे और सत्यके पक्ष का समर्थन करेंगे।

ओ३म्प्रकाश पुरुषार्थी
मुख्य संचालक
भाषा स्वातन्त्र्य सत्याग्रह शिविर

**Arya Samaj Agitation and Ban on Congressmen.**

Some of the top leaders of the Congress have from time to time made statements to the effect that giving support to the Arya Samaj movement regarding the Language problem in Punjab by a congressman would amount to breach of discipline. This has pained me. The great political organisation viz the Congress has in the past not only stood for but has also fought for freedom of conscience and expression. This raises a question of first rate importance in the national life of our country, which should attract the attention not only of the foremost thinkers of the Congress, but also of other free thinkers in the land.

Arya Samaj undoubtedly is a religious body. The question of language is also undoubtedly a question of culture. This is a legitimate subject for a religious body. That the question of language is connected with culture, is a fact known to everybody. You cannot touch Arabic without wounding the feelings of a Muslim, nor can you touch Sanskrit without hurting Hindu sentiments. The Jews, after they get an independent state with a small territory in Palestine, had taken to Hebrew, which was almost extinct as a language. The fact that language has a close bond with one's culture is also recognised in our own constitution. One has only to read Articles 29, 30, 347 350A and 350B to be convinced of this. Therefore there can be no doubt that the language agitation is cultural which the Arya Samaj is conducting.

The question is :

Would it be a healthy tradition for a political organisation to interfere with the freedom of its members in this respect. This is as dangerous as it would be for any religious body to interfere with political activities of its members.

There is a fear in the minds of such Congress leaders that if not restrained in this manner the Congressmen will swamp in support of the Arya Samaj movement. This is no doubt true. Even then I

## श्री म० आनन्द स्वामी जी तथा श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री प्रचार मन्त्री सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का बम्बई का सफल दौरा

श्री महात्मा आनन्दस्वामी जी महाराज जब से जेल से छूटकर आये हैं, रात दिन आन्दोलन के कार्य में व्यस्त हैं। पहले तो तुरन्त आते ही आपने भाषा स्वातन्त्र्य समिति से सत्याग्रह करने की अनुमति प्राप्त करने का अनुरोध किया। उसके पश्चात् समिति की प्रार्थनानुसार आप बम्बई में आन्दोलन के प्रचार एवं धन संग्रह के लिये श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री के साथ पधारे। श्री स्वामी जी ने बम्बई में श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री के साथ घोर परिश्रम किया। आपके शान्त तथा सौम्य स्वभाव का न केवल आर्य समाजियों पर अपितु बाहर के क्षेत्रों पर भी गम्भीर प्रभाव हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने इस आन्दोलन के इतिहास में अपने सक्रिय सहयोग से एक विशेष और महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। इसमें भी श्री कान्तिलाल जी शर्मा और श्री वेनी भाई जी के उद्योग की जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है।

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री की प्रेममयी प्रेरणा स्वामी जी महाराज का आकर्षक व्यक्तित्व और बम्बई के आर्य भाइयों की अनुकरणीय श्रद्धा इन सबका ऐसा फल मिला है कि इससे आन्दोलन के कलेवर में शक्ति का संचार हुआ। चौपाटी की उस विशाल सभा का अद्भुत दृश्य जिसमें श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त प्रधान सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति को एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह की थैली भेंट की गई, सदा हृदयपटल पर अङ्कित रहेगा। अब भी महात्मा आनन्द स्वामी जी, तथा श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री आन्दोलनके निमित्त कलकत्ता रवाना होनेवाले हैं। श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी पहले से ही वहां धन, जन के संग्रह में संलग्न हैं। हमें पूर्ण आशा है कि बम्बई के समान कलकत्ते की भी इन आर्य नेताओं की यात्रा सफल होगी।

❀

---

would in all earnestness implore my congress stalwarts to consider this important matter coolly and dispassionately. We are already down the precipice so far as our moral standard is concerned. I would tell them: High ideals should never be sacrificed to obtain temporary and petty gains, however attractive and urgent they may appear to be at the moment. It can only do irreparable injury to the great political organisation. No one can forget except at great peril the eternal saying "धर्मेव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः" The sacrifice of a high principle kills, while its protection protects.

—**Ghanshyam Singh Gupta**

# आर्यसमाज के इतिहास के तृतीय भाग की तैयारी

यह जान कर आर्य जनता को हर्ष होगा कि आर्यसमाज के इतिहास का दूसरा भाग लगभग छप चुका है, शीघ्र प्रकाशित होगा। उस भाग में आर्यसमाज का इतिहास १९४७ तक पहुँच गया है। सार्वदेशिक सभा की अनुमति और सहायता से पहले दोनों भागों की भांति तीसरे भाग का लेखन कार्य भी आरम्भ हो गया है। तीसरे भाग में निम्नलिखित विषयों का समावेश होगा :—

(१) गत सौ वर्षों में संसार में जो धार्मिक तथा दार्शनिक विचार परिवर्तन हुए तथा आर्यसमाज की उन पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसका विवरण।

(२) १९४७ से १९५७ तक का घटनाचक्र।

(३) आर्य समाज के विशिष्ट कार्यकर्त्ताओं, संन्यासियों, विद्वानों, लेखकों, पत्रकारों तथा कवियों का संक्षिप्त परिचय।

(४) आर्यसमाज की संस्थाओं के विवरण।

(५) आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्यसमाजों की संक्षिप्त विवरण सहित सूची।

पाठक देखेंगे कि जिन विषयों का तीसरे भाग में समावेश होगा, उनका विस्तार बहुत बड़ा है, आर्य जनों और आर्य संस्थाओं की पूरी सहायता के बिना कार्य का पूरा होना असम्भव है। जिन वस्तुओं में सम्पादक को अत्यधिक सहायता की आवश्यकता है उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :—

## पंजाब की आर्यसमाजों पर विभाजन का प्रभाव

गुजरे हुए दस वर्षों में जिस घटना ने आर्यसमाज के जीवन पर बहुत गहरा असर डाला है वह स्वराज्य की प्राप्ति के साथ पंजाब का विभाजन है। आर्य समाज का सब से प्रबल केन्द्र पंजाब था और पंजाब में भी लाहौर से पश्चिम और उत्तर के नगरों के आर्यसमाज अन्यों की अपेक्षा अधिक समृद्ध और शक्तिशाली समझे जाते थे। लाहौर में आर्यसमाज का सबसे प्रबल दुर्ग था। विभाजन ने पंजाब का वही दुर्ग आर्यसमाज से छीन लिया, जो प्रबलतम था। इतिहास के तीसरे भाग में उसका पूरा विवरण आना चाहिये। पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा डी० ए० वी० कालेज कमेटी आदि सभाओं को पत्र लिखे जा रहे हैं। आशा है बहुत सा विवरण उनसे प्राप्त हो जायगा। परन्तु उतने से काम नहीं चल सकता। इतिहास के लिए सब समाजों की पूरी जानकारीके विवरण की आवश्यकता है। सब आर्य जनों से प्रार्थना है कि वे इस सम्बन्ध में जो प्रामाणिक जानकारी उनके पास हो, उसे लिखकर भेजने की कृपा करें। कार्य शीघ्रता का है क्योंकि मैं इस भाग को ६ मास में लिख कर समाप्त कर देना चाहता हूं।

## आर्य संस्थाओं तथा आर्य समाजों के संक्षिप्त विवरण

इतिहास के प्रथम भाग की तैयारी के समय से ही आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य संस्थाओं और आर्यसमाजों से यह निवेदन करना आरम्भ कर दिया था कि वे अपने संक्षिप्त विवरण इतिहास के कार्यालय में भेज दें ताकि उन्हें यथास्थान सम्मिलित कर लिया जाये। बहुत से विवरण प्राप्त हो चुके हैं। पहले दो भागों में उनका उपयोग भी किया जा चुका है। तीसरा भाग उन सब का समुच्चय होगा। इस कारण आवश्यक है कि यथा सम्भव सभी आर्य संस्थाओं और आर्य समाजों की संक्षिप्त चर्चा आजाये। जिन संस्थाओं और समाजों

ने अपने विवरण न भेजे हों वे अब विलम्ब न करें, यथासम्भव शीघ्र विवरण तैयार करके भेज दें। विवरण में निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अवश्य हों :—

(१) स्थापना कब हुई ?

(२) स्थापना के समय मुख्य कार्यकर्त्ता कौन थे ?

(३) विशिष्ट कार्य और कार्यकर्त्ता ?

(४) वर्तमान परिस्थिति और अधिकारी ?

## व्यक्ति विशेष सूची

तीसरे भाग में आर्यसमाज के विशिष्ट संन्यासियों, विद्वानों, लेखकों, सम्पादकों, कवियों पत्रकारों और कार्यकर्त्ताओं का संक्षिप्त परिचय देने का विचार है। इस विचार की पूर्ति तभी सम्भव है जब सब भाई विवेक पूर्वक हाथ बटावें, जो परिचय भेजें वह संक्षिप्त हो। उसमें जन्मतिथि, शिक्षा, समाज से सम्बन्ध तथा विशेष कार्यों का ही संक्षिप्त वर्णन हो। यह भी लिखा जाये कि वे अब जीवित हैं या नहीं ?

## आर्य ग्रन्थों की सूची

तीसरे भाग में अब तक प्रकाशित आर्य ग्रन्थों की सूची देने का भी विचार है। आर्य विद्वानों के लिखे हुए मौलिक तथा अनुवादात्मक ग्रन्थों के अतिरिक्त वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज से सम्बन्ध रखने वाली अन्य सब पुस्तकों की तालिका भी उसमें रहेगी। जो प्रकाशक अथवा पुस्तक विक्रेता उस सूची से लाभ उठाना चाहें वे निम्नलिखित जानकारी प्रत्येक पुस्तक के साथ भेजें।

(१) लेखक का नाम।

(२) प्रथम संस्करण की तिथि।

(३) आकार तथा पृष्ठ संख्या।

(४) अबतक कितने संस्करण निकल चुके हैं।

(५) पुस्तक से सम्बन्ध रखने वाली कुछ विशेष घटनायें।

यदि एक ही पुस्तक का समावेश प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता दोनों की सूची में आयगा तो उसमें से प्रकाशक की भेजी हुई जानकारी से ही उपयोग लिया जायगा।

## हुतात्मा आर्य जनों का परिचय

धर्म पर अपने को बलिदान करने वाले अधिकतर आर्य जनों का परिचय पहले दो भागों में आ चुका है परन्तु वह सर्वथा पूर्ण नहीं, बहुत से नाम छूट गये हैं। १९४७ और उसके पश्चात् के वृत्तान्त तो सर्वथा ही नये होंगे। यत्न किया जायगा कि इतिहास का यह भाग भी, जहां तक सम्भव हो अधूरा न रहे। यह तभी सम्भव है यदि सब लोगों की सक्रिय सहायता मिले। मैं यत्न करूंगा कि जो सामग्री प्राप्त हो उसमें से कोई भी अप्रयुक्त न रहे।

इन्द्र विद्यावाचस्पति
सम्पादक
२६ मल्कागंज रोड, जवाहर नगर
दिल्ली

# हिन्दी सत्याग्रह की दैनिक प्रगति

## २१-९-५७ से १५-१०-५७ तक

२१ सितम्बर—धारा १४४ का उल्लंघन करने के अपराध में फीरोजपुर में ३ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। आज यह इस नगर की पहली गिरफ्तारी थी।

आज दिल्ली में इलाहाबाद का जत्था श्री रामनिवासजी के नेतृत्व में, जयपुर का जत्था श्री पृथ्वी चन्द्र जी ऐडवोकेट के नेतृत्व में, बल्लभगढ़ का जत्था सेठ टीकाराम के नेतृत्व में, कोसीकलां का जत्था चौधरी शिवचरणदास के नेतृत्व में दिल्ली आया। ऐहन जिला अलीगढ़ का भी जत्था श्री यशोधन जी के नेतृत्व में आया। इस जत्थे की विशेषता यह थी कि इसमें आर्य समाज के सभी अधिकारी सम्मिलित थे। यह जत्था सहारनपुर होता हुआ चंडीगढ़ गया।

अमृतसर में आज १६ सत्याग्रहियों को १४४ धारा का उल्लंघन करने के अपराध में गिरफ्तार किया गया। २ जत्थे शाम को कसेरिया बाजार से निकले। पहले जत्थे ने ५ बजे तिलक राव महाजन के नेतृत्व में सत्याग्रह किया। दूसरे जत्थे ने कुलदीपसिंह के नेतृत्व में सत्याग्रह किया।

२२ सितम्बर—आज चंडीगढ़ जाता हुआ १६ सत्याग्रहियों का अलीगढ़ का जत्था ६ सत्याग्रहियों का दूसरा जत्था अंबाला में १८८ धारा के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया। ये अनाज मंडी से एक जलूस के रूप में हिन्दी समर्थक नारे लगाते हुए निकल्सन रोड की ओर जा रहे थे।

पंजाब में चल रहे हिन्दी आन्दोलन को और तीव्र करने के लिए देश भर की आर्य समाजों ने २ लाख से अधिक रुपया तथा १ लाख सत्याग्रही देने का निश्चय किया। यह निश्चय सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की प्रेरणा पर आज गाजियाबाद में समस्त देशकी आर्यसमाजों की प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन में किया गया। इस सम्मेलन में शहीद सुमेरसिंह के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत की गई और भाषा स्वातन्त्र्य समिति के नेतृत्व में विश्वास प्रकट किया गया। आज पुलिस ने जालंधर में धारा १२२ के अन्तर्गत हिन्दी रक्षा समिति के ३४ कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार किया।

२३ सितम्बर—डा० ब्रह्मस्वरूप के नेतृत्व में जाता हुआ ९ सत्याग्रहियों का एक जत्था करनाल में रोका गया और १४४ धारा का उल्लंघन करने के अपराध में गिरफ्तार किया गया।

अम्बाला छावनी, होशियारपुर, फीरोजपुर, करनाल, रोहतक, संगरूर पंजाब के इन ६ मुख्य नगरों में आज हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सिलसिले में ५९ व्यक्ति गिरफ्तार गए जिनमें से ५ महिला सत्याग्रही थीं।

११ अमृतसर में, ९ करनाल में, ९ चंडीगढ़में, ६ अम्बाला छावनी में तथा ४ यमुनानगर में और २० अबोहर में, यमुनानगर का जत्था विद्यार्थी केवल कृष्ण के नेतृत्व में जा रहा था।

आज गुमानीराय आर्य की अध्यक्षता में गुड़गांव में एक विराट सार्वजनिक सभा हुई जिसमें श्री राम चन्द्र पत्रकार ने कहा कि गुरुमुखी बलात् विद्यार्थियों पर न लादी जानी चाहिए। पंजाब सरकार की यह नीति घातक है। इससे पंजाब यूनिवर्सिटी को लाखों रुपये वार्षिक की हानि होगी क्योंकि पंजाब से बाहर के लगभग १० हजार विद्यार्थी प्राइवेट रूप में यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं में बैठते हैं, गुरुमुखी को अनिवार्य बनाने से वे विद्यार्थी परीक्षाओं में बैठना पसन्द न करेंगे। इस प्रकार यूनिवर्सिटी को आर्थिक हानि भी होगी।

पंजाब सरकार ने एक परिपत्र के द्वारा समस्त सम्बद्ध अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे हिन्दी आन्दोलन को आर्थिक सहायता देने वालों पर भी दृष्टि रखें, यह विश्वास किया जा रहा है कि सरकार आर्थिक सहायता देने वालों को भी गिरफ्तार करेगी।

कपूरथला के जिला मजिस्ट्रेट ने कपूरथला, सुलतानपुर और फगवाड़ा के रेलवे स्टेशनों पर भी १४४ धारा लगायी।

पंजाब साहित्य संगम की कार्य कारिणी ने उन साहित्यकारों और संसत्सदस्यों की निंदा की जो सरकारी संरक्षण के कारण हिन्दी आन्दोलन का खंडन करते हैं। ८० वर्षीय स्वामी सच्चिदानन्द ने अम्बाला जेल में आमरण अनशन किया। उन्होंने संकल्प किया है कि हिन्दी रक्षा समिति की मांगों की स्वीकृति पर ही वे अनशन तोड़ेंगे।

संगरूर जिला हिन्दी रक्षा समिति ने २५ सितंबर से नया मोर्चा खोलने का निर्णय किया। पहला जत्था श्री हंसराज जी के नेतृत्व में, दूसरा जत्था नगरपालिका के सदस्य श्री रामदास के नेतृत्व में १४४ धारा का उल्लंघन करेगा।

मध्यप्रदेश, विहार, उत्तर प्रदेश, मध्य भारत आदि २ प्रदेशों से बहुसंख्या में जत्थे रवाना हुए।

२४ सितम्बर—हिन्दी आन्दोलन में भाग लेने के लिए निम्नलिखित स्थानों से राजधानी (दिल्ली) में जत्थे आए :—

| | |
|---|---|
| मुरैना १० सत्याग्रही | नेता श्री मोतीलाल आर्य |
| ग्वालियर ६ ,, | ,, ,, हरपालसिंह |
| सिहोर १३ ,, | ,, ,, स्वामी सर्वानन्द योगाभ्यासी |
| लूती महेन्द्रगढ़ ७ ,, | ,, ,, खूबराम जी |
| हलद्वानी १४ ,, | ,, ,, यशवन्तसिंह |

आज रोहतक में १८ सत्याग्रहियों का एक जत्था जो कानपुर से श्री देवीदयाल के नेतृत्व में गया था रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया। ३५ सत्याग्रही दयानन्द मठ में गिरफ्तार किए गए। अमृतसर में ११ यमुना नगर में ३ अम्बाला में ५ महिला सत्याग्रही ६ करनाल में ६ अम्बाला छावनी में ६ और चंडीगढ़ में ३० सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। सेन्ट्रल जेल हिसार में बन्दी हुए ४७१ हिन्दी सत्याग्रहियों ने जेल के अधिकारियों के दुर्व्यवहार के फलस्वरूप भूख हड़ताल की। उन्हें बहुत खराब खाना दिया जाता था। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने शिकायतें सुनी और उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया। इस पर भूख हड़ताल बन्द कर दी गई। यह घटना १८-६-५७ की बताई जाती है।

२५ सितम्बर—आज चंडीगढ़ में २३ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। इनमें से १२ सत्याग्रही उत्तर प्रदेश और राजस्थान के थे।

२७ सत्याग्रही अमृतसर में जलूसों और प्रदर्शन पर लगे प्रतिबन्धों को तोड़ने के अपराध में गिरफ्तार किए गए। १३ सत्याग्रही २ जत्थों में आए थे। गत रात्रि को ६ व्यक्ति गोलबाग में सार्वजनिक सभा करते हुए पकड़े गए। आर्य समाज लक्ष्मणसर के कोषाध्यक्ष श्री नरदेव शास्त्री २६ को एक जत्था ले जाने वाले थे। उन्हें १०७ दफा में गिरफ्तार किया गया।

यमुना नगर में ३ सत्याग्रही नारे लगाते हुए जा रहे थे और उनके साथ लगभग २००० समर्थकों की भीड़ थी। इन तीनों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

आज फीरोजपुर में ६ व्यक्तियों ने १४४ धारा तोड़कर अपने को गिरफ्तार कराया जिसमें स्थानीय हिन्दी रक्षा समिति के प्रधान श्री पासी सम्मिलित थे।

अबोहर में १४४ धारा तोड़ते हुए १२ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए।

अम्बाला में आज ४ सत्याग्रही १४४ धारा तोड़ने के अपराध में गिरफ्तार हुए।

इस प्रकार आज समस्त पंजाब में १३१ गिरफ्तारियां हुईं।

पंजाब राज्य ने एक विशेष घोषणा के द्वारा १४४ धारा का उल्लंघन करना बिना जमानती अपराध घोषित किया। साथ ही इस धारा के आधीन पकड़े जाने वाले सत्याग्रहियों के मामलों की सुनवाई तत्काल करने का भी आदेश दिया गया है। आज अमृतसर के श्री ऐच० ऐस० मजिस्ट्रेट ने ११ महिला सत्याग्रहियों की जमानत की अर्जियां अस्वीकार कर दीं जिन्हें १४४ धारा में ८-९-५७ को गिरफ्तार किया गया था।

रिवाड़ी स्टेशन पर २४ की सायंकाल ६ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए। यह जत्था चण्डीगढ़ जा रहा था। इन सबको गुड़गांवा जेल भेज दिया गया।

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष श्री घनश्याम सिंह गुप्त ने सत्याग्रहियों के अभियोगों की पैरवी के लिए मेरठ निवासी श्री रतनलाल जी भूतपूर्व सेशन जज की अध्यक्षता में एक डिफेंस कमेटी नियुक्त की।

जालंधर जेल में सत्याग्रहियों को रखने के लिए स्थान न रहा। ५ तम्बू लगाए गए हैं। पुलीसने करनाल, चण्डीगढ़ और रोहतक की पूरी नाकाबन्दी की हुई है। सार्व० भाषा स्वातन्त्र्य समिति ने निर्देश दिया है कि धारा १४४ को तोड़ने वाले लोग जहां भी पकड़े जांय चण्डीगढ़ और रोहतक के सत्याग्रह के निमित्त ही अपने को पकड़ा हुआ समझे और वैसा ही घोषित करें।

करमन देवरी (अमृतसर) में २ जत्थों में विभक्त ११ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए। इनके नेता श्री बंसतकुमार थे।

अम्बाला के सुप्रसिद्ध आर्य श्री डा० लालचन्द जी ऐडवाइजरी बोर्ड की आज्ञा से मुक्त किए गए हैं जिन्हें निवारक अधिनियम के अधीन १ मास हुआ गिरफ्तार किया गया था।

पंजाब हाई कोर्ट के जस्टिस पैसे ने पटियाला हिंदीरक्षा समिति के प्रधान और मन्त्री श्री बंसीलाल और चमेला राय के डिटेन्शन के आर्डर रद्द किए। इन दोनों को ८-९-५७ को गिरफ्तार किया गया था और अधिकारियोंने उन्हें १७-९-५७ को कारण बताया था जबकि कानून के अनुसार गिरफ्तारी के ५ दिन के भीतर २ ही कारण बता दिए जाने चाहिए थे।

हांसी तहसील के सीसर ग्राम के ७ सत्याग्रही रोहतक जाते हुए हिसार पुलीस के द्वारा मार्ग में पकड़ लिए गए।

२६ सितम्बर—आज कैथल में १४४ धारा का उल्लंघन करके जलूस निकालने, हिन्दी समर्थक नारे लगाने और गुरुमुखी की वाध्य पढ़ाई का विरोध करते हुए १० विद्यार्थी गिरफ्तार किए गए। १००० विद्यार्थियों ने डी० ए० वी० हाईस्कूल से नगर में एक जलूस निकाला था।

आज चण्डीगढ़ में १४ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए और रोहतक में गूना (ग्वालियर) का १० सत्याग्रहियों का जत्था गिरफ्तार किया गया जिसका नेतृत्व श्री मोतीलाल कर रहे थे।

आज होशियारपुर के श्री मुकन्दलाल के नेतृत्व में १४४ धारा का उल्लंघन करते हुए ७ सत्याग्रहियों का १ जत्था गिरफ्तार किया गया।

यमुना नगर में ६ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए जिनमें वैदिक साधनाश्रम के ४ ब्रह्मचारी थे।

अबोहर में १० सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। म्यूनिसिपल कमिश्नर बाबा कर्मचन्द साहनी आज ज्यों ही अमृतसर में मजिस्ट्रेट ग्रोवर के कक्ष से बाहर निकले त्योंही उन्हें निवारक अधिनियम के अधीन गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री लालचन्द सभ्रवाल एम० एल० ए० को जो १६ जुलाई को राजपुर के समीप पुलिस हिरासत में मोटर दुर्घटना में घायल होने के बाद पटियाला हस्पताल में इलाज करा रहे थे पुलीस कार में बिठाकरउनके मकान पर जालंधर छोड़ गई। उन पर यह पाबन्दी लगाई गई है कि वे ६ मास तक जालंधर नगर के बाहर न जांय।

आज रामगढ़ (नैनीताल) का जत्था श्री यशवंत

सिंह के नेतृत्व में, डा० सत्यपाल के नेतृत्व में बरेली का १०१ सत्याग्रहियों का जत्था, नैनीताल का तीसरा जत्था, रामामंडी का चौथा जत्था, लखनऊ और बस्ती आदि के अनेक जत्थे सहारनपुर कैम्प में पहुंचे।

हिसार की बोस्टल जेल में ४५० सत्याग्रहियों ने खुराक आदि की शिकायतों के कारण ३ दिन से भूख हड़ताल कर रखी है।

रोहतक पुलीस ने दयानन्द मठ में छापा मारकर हवन करते हुए १० व्यक्तियों को जबरदस्ती गिरफ्तार किया। पुलीस ने दयानन्द मठ पर चारों ओर से घेरा डाला हुआ है। पुलीस ने ३ दिन में इस क्षेत्र से ३५० हिन्दी प्रेमियों को गिरफ्तार किया है। जबकि ११० सत्याग्रही भिवानी स्टैंड, सोनीपत स्टैंड एवं रेल्वे स्टेशन से गिरफ्तार कर लिए गए।

२७ सितम्बर—आज पंजाब के स्कूलों और कालेजों के हजारों छात्रों ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन के समर्थन तथा भाषायी फार्मूले के विरोध में पूर्ण हड़ताल की। विद्यार्थियों ने प्रातः से ही कमरों के दरवाजे बन्द कर दिए तथा स्कूलों और कालेजों के मैदानों में जमा होना आरम्भ कर दिया था। विद्यार्थी नारे लगा रहे थे "जुल्मों सितम की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है" विद्यार्थियों ने भाषायी फार्मूले के विरुद्ध प्रतिवाद प्रकट करने के लिए सभाओं का आयोजन कर पंजाब सरकार के अनुचित रवैए की जबर्दस्त निन्दा की, और चेतावनी दी कि यदि सरकार ने भाषायी नीति में परिवर्तन न किया तो विद्यार्थी अनिश्चित काल तक के लिए हड़ताल घोषित करके हिन्दी आन्दोलन के समर्थन में मैदान में कूद पड़ेंगे।

यह हड़ताल पंजाब स्टुडेंस कांग्रेस, पंजाब हिन्दू विद्यार्थी महासभा और यंग मैन एसोसियेशन की अपील पर की गई।

१० विद्यार्थी कैथल में, ६ अमृतसर में, तथा इसी प्रकार अन्य नगरों में २४ से अधिक विद्यार्थी गिरफ्तार किए गए।

अम्बाला में हिन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में १०० से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। २६ छात्र रोहतक में २०, जालंधर में २०, अम्बाला छावनी में १६, धूरी में १ और पटियाला में १ विद्यार्थी गिरफ्तार किए गए, कुल संख्या १०० बताई जाती है।

चण्डीगढ़ और रोहतक में सत्याग्रही जत्थे पहुँच रहे हैं। दयानन्द मठ रोहतक पर पुलीस का पहरा होते हुए भी २ जत्थों ने रोहतक में सत्याग्रह किया। यहां १० गिरफ्तारियां हुई।

चण्डीगढ़ में वैदिक साधनाश्रम के ७ वे जत्थे के १० सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गया।

करनाल में ११ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए इनका नेतृत्व श्री जयराम कर रहे थे।

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री पं० नरेन्द्र जी ने १४४ धारा को भंग करके सत्याग्रह करने की अनुमति दी। इससे हिन्दी समर्थकों में उत्साह दौड़ गया है।

पुलीस ने लुधियाना में ५ सत्याग्रहियों को धारा १४४ का उल्लंघन करने पर गिरफ्तार किया इनमें ७० वर्षीय वृद्ध श्री दीवान चन्द भी सम्मिलित हैं परन्तु जत्थे के नेता श्री सत्यपाल जी को गिरफ्तार न किया।

अमृतसर में ११-११ सत्याग्रहियों के २ जत्थे गिरफ्तार हुए। पटियाला में ५ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

२८ सितम्बर—आज पटियाला में हिन्दी रक्षा समिति के मन्त्री महोदय के मकान पर छापा मारकर नजरबन्दी कानून के मातहत उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसी प्रकार चण्डीगढ़ में कई कार्यकर्ता गिरफ्तार किए गए जबकि वे प्रातः काल उठकर शौच के लिए जा रहे थे।

तहसील झज्जर के कार्यकर्त्ता श्री ओ३म् प्रकाश जी को गिरफ्तार किया गया। अम्बाला में पंजाब विद्यार्थी महासभा के मन्त्री श्री एस० पी० वर्म्मा की गिरफ्तारी की गई, पानीपत में पुलीस ने विद्यार्थियों

पर लाठी प्रहार किया। वहां आज भी १४४ धारा का उल्लंघन करके विद्यार्थियों ने जलूस निकाले। लगभग १२ विद्यार्थी लाठी प्रहार से घायल हुए और इतने ही गिरफ्तार किए गए।

श्री जगदीशचन्द्र हिमकरके नेतृत्व में बंगाल का जत्था कलकत्ता से चण्डीगढ़ के लिए रवाना हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्रीतथा सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के सदस्य श्री पं० शिवदयालु जी ने घोषणा की कि उत्तर प्रदेश अक्टूबर में प्रतिदिन ६०० सत्याग्रही देगा और यह कुल संख्या १ लाख तक पहुँचाई जायगी।

आज समस्त पंजाब में कुल १४१ गिरफ्तारियां हुईं।

अम्बाला छावनी में विद्यार्थियों ने एक बड़ा जलूस निकाला जो शान्त था। ५ छात्र गिरफ्तारहुए २३ विद्यार्थियों को जो कल और आज गिरफ्तार किए गए थे पुलीस ने शाम को छोड़ दिया।

आज पहली बार कांगड़ा के पालमपुर में ६ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए। गिरफ्तारी के समय इस नगर में पूर्ण हड़ताल रही। हजारों व्यक्तियों का एक जलूस निकला रोहतक में २६ गिरफ्तार हुए विद्यार्थियों में से २४ छोड़ दिए गए।

पटियाला में श्री ओ३म् प्रकाश लग्न की अधिनियम ३ के अधीन गिरफ्तारी हुई। करनाल में ६, चण्डीगढ़ में १२, और अमृतसर में ५, सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए। अमृतसर के सत्याग्रहियों ने जगरांव के श्री सत्यपाल के नेतृत्व में १४४ धारा तोड़ी।

२६ सितम्बर—श्री स्वामी आत्मानन्द जी प्रधान हिन्दी रक्षा समिति ने प्रधान मन्त्री श्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू को एक विशेष पत्र भेजकर चण्डीगढ़ में सत्याग्रह करने के अपने मन्तव्य से सूचित किया।

पंजाब प्रदेश कांग्रेस के प्रधान मन्त्री श्री रामकिशन ने पटियाला जेल में भाषा समस्या के इलके सिल-सिले में हिन्दी रक्षा समिति के कुछ प्रमुख नेताओं से भेंट की। उन नेताओं ने उन्हें कहा कि वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त से सम्पर्क स्थापित करें एक मात्र जिन्हें समझौता चर्चा करने का अधिकार है।

आज अमृतसर में श्रीयुत आचार्य रामदेव जी निवारक अधिनियम ३ के अन्तर्गत गिरफ्तार हुए। श्री आचार्य जी गिरफ्तारी के समय श्रद्धानन्द बाजार आर्यसमाज में भाषण देने के बाद १५ सत्याग्रहियों का नेतृत्व करते हुए बाहर निकल रहे थे।

अमृतसर में कुल २१ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। अमृतसर में अब तक ३०५ गिरफ्तारियां हो चुकी हैं।

अम्बाला में १०, गुड़गांवा में १२, गिरफ्तारियां हुईं। गुड़गांवा में २००० से अधिक व्यक्तियों का सदर में एक बड़ा जलूस निकला।

३० सितम्बर—आज पटियाला जेल से म० कृष्ण जी मुक्त किये गये। वे निवारक निरोध अधिनियम के अन्तर्गत नजरबन्द थे। जेल व न्यायमन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने कहा कि महाशय जी को बिना शर्त रिहा किया गया है। वे अस्वस्थ थे।

आज चण्डीगढ़ में १४४ धारा की अवधि एक मास के लिये और बढ़ाई गई। अम्बाला शहर, छावनी, जगाधरी और यमुनानगर में प्रतिबन्ध आज समाप्त हो गया और उसे आगे के लिए नहीं बढ़ाया गया। अमृतसर, लुधियाना व पटियाला में प्रतिबन्ध बढ़ाया जा चुका है। जालन्धर, संगरूर, सुनाम, लेहरा, धूरी, भिवानी गढ़ और बरनाला शहर में भी १ मास के लिए और प्रतिबन्ध बढ़ाया गया। दिल्ली के भोगल और जंगपुरा के क्षेत्र में भी १४४ धारा जारी कर दी गई।

आज भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त ने नई दिल्ली में एक प्रेस कान्फ्रेन्स में कहा कि आर्यसमाज के आन्दोलन का संचालन जन संघ नहीं कर रहा है। मेरी समिति में १७ सदस्य हैं। ये सभी आर्यसमाजी हैं। ११ पर कोई राजनैतिक रंग नहीं चढ़ा हुआ है, ४

कांग्रेसी हैं, १ हिन्दू महासभाई है और केवल १ जनसंघी है। नियंत्रण करनेवाली संस्था आर्यसमाज है। जो लोग गिरफ्तार हुए हैं या जेलों में हैं उनमें से बहुत से प्रमुख कांग्रेसी हैं। हमारा आन्दोलन विशुद्ध सांस्कृतिक है। यह दोनों भाषाओं (हिन्दी गुरुमुखी) की स्वतन्त्रता के लिए है। जहां तक आर्यसमाज का सम्बन्ध है उसमें कोई राजनीति नहीं है। यदि किसी ने भाषा को राजनीतिक उद्देश्यों की सिद्धि या राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की सन्तुष्टि का साधन बनाया है तो वह निश्चित रूप से आर्यसमाज नहीं है बल्कि दूसरा पक्ष सरकार है। मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दी या पंजाबी अनिच्छुक लोगों पर लादी जाय। क्या इसे हिन्दी साम्राज्यवाद या साम्प्रदायिकता कहा जा सकता है? हम भाषाई सिद्धान्त को लेकर साम्प्रदायिकता के विरुद्ध भी लड़ रहे हैं और जब तक दोनों का मूलोच्छेदन नहीं हो जाता हम लड़ते रहेंगे। यदि स्कूलों एवं कालेजों में विद्यार्थियों को जबरदस्ती हिन्दी या गुरुमुखी पढ़ाई जायगी तो वे इन भाषाओं के पीरियडों में सम्मिलित न होंगे। उन्होंने कहा कि रीजनल फार्मूला का कोई अस्तित्व नहीं है। यह तो हवा में हैं सरकारी रिकार्डमें भी नहीं है।

आज अमृतसर में ८ सत्याग्रही चण्डीगढ़ में ११, अबोहर में १२, जगाधरी में इन्द्रसेन के नेतृत्व में ७, यमुनानगर में श्रीमती मायादेवी के नेतृत्व में ३ (महिलाएं) गिरफ्तारियां हुईं। होशियारपुर में श्री मुलकराज कोहली और श्री जी० पी० हांडा निवारक निरोध के अन्तर्गत नजरबन्द किये गये। करनाल में बहादुरगढ़ के डा० रामलाल के नेतृत्व में ६, लुधियाना में ६ आज कुल ६७ गिरफ्तारियां हुईं।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन और सरकारी नीति के कारण पंजाब में दशहरा फीका जा रहा है। बहुत कम नगरों में रामलीला करने की व्यवस्था हो सकी है। जहां हुई है वहां उत्साह नहीं है। पटियाला के पुराने ६ स्थानों में कहीं भी रामलीला नहीं हुई है।

राजस्थान का ५वां जत्था चण्डीगढ़ पहुँच गया है। बरेली का जत्था डा० सत्यपाल के नेतृत्व में तथा भूपाल का जत्था स्वामी सदानन्द जी के नेतृत्व में सहारनपुर पहुँचा। एक सार्वजनिक सभा में जत्थे के नेताओं के भाषण हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के उपमन्त्री श्री चन्द्रनारायण ऐडवोकेट ने घोषणा की कि दिवाली तक पंजाब में इतने जत्थे पहुँच जायेंगे कि वहां जेलों में जगह न रहेगी।

डा० सत्यपाल जी के जत्थे का सहारनपुर जाते हुए सिवहारा (बिजनौर) रेलवे स्टेशन पर स्वागत किया गया। सत्याग्रहियों को पुष्पमालायें पहिनाई गईं। थैली व फल भेंट किये गये। सिवहारा से शीघ्र ही १ जत्था सत्याग्रह के लिए जाने वाला है।

विद्यार्थी हड़ताल के सिलसिले में पंजाब सरकार ने धुरी, अम्बाला, लुधियाना, अमृतसर, पटियाला, रोहतक, भिवानी आदि से २०० के लगभग विद्यार्थियों को गिरफ्तार किया है। जालन्धर में २० विद्यार्थी गिरफ्तार किये गये जिनमें से ६ के विरुद्ध झूठा केस दर्ज किया गया। हिन्दू विद्यार्थी महासभा के मन्त्री श्री सतीशचन्द्र अम्बाले में नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किये गये।

## अक्टूबर

१ अक्टूबर—आज पंजाब के विभिन्न भागों में १२६ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

१४४ धारा का उल्लंघन करते हुए चण्डीगढ़ में ५०, अमृतसर में ११, होशियारपुर में ४, करनाल में ७, सरहिन्द में ७ और रोहतक में ५० गिरफ्तार हुए। अमृतसर के ११ सत्याग्रहियों में से ७ का नेतृत्व फगवाड़ा के श्री धर्मपाल कर रहे थे। अमृतसर में अब तक ३२२ गिरफ्तारियां हो चुकी हैं। करनाल में गिरफ्तार होने वाला सत्याग्रही जत्था गोदर गांव का था जिसके नेता श्री मोलासिंह थे।

आज समझौता वार्ता के लिए पंजाब के मन्त्री

श्री डा० भार्गव दिल्ली पधारे। वे पं० नेहरू, पन्त मौ० आजाद तथा श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त से भेंट करेंगे। पं० नेहरू शीघ्र से शीघ्र इस सम्बन्ध में कुछ न कुछ किये जाने के लिये उत्सुक बताये जाते हैं। कुछ लोगों का सुझाव है कि इस समस्या के समाधान के लिए श्री सरदार बल्देवसिंह, तथा श्री मेहरचन्द महाजन से सहयोग लिया जाय।

रोहतक के जाट और वैश्य कालेज के २४ छात्रों के विरुद्ध २७-९-५७ की हड़ताल के सिलसिले में चलाये गये केस वापस ले लिये गये। हिसार के हिन्दू शिक्षा संस्थाओं के लगभग २००० विद्यार्थियों ने एक जुलूस निकाला और उसकी समाप्ति के बाद एक प्रस्ताव पास करके पंजाब सरकार की दमन नीति की निन्दा की।

ब्रह्मचारी बालकराम को जो १६ अगस्त से चंडीगढ़ समाज पर आक्रमण करने के विरोध में भूख हड़ताल कर रहे थे, जिन्हें २४-८-५७ को पुलिस बलात् उठा कर अम्बाला जेल में ले गई थी और जो जेल में भी निरन्तर अनशन कर रहे थे, पुलिस सहारनपुर ले गई और वहां उन्हें मुक्त कर दिया। यह समाचार गलत सिद्ध हुआ —सम्पादक

गुड़गांव में श्री वासुदेव विद्यालंकार और पं० हरिश्चन्द्र जी की, लोहारु हिन्दी रक्षा समिति के अध्यक्ष श्री भगवानसिंह जी तथा रोहतक में आर्य उपदेशक श्री कुँवर जौहरीसिंह जी, श्री रत्नसिंह जी तथा श्री काशीराम जी की नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत गिरफ्तारी हुई। इसी प्रकार गोहाना में पं० रामधारी गौड़ को गिरफ्तार किया गया।

पटियाला में ५ हिन्दी सत्याग्रही बन्दियों के विरुद्ध आपत्तिजनक नारे लगाने के अपराध में केस आरम्भ हुआ। सत्याग्रहियों ने अपने को निर्दोष बताया।

यू०पी०आई० की रिपोर्ट के अनुसार ३०-९-५७ को १००० व्यक्तियों की भीड़ बलात् जीन्द के पुलीस स्टेशन में घुसी और २११ छात्रों को छुड़ा लाई जो १४४ धारा का उल्लंघन करने के अपराध में पकड़े गये थे। पुलिस ने २६ व्यक्ति गिरफ्तार किये। विद्यार्थी जाट स्कूल के बताये जाते हैं।

२ अक्टूबर—आज १० सत्याग्रही चण्डीगढ़ में, ५ नरवाना में, ४ अमृतसर में, ७ सरहिन्द में, ६ जीन्द में तथा ५ अन्य स्थानों पर गिरफ्तार किये गये। कुल गिरफ्तारियां ३७ हुई।

आज दिल्ली में भीतरौल, औरंगाबाद (गुड़गांव) से १ सत्याग्रही जत्था श्री अजयपाल सिंह के नेतृत्व में, दूसरा लखनऊ से श्री हवेलीराम के नेतृत्व में तीसरा महेन्द्रगढ़ से श्री पं० सोहनलाल के नेतृत्व में दिल्ली पहुँचा। इन जत्थों का दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शानदार स्वागत हुआ।

भाषा स्वातन्त्र्य समिति के सदस्य श्री यज्ञदत्त शर्मा ने समाचार पत्रों के नाम एक वक्तव्य में कहा कि पंजाब सरकार ने श्री लालचन्द सभ्रवाल को ६ मास तक जालन्धर में नजरबन्द करने की बड़ी अनुचित कार्यवाही की है।

जिला हिन्दी रक्षा समिति के मन्त्री श्री सत्यपाल महाजन ने एक प्रेस वक्तव्य में बताया कि जिला फीरोजपुर के ३०० सत्याग्रही अब तक गिरफ्तार हो चुके हैं। गत २० दिन में १२५ सत्याग्रही अबोहर में गिरफ्तार हुए हैं।

३ अक्टूबर—आज चण्डीगढ़ में १४४ धारा का उल्लंघन करने के अपराध में १० तथा करनाल में १३ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। करनाल में गान्धी जयन्ती के उपलक्ष्य में २-१०-५७ को सत्याग्रह स्थगित रहा।

चण्डीगढ़ और रोहतक में ५० हिन्दी प्रेमियों ने सत्याग्रह किया।

आज जापान जाते समय पालम हवाई अड्डे पर प्रधानमन्त्री श्री पं० नेहरू ने पंजाब कांग्रेस के प्रधान ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर से पूछा "हिन्दी सत्याग्रह की प्रगति कैसी है? क्या भारत लौटने तक यह समाप्त हो जायगा? मैं उत्सुक हूँ कि यह आन्दोलन समाप्त होकर पंजाब में सामान्य स्थिति उत्पन्न होजाय।" ज्ञानी महोदय ने कहा "आप इस आन्दोलन के सम्बन्ध में चिन्तित न हों जब कि

आप आवश्यक मिशन पर जारहे हैं।" ज्ञानीजी ने पंडित जी को विश्वास दिलाया कि पंजाब गवर्नमेन्ट और प्रदेश कांग्रेस कमेटी पंजाब में शान्ति और साम्प्रदायिक एकता को बनाये रखने में कोई यत्न उठा न रखेंगे। हम सब की प्रबल इच्छा है कि राज्य में भाषा समस्या का शान्ति पूर्ण हल होजाय। इसी समय उपराष्ट्रपति श्री डा० राधाकृष्णन और कांग्रेस अध्य श्री ढेबर भाई बात चीत में सम्मिलित हो गये। उन दोनों ने भी आन्दोलन की गतिविधि ज्ञात की। श्री मुसाफिर से विदा लेते हुए प्रधान-मन्त्री ने मुस्करा कर कहा "सत्याग्रहियों को मेरा प्रेम देवें।"

अम्बाला, जालन्धर, फीरोजपुर, होशियारपुर और पंजाब के अनेक नगरों में पंजाब गवर्नमेन्ट की दमन नीति के विरोध स्वरूप दशहरा नहीं मनाया गया। अमृतसर में १२ सत्याग्रहियों ने ३ जत्थों में सत्याग्रह किया। वे सब गिरफ्तार कर लिये गये। हरिजन नेता श्री सत्यपाल भिक्षु निवारक अधिनियम के अधीन गिरफ्तार हुए।

४ अक्टूबर—आज चण्डीगढ़ में १०, अमृतसर में ७, करनाल में ५, फाजिलका में ६ तथा संगरूर में १ सत्याग्रही की गिरफ्तारी हुई।

अमृतसर के जत्थे का नेतृत्व श्री जोशी ने और करनाल के जत्थे का नेतृत्व श्री सोमदत्त ने किया। फाजिलका में जलालाबाद ग्राम के सत्याग्रही थे। जीन्द के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री मंगलसेन जी की विद्यार्थी आन्दोलन के सम्बन्ध में पुलिस को तलाश थी। उन्होंने स्वयं अपने को संगरूर में गिरफ्तार कराया।

अमृतसर के हीरा मार्केट में २ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए जिन्हें २ पुलिसमैन कोतवाली ले जा रहे थे, एक भीड़ ने आकर उन्हें छुड़ा लिया। पुलिस ने दफा २२४, २२५ में केस दर्ज किया।

डा० गोपीचन्द भार्गव ने आज चंडीगढ़ में प्रेस प्रतिनिधियों को बताया कि दिल्ली में कांग्रेस हाई कमान तथा अन्य सम्बद्ध जनों से बातचीत करने के बाद उन्हें आशा हो गई है कि वे भाषा समस्या को हल करने में समर्थ हो जायेंगे।

आज लखनऊ का चौथा जत्था श्री हवेलीराम उपप्रधान आर्य समाज चौक के नेतृत्व में चंडीगढ़ के लिए रवाना हुआ। जत्थे को विदाई देने के लिए एक विशाल सार्वजनिक सभा आर्य समाज कासगंज में श्री चन्द्रदत्त तिवारी वकील की अध्यक्षता में हुई।

कलकत्ता के प्रसिद्ध पत्रकार और जागृति के संपादक श्री जगदीशचन्द्र 'हिमकर' के नेतृत्व में २२ सत्याग्रहियों का एक जत्था आज प्रातः दिल्ली स्टेशन पर पहुँचा जहां उसका शानदार स्वागत हुआ।

५ अक्टूबर—आज श्री स्वामी आनन्दभिक्षु जी और ब्र० बालकराम ने अम्बाला जेल में अपना आमरण अनशन तोड़ा। स्वामी जी ८ अगस्त से और ब्रह्मचारी जी १२ अगस्त से अनशन पर थे। पुलिस द्वारा चंडीगढ़ आर्य समाज मन्दिर भ्रष्ट किए जाने के विरोध स्वरूप ये अनशन किए गए थे। सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष श्री धनश्यामसिंह जी गुप्त के साथ पंजाब के जेल मन्त्री श्री गोपीचन्द भार्गव ने जेल में जाकर आश्वासन दिया कि मन्दिर की पवित्रता सुरक्षित रखी जायगी। इस पर दोनों महानुभावों ने अनशन भंग करना स्वीकार किया।

६-८-५७ को अम्बाला छावनी की दुर्घटनाओं के कारण गिरफ्तार किए गए ३२ व्यक्तियों पर से पंजाब राज्य ने मुकदमे वापस लेकर उन्हें मुक्त किया जिनमें ११ हिन्दी रक्षा समिति के नेता और कार्यकर्ता शामिल थे।

यमुना नगर के ३० प्रमुख नागरिकों ने एक संयुक्त आवेदन पत्र में शिक्षा मन्त्री पं० अमरनाथ विद्यालंकार के उस वक्तव्य का घोर विरोध किया है जिसमें उन्होंने हिन्दी रक्षा आन्दोलन को सिख विरोधी आन्दोलन कहा था। यह आवेदन पत्र श्री पं० नेहरू, गृहमन्त्री पं० पन्त और श्री मौलाना

आजाद को भेजा गया है।

संगरूर की हिन्दी रक्षा समिति ने जींद की ३० सितम्बर की घटना के बारे में एक विज्ञप्ति प्रचारित की है जिसमें कहा गया है कि पुलीस का एक बड़ा दल अश्रु गैस के दस्ते के साथ अभी तक नगर में घूम रहा है तथा २०० विद्यार्थियों को पुलीस से बलात छीनने का समाचार गलत है।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा बिजनौर के तत्वावधान में दूसरा सत्याग्रही जत्था श्री शिवचरण भगवंत के नेतृत्व में चंडीगढ़ के लिए रवाना हुआ।

प्रयाग का ५ अक्टूबर का समाचार है कि राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन ने एक वक्तव्य में कहा कि पंजाब में हिन्दी और गुरुमुखी सीखना वहां के लोगों की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी व्यक्ति पर इन दोनों में से कोई भी भाषा पढ़ने की अनिवार्यता न होनी चाहिए।

६ अक्टूबर—आज पंजाब में कुल २३ गिरफ्तारियां हुईं।

आज एक जत्था बंगाल के ३० सत्याग्रहियों का जिसमें सब बंगाली हैं श्री जगदीचशन्द्र हिमकर के नेतृत्व में, दूसरा जत्था हैदराबाद के ३५ सत्याग्रहियों का जिसका नेतृत्व हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री शेषराव ऐडवोकेट कर रहे हैं, तीसरा जत्था एटा के ८ विद्यार्थियों का जिसके नेता श्री बल्देव शास्त्री हैं और चौथा जत्था कृष्ण नगर दिल्ली का जिसमें ७५ सत्याग्रही हैं और जिसके नेता श्री वैद्य नाथ वैद्य हैं सत्याग्रह के लिए रवाना हो रहा है। आज दीवानहाल में देहली के विभिन्न समाजों की ओर से इन जत्थों का भव्य स्वागत हुआ। आज प्रातः ६ बजे हैदराबाद के जत्थे का आर्य समाज बाजार सीताराम देहली में स्वागत हुआ और १५१) की थैली भेंट की गई।

जालंधर में ३-१०-५७ को चंडीगढ़ को जाने वाले २ जत्थे जिनमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री श्री वैद्य सत्यव्रत जी सम्मिलित हैं धारा १८८ के अधीन गिरफ्तार किए गए। आज जालंधरमें ८४ हिन्दी रक्षा सत्याग्रहियों को ऐडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की अदालत से धारा १८८ के अधीन प्रत्येक को १॥ मास की सादी कैद की सजा दी गई।

अमृतसर में १६ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

७ अक्टूबर—आज कुल ४३ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए जिनमें ७ महिलाएं भी हैं जिन्होंने चंडीगढ़ में सत्याग्रह किया। पटना के श्री उमाशंकर के नेतृत्व में चंडीगढ़ जाता हुआ ६ सत्याग्रहियों का जत्था अम्बाला शहर के पास गिरफ्तार किया गया। श्री उमाशंकर जी को अभी कुछ दिन हुए अम्बाला सेन्ट्रल जेल से सांप के काटने के कारण रिहा किया गया था।

कांग्रेस मंडल के प्रधान और बुढ़ाना ग्राम के सरपंच श्री चंदासिंह के नेतृत्व में जाता हुआ ६ सत्याग्रहियों का एक जत्था और करनालके ८ सत्याग्रहियों का जत्था राजस्थान के श्री विद्यासागर के नेतृत्व में लुधियाना में गिरफ्तार किया गया। इसके अतिरिक्त २ अन्य व्यक्ति सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए गिरफ्तार किए गए। ७ संगरूर में और ३ अमृतसर में गिरफ्तार हुए। ये जलंधर के सत्याग्रही थे जो बुद्धदेव जी के नेतृत्व में जा रहे थे। पुलीस ने दर्शनलाल नामक एक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया जो दशहरा के दिन पुलीस की हवालात से भाग गया बताते थे। अजीत और ओ३म्प्रकाश २ सत्याग्रही और गिरफ्तार हुए।

आज पहली बार भटिंडा में १४४ धारा तोड़ी गई। साधुराम बंसल के नेतृत्व में भेरा मन्डी के ५ सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया। उनके साथ हजारों नर नारियों की भीड़ थी जिनमें से पुलीस ने ३ को गिरफ्तार किया।

श्री जुगल किशोर बजाज के नेतृत्व में रोहतक जाता हुआ ५ सत्याग्रहियों का १ जत्था हिसार से ३ मील दूर बस स्टैंड पर गिरफ्तार किया गया। हिसार में सज्जन कुमार नामक एक व्यक्ति की हिन्दी रक्षा आन्दोलन से सहानुभूति रखने के

अपराध में गिरफ्तारी हुई। उपर्युक्त जत्थे को विदा करने से पूर्व हिसार में एक बड़ा जलूस निकाला गया। क्योंकि इस जिले में १४४ धारा का प्रतिबन्ध नहीं है।

धुरी के श्री प्रतिज्ञापाल के नेतृत्व में प्रदर्शन करता हुआ ४ सत्याग्रहियों का जत्था संगरूर में गिरफ्तार हुआ।

चण्डीगढ़ के केन्द्र में २ बौद्धभिक्षु थाईलैंड से आए। पुलीस ने उन्हें गिरफ्तार करने की धमकी दी परन्तु जब उन्होंने हर्जाने की पुलीस को धमकी दी तो पुलीस घबरा गई और उन्हें आर्य समाज मन्दिर में जाने दिया गया। वे समाज मन्दिर देखकर और कुछ समय ठहर कर चले गए।

रोहतक में जो सत्याग्रही जाते हैं उन्हें पुलीस परस्पर जातियों में फूट डालने वाली बातें कहकर फूट डालने की चेष्टा करती है परन्तु वीर सत्याग्रही उनके बहकाए में नहीं आते।

आज हैदराबाद का दूसरा जत्था श्री शेषराव ऐडवोकेट के नेतृत्व में देहली से चंडीगढ़ के लिए रवाना हो गया। दिल्ली के स्टेशन पर हजारों नर नारियों ने उसे विदाई दी।

८ अक्टूबर—करनाल सेंट्रल जेल में अच्छा भोजन न मिलने पर सत्याग्रहियों ने विरोध स्वरूप ७-१०-५७ से भूख हड़ताल कर दी। यह मामला जेल मन्त्री डा० भार्गव के नोटिस में भी लाया जा चुका है।

जिला आर्य सम्मेलन हरदोई में २५० सत्याग्रहियों का एक जत्था भेजने का निश्चय किया गया। इस सम्मेलन का सभा पतित्व आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री पं० शिव दयालु जी ने किया।

चंडीगढ़ में कल जिन ७ महिलाओं ने सत्याग्रह किया उनमें एक ४ वर्षीय बालिका भी थी। इसके पिता श्री ईश्वर दास बंगा निवासी पहले ही सत्याग्रह कर गिरफ्तार हो चुके हैं। इस जत्थे का नेतृत्व मुजफ्फर नगर जिला कांग्रेस की भूतपूर्व प्रधाना श्री मती सावित्री देवी कर रही थीं।

आज मथुरा, बंगाल तथा मध्य प्रदेश के ४ सत्याग्रही जत्थे दिल्ली पहुँचे। मथुरा का यह ५वां जत्था था। प्रसिद्ध पत्रकार श्री जगदीशचन्द्र हिमकर के नेतृत्व में बंगाल का जत्था चंडीगढ़ के लिए रवाना हो गया।

आज नारनौल का २३ सत्याग्रहियों का जत्था रवाना हुआ। जब यह जत्था रेल्वे स्टेशन की ओर जा रहा था तो पुलीस ने इसे गिरफ्तार कर लिया।

आज श्री हरीकृष्ण जी के नेतृत्व में इन्दौर के जत्थे ने करनाल में १४४ धारा का उल्लंघन किया।

आज पहली बार होशियार पुर में ११ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

श्री स्वामी आनन्द देव अम्बाला जेल में हृदय के रोग से पीड़ित हैं। उन्हें सिविल हस्पताल में रखा गया है। स्वामी जी १२-८-५७ को चंडीगढ़ में अपने जत्थे के साथ गिरफ्तार हुए थे।

वीर यज्ञदत्त जी ने कानपुर में प्रेस प्रतिनिधियों को बताया कि भारत के विभिन्न प्रान्तों से बड़ी संख्या में सत्याग्रही जत्थे पंजाब जा रहे हैं।

पंजाब राज्य के शिक्षा विभाग ने एक परिपत्र द्वारा घोषणा की कि मार्च १९५८ में होने वाली परीक्षा में विद्यार्थियों को ७ विषयों में परीक्षा देनी होगी जिनमें हिन्दी और पंजाबी भी सम्मिलित हैं। किन्हीं भी ५ विषयों में उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी सफल घोषित किए जायंगे।

महात्मा आनन्द स्वामी जी ने ७-१०-५७ को गुड़गांवा की एक सार्वजनिक सभा में प्रधानत्व करते हुए कहा कि इस मास हिन्दी आन्दोलन उग्र किया जायगा। ग्वालियर में ४-१०-५७ को आयोजित एक विशाल सभा में जिसकी अध्यक्षता श्री डा० महावीर सिंह जी कर रहे थे सार्व० भाषा स्वातन्त्र्य समिति के प्रचारमन्त्री श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने कहा कि पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन देश व्यापी हो चुका है। पंजाब के ८२ प्रतिशतक व्यक्ति जनगणना के समय अपनी मातृ-भाषा हिन्दी लिखा

चुके हैं। अबतक २१ हजार व्यक्ति सत्याग्रह कर चुके हैं। ७ हजार के लगभग जेलों में बन्द हैं। कांग्रेस के अनेक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता एम० एल० ए० तथा भूतपूर्व मन्त्री जेल में बन्द हैं।

६ अक्टूबर—गत आधी रात से भिवानी आर्य समाज मन्दिर के चहुँ ओर पुलीस ने अचानक नाके बंदी करके लोहारू तहसील के ओहरा ग्राम के १७ सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया। यह जत्था आज रोहतक के लिए प्रस्थान करने वाला था।

आज दिल्ली में कानपुर, एटा, मुजफ्फर नगर और मेरठ के ४ जत्थे आए। इन चारों का दिल्ली के स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया। कानपुर के जत्थे का नेतृत्व श्री देवी प्रसाद जी आर्य और एटा के जत्थे का श्री स्वामी विधानन्द जी कर रहे हैं।

आज अमृतसर में ४ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। इस जत्थे का नेतृत्व १०५ वर्षीय वृद्ध हिन्दी प्रेमी पं० जीवनलाल स्यालकोटी कर रहे थे। उनके साथ २ सत्याग्रही श्री कृष्ण चन्द तथा मदनलाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। पुलीस ने एक हिन्दी प्रेमी श्री विजय कुमार को गिरफ्तार किया। उस पर साइक्लो स्टाइल पर छपे विज्ञापन बांटने का आरोप था। हिसार में एक जत्था रोहतक जाता हुआ गिरफ्तार किया गया।

जालंधर जेल में श्री यशपाल सत्याग्रही ने जेल अधिकारियोंके दुर्व्यवहार और खान-पान तथा सोने के स्थान की असुविधाओं के विरोध स्वरूप भूख हड़ताल शुरु कर दी है। शेष सभी मामले की रिपोर्ट अधिकारियों को की गई है।

जिला फारवर्ड ब्लाक की महेन्द्रगढ़ में हुई कार्यकारिणी की बैठक ने एक विशेष प्रस्ताव द्वारा आर्यसमाज की मांगों को सर्वथा उचित घोषित किया। यह भी बताया गया कि इन मांगों का साम्प्रदायिकता और राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। कार्यकारिणी ने जनता से हिन्दी आन्दोलन को तन-मन धन से सहायता देने की अपील की।

रोहतक पुलीस ने रोहतक के जाट कालेज और वैश्य कालेज के विद्यार्थी नेताओं को उनके मकानों पर छापा मारकर गिरफ्तार कर लिया। पुलीस ने स्थानीय सभी कालेजों की नाकेबन्दी करली है। ये गिरफ्तारियां विद्यार्थियों की उस घोषित सांकेतिक हड़ताल के सिल-सिले में की गई है जिसकी घोषणा की गई थी। २ दर्जन छात्र नेताओं के वारन्ट भी जारी कर दिए गए हैं।

ज्ञात हुआ है कि श्री पंत जी ने जोरदार शब्दों में सरदार कैरों से कह दिया है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि डा० भार्गव के मार्ग में किसी प्रकार की अड़चन उपस्थित न होने पावे ताकि वे समझौता वार्त्ता में डा० भार्गव को पूरा सहयोग देवें।

आज पी० टी० आई की रिपोर्ट के अनुसार समस्त पंजाब में ५३ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। फाजिलका में ११, चंडीगढ़ में ६, करनाल में ६, अबोहर में २३—

फाजिलका से ६ सत्याग्रही अमृतसर में सत्याग्रह करने के लिए जा रहे थे। करनाल में जो जत्था गिरफ्तार हुआ वह गांदर ग्राम का था जिसके नेता श्री रघुवीर सिंह थे।

८-१०-५७ को भिवानी में १७ सत्याग्रही गिर-फ्तार हुए। उनकी गिरफ्तारी से पूर्व एक विशाल जलूस निकाला गया। शहर की मुख्य २ सड़कों पर हो आने के बाद आर्य समाज मन्दिर पर समाप्त हुआ। इसके बाद सार्वजनिक सभा हुई जिसमें सत्याग्रहियों का स्वागत किया गया।

१० अक्टूबर—आज पंजाब सरकार ने राज्य के विद्यार्थियों की अम्बाला छावनी में होने वाली प्रतिनिधि मीटिंग से घबराकर सभी कालेजों के बाहर बहुत बड़ी संख्या में पुलीस बिठा दी। कालेजों के भीतर भी सफेद कपड़ों में पुलीस के आदमी घूमते रहे। अम्बाला के डी० ए० वी० कालेज के भीतर विद्यार्थियों की बैठक २ बजे से ५ बजे तक होती रही और अगले कदम का निर्णय कर लिया गया। एक प्रस्ताव के द्वारा पुलीस के उन हथकंडों का विरोध किया गया जो विद्यार्थियों के आंदो-

लन को कुचलने के लिए काम में ला रही है। रोहतक में छात्रों की गिरफ्तारी का विरोध किया गया।

बंगाल हिन्दू विद्यार्थी महासभा का प्रथम जत्था श्री जगदीश चन्द्र हिमकर के नेतृत्व में चंडीगढ़ पहुँच गया।

बलिया का सत्याग्रही जत्था दो महिलाओं व एक बच्चे के साथ श्री सुदर्शन सिंह के नेतृत्व में लखनऊ पहुँचा और आर्य समाज गणेश गंज में इसका भव्य स्वागत किया गया।

हिन्दी रक्षा समिति जालंधर ने प्रत्येक रविवार को एक जत्था अमृतसर भेजने का निश्चय किया।

लुधियाना की हिन्दी रक्षा समिति ने भी आंदोलन को तेज करने का निश्चय किया। श्री मुल्कराज के नेतृत्व में एक जत्था चंडीगढ़ भेजा गया तथा ३१ सत्याग्रहियों का एक जत्था ३१ अक्टूबर को भेजा जायगा।

आज पंजाब भर में ५२६ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। स्वामी सीतानन्द के नेतृत्व में करनाल में ६, चंडीगढ़ में ५, अमृतसर में ५, होशियारपुर में ४, भिवानी में १८ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

आज डा० भार्गव ने अमृतसर में कांग्रेस जनों के साथ हिन्दी आन्दोलन से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया।

जनसंघ के नेता श्री ओ३मप्रकाश जी को मुक्त किया गया जो नजरबन्द किए गए थे।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्रीयुत ला० रामगोपाल जी के सभापतित्व में हापुड़ में एक विराट सभा हुई जिसमें श्रीयुत पं० रामचन्द्र देहलवी जी को सत्याग्रह के लिए विदाई दी गई और थैली भेंट की गई।

११ अक्टूबर—आर्य उपप्रतिनिधि सभा बहराइच ने दूसरे जत्थे के शीघ्र भेजने की घोषणा की। श्री देवी प्रसाद आर्य उपसेनापति उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल, श्री ब्रह्ममित्र शास्त्री, उपसभा के मन्त्री श्री भोलानाथ आर्य आदि महानुभाव जिले का भ्रमण करके जागृति उत्पन्न कर रहे हैं।

आज जिलाधीश रोहतक ने प्रेस प्रतिनिधि सम्मेलन में बताया कि ३० जौलाई से ६ अक्टूबर तक जिला रोहतक में २०५१ गिरफ्तारियां हिन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में हुईं। १३३२ व्यक्ति भारतीय दण्ड विधान की धारा १४३ के अन्तर्गत, ५१३ धारा १०७।१५१ के अन्तर्गत और शेष १९९ व्यक्ति विविध धाराओं के अन्तर्गत पकड़े गए हैं। ७ व्यक्ति नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत नजरबन्द किए गए हैं।

आज चंडीगढ़ में हाईकोर्ट के ऐडवाइजरी बोर्ड की बैठक हुई जिसके समक्ष निम्नांकित नजरबन्दी पेश किए गए :—

(१) श्रीमती विमला कोहली (लुधियाना जेल से) (२) श्री जगत नारायण जी एम० एल० ए० (३) श्री पण्डित श्रीराम शर्मा एम० एल० ए० (४) श्री धर्मसिंह राठी एम० एल० ए० (५) श्री हरबंश राम एम० एल० ए० (६) श्री जसराज जग्गा ऐडवोकेट फिरोजपुर (७) श्री डा० भगवंत राय (८) श्री रघुवीर सिंह शास्त्री (पटियाला जेल से) (९) श्री रघुवीर शरण सदस्य विधान परिषद् (१०) श्री प्रिंसीपल भगवान दास (११) श्री गोपाल कृष्ण पिपलानी वान प्रस्थ (१२) श्री कैपटेन केशवचन्द्र (१३) श्री ज्ञानी पिंडीदास (१४) पेप्सू के भूतपूर्व मन्त्री श्री रामसिंह (१५) श्री ऐन० डी० ग्रोवर (नाभा जेल से)।

१२ अक्टूबर—आज सायंकाल आर्य समाज दीवानहाल में श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी का जो हाल ही में अम्बाला जेल से रिहा होकर आए हैं, अभिनन्दन किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने की। दीवानहाल नरनारियों से खचाखच भरा हुआ था। श्री स्वामी जी १५ अगस्त से ६ अक्टूबर तक अम्बाला जेल में अनशन पर रहे तथा ८ अगस्त से १४ अगस्त तक आर्य समाज चंडीगढ़ में।

गाजियाबाद आश्रमके ७५ वर्षीय आर्यसंन्यासी डा० आनन्द देव को सेन्ट्रल जेल अम्बाला से अस्वस्थता के कारण रिहा किया गया। उनके विरुद्ध

मामला वापिस ले लिया गया है।

आज कलकत्ता के दैनिक पत्र 'जागृति' के सम्पादक श्री जगदीशचन्द्र हिमकर बंगाल से आए २० अन्य सत्याग्रहियों के साथ अम्बाला के निकट बलदेव नगर से चण्डीगढ़ जाते हुए गिरफ्तार कर लिए गए।

आज अमृतसर में ८, चंडीगढ़ में ६ और करनाल में ५ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। इस प्रकार कुल ४१ गिरफ्तारियां हुईं। इनके अतिरिक्त लुधियाना में हिन्दी आन्दोलन के ६ समर्थक गिरफ्तार हुए।

करनाल जेल के डिपुटी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने एक वक्तव्य में कहा है कि करनाल जेल में खराब भोजन के कारण सत्याग्रहियों की भूख हड़ताल का समाचार गलत है।

पंजाब हाईकोर्ट के जज श्री ऐस० बी० कपूर ने पंजाब सरकार को फीरोजपुर जेल कांड की अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी जो ४० टाइप किए हुए कागजों पर है। रिपोर्ट में पुलीस और जेल के अधिकारियों के विरुद्ध गम्भीर आरोप लगाये गए हैं। पंजाब सरकार यह विचार कर रही है कि अपराधियों के विरुद्ध क्या कार्यवाही की जाय।

आज डा० भार्गव ने अमृतसर में श्री मा० तारासिंह के साथ शिष्टाचार की भेंट की।

पंजाब विधान सभा के १३ सदस्यों ने जो नजरबन्दी कानून के अन्तर्गत हिन्दी आन्दोलन के सिलसिले में नजरबन्द हैं, विधान सभा के अध्यक्ष को एक आवेदन पत्र भेजकर मांग की है कि उन्हें विधान सभा के अधिवेशन में भाग लेने की आज्ञा व सुविधा दी जाय।

१३ अक्टूबर—आज जालंधर के डिपुटी कमिश्नर ने प्रेस प्रतिनिधियों को बताया कि जालंधर में हिन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में अब तक ६० व्यक्ति गिरफ्तार किए जा चुके हैं जिनमें से ६ निवारक कानून के अधीन बंदी बनाए गए हैं। दो व्यक्ति जनसंघ के मन्त्री श्री कृष्णलाल तथा श्री बलबीर शर्मा फरार उद्घोषित किए हुए हैं,।

करनाल में उत्तर प्रदेश के १२ सत्याग्रही जलूस निकालने के अपराध में गिरफ्तार किए गए।

अम्बालाके प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट श्री के० के० पुरी ने जिला रोहतक के १५७ हिन्दी सत्याग्रहियों को धारा १४३ के अन्तर्गत अदालत उठने तक का कारावास का दण्ड दिया।

रोहतक हिन्दी समिति के नेता श्री चौ० भजराम ऐडवोकेट को ७ दिन के कारावास का दण्ड दिया गया। मजिस्ट्रेट ने जो कि विशेष रूप से रोहतक से आये थे अम्बाला सेन्ट्रल जेल में अपनी अदालत लगाई थी।

पंजाब के योजना तथा जेल मन्त्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने विभागों के अध्यक्षों तथा गण्य मान्य नागरिकों की एक बैठक में १२-१०-५७ को भाषण करते हुए कहा कि सम्बद्ध पक्षों के बीच परस्पर समझौते से क्षेत्रीय योजना में कोई संशोधन किया जा सकेगा और वह समझौता सरकार को मान्य होगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि वार्त्ता द्वारा भाषा समस्या पर परस्पर समझौता सम्भव है, डा० महोदय ने यह भी कहा कि किसी भाषा का किसी समुदाय विशेष से सम्बन्ध जोड़ने से हमारे भीतर एकता न रहेगी। एक भाषा का अध्ययन हमारा कर्त्तव्य है कोई जबरदस्ती नहीं।

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के उपप्रधान श्री प्रो० रामसिंह एवं महामन्त्री श्री देश पांडे ने एक संयुक्त वक्तव्य के द्वारा पंजाब सरकार से मांग की कि वह फीरोजपुर जेल लाठी कांड की न्यायाधीश कपूर द्वारा की गई जांच की रिपोर्ट शीघ्र प्रकाशित करे।

श्री डा० भार्गव ने ११-१०-५७ को पठानकोट में भाषण देते हुए कहा कि यदि मैं भाषा समस्या का शान्तिपूर्ण समाधान न कर सका तो त्याग पत्र दे दूंगा।

जलंधर के मजिस्ट्रेट ने साईं दास ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल के २० विद्यार्थियों को जो १४४ धारा उल्लंघन करने पर १८८ धारा के अन्तर्गत गिरफ्तार

हुए थे जमानत पर छोड़ दिया। हिन्दी समिति के एक नेता श्री चतुर्भुज को १४४ धारा तोड़ने के अपराध में गिरफ्तार किया।

आज पंजाब भर में ५३ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए। जलंधर में अमरनाथ डोगरा के नेतृत्व में ११ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए। अबोहर की हिन्दी रक्षा समिति ने निश्चय किया कि इसका प्रत्येक सदस्य बारी २ से अमृतसर में जाकर सत्याग्रह करेगा।

आज अमृतसर में १८ सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह किया जिनमें से १३ हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री शेषराव जी ऐडवोकेट तथा भूतपूर्व एम० एल० ए० के जत्थे के हैदराबाद के सत्याग्रही थे। इस जत्थे का सत्याग्रह देखने हजारों नर नारी दर्शक के रूप में उपस्थित थे।

अमृतसर के सिटी मजिस्ट्रेट ने श्री हरवंशलाल खन्ना की गिरफ्तारी के बिना जमानती वारंट जारी किए। श्री खन्ना ३ दिन पूर्व २ मामलों में गिरफ्तार किए गए थे और जमानत पर छोड़े गए थे परन्तु वे अदालत में उपस्थित न हुए।

श्रीयुत गोपीचन्द भार्गव ने गुरुदासपुर में इस प्रेस रिपोर्ट का खंडन किया कि यदि मैं भाषा समस्या का हल न कर पाया तो मन्त्री पद से इस्तीफा दे दूंगा।

लुधियाना में १३ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए जिनका नेतृत्व श्री सत्यप्रकाश कर रहे थे, गिरफ्तार सत्याग्रहियों में स्वामी दर्शनानन्द जी भी शामिल थे। ९० वर्षीय स्वामी चेतनानन्द भी गिरफ्तार कर लिए गए।

मवाना (मेरठ) के ८ सत्याग्रही श्री कल्याणसिंह के नेतृत्व में, दूसरा ६ सत्याग्रहियों का जत्था खरखौदा आर्य समाज के प्रधान मलिक साहब दयाल के नेतृत्व में रोहतक में गिरफ्तार हुआ, फाजिल्का में ११, तथा जालंधर में श्री अमरनाथ डोगरा के नेतृत्व में २८ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए।

१४ अक्टूबर— पंजाब की जेलों के डिपटी-मिनिस्टर श्री बनवारी दास ने पी० टी० आई० के प्रतिनिधि को अम्बाला में बताया कि हिन्दी आन्दोलन से सम्बन्द्ध ४५१७ हवालाती कैदी हैं तथा ६० नेता नजरबन्द हैं।

आज पंजाब में ३४ हिन्दी सत्याग्रही गिरफ्तार हुए जिनमें ४ सत्याग्रही मैसूर के भी थे।

चंडीगढ़ में ५, अमृतसर में १०, और करनाल में १३ सत्याग्रही गिरफ्तार किए गए।

अमृतसर में २ पृथक् २ जत्थों में सत्याग्रह हुआ। ६ के एक जत्थे का नेतृत्व जालंधर के वीरेन्द्र कुमार कर रहे थे और ४ सत्याग्रहियों का जत्था मौरा का था।

करनाल में सत्याग्रहियों का नेतृत्व श्री जगदीश मित्र ने किया। गिरफ्तारी से पूर्व श्री 'मित्र' ने आर्य समाज मन्दिर में एक विराट सभा में भाषण दिया। करनाल में विद्यार्थियों ने भी बड़ा प्रदर्शन किया जिनमें से ४ पुलीस द्वारा गिरफ्तार किए गए।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन के निम्नांकित ८ प्रमुख नेता जो नजरबन्दी कानून के अधीन जेल में रखे गए थे, बिना शर्त के रिहा कर दिए गए।

(१) श्री प्रिंसिपल भगवान दास पंजाब हिन्दी रक्षा समिति संयोजक (२) श्री ऐन० डी० ग्रोवर (३) श्री रघुवीर शरण (४) श्री राम सिंह भूतपूर्व मंत्री (पैप्सू) (५) श्री राम दत्त (६) सार्व० भाषा स्वातन्त्र्य समिति के मन्त्री श्री रघुवीर सिंह शास्त्री (७) श्री भगवन्त राय (भटिंडा) (८) श्री स्वामी आत्मानन्द जी के निकट साथी श्री गोपाल कृष्ण पिपलानी। ये रिहाइयां सलाहकार बोर्ड के निर्णयानुसार हुई।

जालंधर नगर पालिका के सदस्य श्री गोपालदास कक्कड़ को धारा१८८ के अधीन गिरफ्तार किया गया। उन्होंने १३-१०-५७ को स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में एक भाषण दिया जिसमें सरकार की भाषा नीति की आलोचना की।

आज दिल्ली की ५७ आर्य समाजों की ओर से गांधी मैदान में श्रीयुत पं० रामचन्द्र जी देहलवी को जो बड़ा जत्था लेकर सत्याग्रह के लिए चण्डीगढ़ जा रहे हैं शानदार विदाई दी गई। सभा की अध्यक्षता श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त ने की। श्री पं० जी को १३७१३) की थैलियां भेंट की गई।

पिछले २ दिन में हिसार में ६ और भिवानी में १७ सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये।

१५ अक्टूबर--श्री लालचन्द सभ्रवाल जो पुलिस की हिरासत में राजपुरे के निकट ट्रक घटना से गत अगस्त में घायल हो गये थे अमृतसर के हस्पताल में उपचार के लिए दाखिल हो गये हैं। उनकी हड्डियों में विशेष चोट आई थी।

पंजाब के आयोजना तथा जेल मन्त्री श्री डा० गोपीचन्द भार्गव ने पठानकोट में इस बात का खण्डन किया कि सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह जी से पंजाब की भाषा समस्या के हल से सम्बद्ध उनकी वार्ता समाप्त हो गई है।

हिन्दू विद्यार्थी महासभा तथा स्टुडेण्ट कांग्रेस की संयुक्त अपील पर पंजाब भर में हिन्दू विद्यार्थियों ने आज पंजाब सरकार की भाषा नीति के विरुद्ध व्रत रखा।

जुलाना ( संगरूर ) के हाई स्कूल के ५०० विद्यार्थियों ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन का समर्थन किया। विद्यार्थी नारे लगाते हुए १२ बजे स्कूल से बाहर निकल आये। उन्होंने कहा हम गुरुमुखी न पढ़ेंगे। हाई स्कूल के सिख अध्यापकों ने पुलिस को सूचना दी कि स्कूल के अन्दर बड़ा भारी हिन्दी आन्दोलन शुरु हो गया है। पुलिस के अफसरों और अध्यापकों ने विद्यार्थी समूह से क्षमा मांग कर पीछा छुड़ाया।

हिसार के आर्यनेता और सिटी कांग्रेस कमेटी के भूतपूर्व प्रधान श्री मुरारीलाल शास्त्री को ऐडीशनल डि० मजिस्ट्रेट श्री आर० एन० महता ने नजरबन्दी से मुक्त किया। शास्त्री जी को संगरूर की पुलिस ने १ सितम्बर को गिरफ्तार किया था जब कि वे आर्यसमाज मन्दिर से हिन्दी रक्षा समिति की एक सभा में प्रधानत्व करके बाहर निकल रहे थे। उनके साथ ही १५ अन्य कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हुए थे जब संगरूर के फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट के सामने इन सब का केस आया और यह बताया गया कि समाज मन्दिर के भीतर १४४ धारा लागू नहीं होती तब ये सब १२-१०-५७ को छोड़ दिये गये थे परन्तु हिसार पुलिस के वारंट पर शास्त्री जी पुनः गिरफ्तार कर लिए गये। जब वे श्री आर० एन० की अदालत में हिसार में पेश किये गये तो मजिस्ट्रेट ने उनकी गिरफ्तारी को अवैध बता कर उन्हें मुक्त कर दिया।

आज पंजाब भर में ४५ सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये।

रोहतक में १८ जिनमें से ८ सत्याग्रही सिन्ध तथा १० उत्तरप्रदेश के थे। करनाल में श्री जीतसिंह के नेतृत्व में ६, अमृतसर में १०, चण्डीगढ़ में ५ गिरफ्तार हुए। करनाल में डी० ए० वी० शिक्षा संस्थाओं की छात्राएं गुरुमुखी की पढ़ाई के पीरियड में न गईं।

जालन्धर में हरिजन कार्यकर्ता श्री ओ३म्प्रकाश और श्री साधूरामरतन १४४ धारा के उल्लंघन करने के अपराध में गिरफ्तार किये गये।

पुराने कांग्रेसी श्री व्रजलाल जी के नेतृत्व में ५ सत्याग्रहियों का जत्था कैथल में गिरफ्तार हुआ। जत्थे के साथ २००० नर नारियों की भीड़ थी।

# सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की बैठक

## दिनांक २४-१०-५७ में स्वीकृत प्रस्ताव

### प्रधान—श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त

### आंदोलनकी गतिविधि पर संतोष

१—सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति की यह बैठक आर्यसमाज द्वारा संचालित सत्याग्रह आन्दोलन की गतिविधि पर पूर्ण सन्तोष प्रकट करती है और समस्त अधिकारियों तथा अन्य कार्यकर्ताओं को आन्दोलन के सफल संचालन के लिए बधाई देती है तथा सर्वसाधारण द्वारा दियेगये सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद देती है।

### समिति प्रधान को पूर्ण अधिकार

२-यह समिति अपने प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त के नेतृत्व में अपना अक्षुण्य विश्वास प्रकट करती है। उनके सिद्धहस्त संचालन के फल स्वरूप ही यह आन्दोलन अनेक विषम परिस्थितियों एवं बाधाओं को पार करता हुआ प्रगति कर रहा है।

समिति अपने इस निश्चय को पुनः सम्पुष्ट करती है कि इस भाषा स्वातन्त्र्य आन्दोलन के संचालन नियन्त्रण तथा गतिविधि के सम्बन्ध में निर्णय करने के सर्वविध पूर्णाधिकार प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त को प्राप्त है।

### विद्यार्थियोंका सत्याग्रहमें भाग लेना

३—पंजाब में सरकार की भाषा सम्बन्धी अनीति का जो विरोध जनता द्वारा किया जा रहा है वह विद्यार्थी वर्ग को भी आकर्षित किये बिना नहीं रह सकता यह स्वाभाविक ही है और विद्यार्थी वर्ग भी आर्य समाज के इस आन्दोलन में अपना भाग देने को आतुर है तथा हर प्रकार का बलिदान करने को उद्यत है यह स्पष्ट है। उनकी इस सद्-भावना और उत्साह का यह समिति सत्कार करती है तथापि इस समिति की हार्दिक इच्छा है कि विद्यार्थी वर्ग अनिश्चित काल तक हड़ताल न करें ताकि उनके पठन पाठन में कोई विशेष क्षति न हो परन्तु उन्होंने जो सफल सांकेतिक हड़ताल की, वह समुचित तथा सराहनीय थी और इसके लिये यह समिति उन्हें साधुवाद देती है।

### सत्याग्रही वीरों को बधाई

सार्वदेशिक भाषा स्वातन्त्र्य समिति का यह अधिवेशन उन वीरों के प्रति हार्दिक सन्तोष और कृतज्ञता प्रकट करता है, जो इस आन्दोलन के सम्बन्ध में कारावास की यातनाएं भोग रहे हैं अथवा भोग चुके हैं। भाषा की स्वतन्त्रता तथा आर्य समाज की सेवा के लिये जो सराहनीय त्याग इन हजारों वीरों तथा उनके सम्बन्धियों ने किया है वह चिरस्मरणीय रहेगा। सरकार का कठोर व्यवहार एवं फीरोजपुर जेल काण्ड जैसे भीषण अत्याचार भी कारावास की कोठड़ियों में बन्द इन वीरों के धैर्य, साहस और दृढ़ता को विचलित न कर सके, यह वास्तव में बड़े गौरव की बात है।

समिति को विश्वास है कि इन वीरों का त्याग अवश्य सफल होगा और राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास के इतिहास में उनकी अमूल्य सेवाएं स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगी।

### बहुअकबरपुर में अत्याचार

५—दि० १५,१६ अगस्त १९५७ को बहुअकबर पुर में जो कि पक्की सड़क पर रोहतक से ७ मील और दिल्ली से लगभग ५० मील की दूरी पर है, पुलिस द्वारा जो बर्बरतापूर्ण अत्याचार किये गये हैं उन पर यह समिति रोष प्रकट करती है तथा उन की घोर निन्दा करती है। इस प्रकार की घटना किसी भी सभ्य सरकार के लिये कलंक है।

इस घटना के सम्बन्ध में निष्पक्ष जांच के लिये जनता की सतत मांग की जो अवहेलना शासन ने की है वह अत्यन्त निन्दनीय है।

### फीरोजपुर जेल काण्ड

६—फीरोजपुर जेल में दि० २४ अगस्त १९५७ को जो भीषण तथा रोमांचकारी कांड हुआ उसका थोड़ा सा अनुमान श्री अलगूराय जी शास्त्री के उस पत्र से हो चुका है जो उन्होंने प्रधान मन्त्री श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू को ३० अगस्त १९५७ को लिखा था।

इस घटना पर जो व्यापक रोष और विक्षोभ हुआ उसके कारण सरकार जांच के लिये जनता की मांग की अवहेलना न कर सकी परन्तु यह अत्यन्त निन्दनीय बात है कि जस्टिस श्री एस० बी कपूर की जांच के प्रतिवेदन को अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया, यद्यपि उस प्रतिवेदन को सरकार के पास भेजे लगभग एक मास का समय बीत चुका है।

सरकार ने इस प्रतिवेदन को विधान सभा के पटल में भी न रख कर सभा के सदस्यों के उस अधिकार का भी अपहरण किया है कि जिसके द्वारा उस प्रतिवेदन पर चर्चा करते हुए शासन की बर्बरता और उस घटना की निष्ठुरता को प्रकट किया जा सकता था।

Regd No. D 51.

# आर्य समाज का इतिहास

## ( प्रथम भाग ) सचित्र

इस सभा द्वारा श्रीयुत पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत आर्य समाज के इतिहास का प्रथम भाग छप कर बिकने लगा है। इतिहास की भूमिका आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान तथा पंजाब सरकार के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री श्रीयुत डा० गोकुलचन्द जी नारंग, एम० ए० पी० एच० डी० ने लिखी है। ग्रन्थ सजिल्द है जिसमें $\frac{१८ \times २२}{८}$ आकार के ३६४ पृष्ठ हैं। आकार प्रकार कागज व छपाई उत्कृष्ट है। स्थान २ पर ३२ लाइन ब्लाक दिये गये हैं।

महर्षि की जन्म तिथि, आर्य समाज स्थापना तिथि, महर्षि की मृत्यु कैसे हुई इत्यादि विवादास्पद विषयों पर परिशिष्ट रूप में मूल्यवान सामग्री दी गई है।

प्रारम्भ से सन् १९०० ई० तक के इतिहास में आर्य समाज की स्थापना से पहले की धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति, महर्षि दयानन्द का आगमन, आर्य समाज की स्थापना, प्रचार युग, अन्य मतों से संघर्ष, संगठन का विस्तार, संस्था युग का आरम्भ आदि विषयो का समावेश है। शैली बड़ी रोचक और चित्ताकर्षक है।

सम्पूर्ण इतिहास ३ भागो मे छपेगा। दूसरा भाग प्रेस मे दे दिया गया है और तीसरा भाग तैयार किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ की सामग्री के एकत्र करने, बढ़िया से बढ़िया रूप मे इसकी ५००० प्रतियां छपाने में तथा चित्रादि के देने में सभा का बहुत व्यय हुआ है। इस राशि की शीघ्र से शीघ्र प्राप्ति आवश्यक है जिससे कि वह दूसरे भाग की छपाई मे काम आ सके।

सभा ने यह विशाल आयोजन प्रदेशीय सभाओं, आर्य समाजो, आर्य नर नारियों के सहयोग के भरोसे बहुत खटकने वाले अभाव की पूर्त्यर्थ किया है। अत. प्रत्येक आर्य समाज और आर्य नर नारी को इस ग्रन्थ को शीघ्र से शीघ्र अपना कर अपने सहयोग का क्रियात्मक परिचय देना चाहिये।

प्रत्येक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज तथा आर्य संस्था के पुस्तकालय में अनिवार्य रूप से यह ग्रन्थ रहना चाहिये। यह विषय इच्छा या पसन्द का नहीं है अपितु एक स्थायी रूप से रहने वाले ग्रन्थ के संग्रह करने का है जिससे वर्तमान ही नहीं आने वाली सन्तति को भी लाभ उठाने का अवसर मिल सके।

प्रथमभाग का मूल्य ४) कर दिया गया है। एकप्रतिका डाक व्यय रजिस्ट्री डाकसे१≈)अतिरिक्त होता है। कम से कम ५ प्रतियां एक साथ मंगाने पर २० प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। पुस्तकों का आर्डर भेजते समय डाकखाने और निकटतम रेलवे स्टेशन का नाम स्पष्ट शब्दों मे लिखा होना चाहिये।

कृपया आर्डर भेजने में शीघ्रता करे। प्राप्ति स्थान —

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,**
श्रद्धानन्द बलिदान भवन, दिल्ली-६

चतुरसेन गुप्त द्वारा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज दिल्ली—७ में छपकर रघुनाथ प्रसाद जी पाठक प्रकाशक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली-से प्रकाशित।